धन्यवाद के साथ स्वीकार.

इन शीघ्रबोध भाग ६–७–८–९–१० वा की छपाइमें जीन ज्ञानप्रेमियों ने द्रव्य सहायता दे अपनि चल लक्ष्मी का सद् उपयोग कीया है उसे सहर्ष स्वीकार कर धन्यवाद दीया जाता है अन्य सज्जनो को भी चाहिये की इस 'ज्ञानयुग' के अन्दर सर्व दानोमें श्रेष्ट ज्ञान दान कर अपनि चल लक्ष्मी को अचल बनावे किमधिकम् द्रव्यसहायकों की शुभ नामावली।

२५१) शाहा रावतमलजी मुलतानमलजी बोथरा मु. नागोर
२५१) शाहा बादरमलजी सागरमलजी समदडीया मु. नागोर
२०१) शाहा लाभचन्दजी जवँरीमलजी खजानची मु. नागोर
५१) शाहा शिवलालजी जेठमलजी बांठीया मु नागोर
३४५) श्री सुपनोंकी आवादानीके
१५१) श्री भगवतीसूत्रादि पूजाकी आवन्दके

१२५०)

भावनगर—श्री 'आनंद' प्रीन्टींग प्रेस मां गुलाबचन्द लल्लुभाइने छापा.

प्रस्तावना.

प्यारे पाठक वृन्द !

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला ऑफीस फलोदी मारवाड से स्वल्प समयमे आज ७७ पुष्प प्रकाशित हो चुका है जिस्में शीघ्रबोध भाग पेहलेसे पचवीस वा तक प्रसिद्ध हुवे है जिस शीघ्रबोधके भागो में जैन सिद्धान्तों का तत्त्वज्ञान इतना तो सुगमता से लिखा गया है की सामान्य बुद्धिवाले मनुष्यों को भी सुखपूर्वक समजमे आ सके । इन शीघ्रबोधके भागों की अच्छे अच्छे विद्वानो ने भी अपने मुक्तकण्ठसे वहुत प्रशसा कर अपने सुन्दर अभिप्राय को प्रकट कीया है की यह शीघ्रबोध जैन श्वेताम्बर दिगम्बर स्थानकवासी और तेरहा पन्थीयों से अतिरिक्त अन्य लोगों को भी बहुत उपयोगी है कारण इन भागों मे तत्त्वज्ञान आत्मज्ञान अध्यात्मज्ञान के सिवाय कीसी मतमत्तान्तर-गच्छ गच्छान्तरादि कीसी प्रकार चर्चाओं या समुदायीक झघडो को बिलकूल स्थान नही दीया है.

इन शीघ्रबोध के भागों की महत्त्वता के वारे मे अधिक लिख हम हमारे पाठकोंका अधिक समय लेना ठीक नही समझते है कारण पाठक स्वयं विचार कर सक्ते है की इन भागो की प्रथमावृत्ति " जो सुगमता से सरल भाषाद्वारा आवाल से वृद्ध जीवो को परमोपकारी अपूर्वज्ञान " प्रकाशित होते ही हाथोहाथ खलास हो जाने पर द्वितीयावृत्ति छपाइ गइ वह भी देखते देखते खलास हो गइ। कीतनेक भाई

प्रमादवस हुवे दूसरी कीतावो की माफीक जब मगावे गे तब ही मील जावे गे इस विश्वास पर निरास हो बैठे थे. उन महाशयो के मांगणी के पत्रो से हमारे तारो के फल तंग हो गये थे, पत्रपेटी भर गइ थी उन ज्ञानाभिलाषीयों के लिये शीघ्रबोध भाग १–२–३–४–५ द्वितीय तृतीयावृति आप लोगों की सेवामें भेज दी गई है इस समय यह भाग ६–७–८–९–१० वा पहले की निष्पन् बहुत कुच्छ सुधार के साथ तैयार करवा के आप साहिबों के कर कमलो मे उपस्थित कर हमारे जीवन को कृतार्थ समजते है। यह ही ईन कीतावो का महत्त्व है। विशेष आप इन सब भागों को आद्योपान्त पढ लिजीये ताके आपको रोशन होगा की यह एक अपूर्व ज्ञानरत्न है।

पाठकों! ईन शीघ्रबोधके भागो में कथा काहानीयों नही है इन मे है जैन सिद्धान्तों का खास तत्त्व जैनो के मूल अंगोपाग सूत्रों का हिन्दी भाषाद्वारा संक्षिप्त सार=तरुजमा रुपमे बतलाया गया है जैसे रत्नाभिलाषी मनुष्य समुद्र में प्रवेश करते समय नौका का सादर स्विकार करता है इसी माफीक जैन सिद्धान्त रुपी समुद्रमे तत्त्वज्ञान रुपी रत्नाभिलाषीयों को शीघ्रबोध रुपी नौका का सादर स्वीकार करना चाहिये। कारण बिगर नौका समुद्र से रत्न प्राप्त करना मुश्किल है इसी माफीक बिगर शीघ्रबोध जैन सिद्धान्त रुपी समुद्र से तत्त्वज्ञान रुपी रत्न प्राप्त होना असम्भव है।

सज्जनों! जीन सूत्रों का नाम मात्र श्रवण करना दुर्लभ था वह सूत्र आज सार हिन्दी भाषा में आपके कर कमलो मे उपस्थित

हो चुका है। अब भी आप इनके लाभ को न प्राप्त करे तो कमनसिबी के सिवाय क्या कहा जावे ! श्री भगवतीसूत्र, पन्नवणाजीसूत्र, नन्दीसूत्र, अनुयोगद्वार सूत्र, उपसकादशाग अन्तगडदशाग, अनुत्तरोववाइसूत्र पाच निरियावलीका सूत्र, बृहत्कल्पसूत्र, दशाश्रुतस्कन्धसूत्र, व्यवहारसूत्र और निशिथसूत्र इनो का सार इन शीघ्रबोध के प्रत्येक भागोंमे बतलाया गया है।

श्री पन्नवणाजी सूत्र के ३६ पद है वह अन्य अन्य भागों मे प्रकाशित हुवे है। जिसकी क्रमश अनुक्रमणिका शीघ्रबोध भाग १२ के आदिमे दी गइ है की पढनेवालोंको सुविधा रहै इसी मार्फीक श्री भगवतीजी सूत्र की भी अनुक्रमणिका यहापर पृष्ट ६ से दी गई है ताके जरुरत पर हरक सबंध को पाठक देख सके।

संग्रहकर्ता मुनि श्री का खास उद्देश ज्ञान कण्ठस्थ करने का है इसी वास्ते आपश्री ने विशेष विस्तार न करके सुगमतापूर्वक लिखा है आशा है की आप ज्ञान प्रेमी इस कीताब से आवश्य लाभ उठावेंगे इत्यलम ॥ शम ॥

आपका

मेघराज मुनोत

मु. फलोदी (मारवाड.)

—✱—

ज्ञान परिचय।

पूज्यपाद प्रात स्मरणीय शान्त्यादि अनेक गुणालंकृत श्रीमान्मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब।

आपश्रीका जन्म मारवाड ओसवंस वेद मुत्ता ज्ञातिमे स १९३७ विजय दशमिको हुवा था. बचपन मे ही आपको ज्ञानपर बहुत प्रेम था स्वल्पावस्थामें ही आप ससार व्यवहार वाणिज्य व्यापारमें अच्छे कुशल थ स. १९५४ मागशर वद १० को आपका विवाह हुवा था देशाटन भी आपका बहुत हुवा था विशाल कुटुम्ब माता पिता भाइ काका स्त्रि आदि को त्याग कर २६ वर्ष कि युवाक वयमें स १९६३ चेत वद ६ को आपने स्थानकवासीयो में दीक्षा ली थी. दशागम और ३०० थोकडे प्रकरण ग्रन्थ कर ३० सूत्रोकी वाचना करी थी तपश्चर्या एकान्तर छठ छठ, मास खमन आदि करनेमें भी आप सुरवीर थ आपका व्याख्यान भी बडाही मधुर रोचक और असरकारी था शास्त्र अवलोकन करने मे ज्ञात हुवा कि यह मूर्ति उत्थापका का पन्थ स्वकपोल कल्पीत समुत्सम पेदा हुवा है। तत्पश्चात् सर्प कचंर कि माफीक ढुंढकों का त्याग कर आप श्रीमान् रत्नविजयजी महाराज साहिब के पास ओशीयाँ तीर्थ पर दीक्षा ले गुरु आदेशसे उपकेश गच्छ स्वीकार कर प्राचीन गच्छका उद्धार कीया। स्वल्प समय मे ही आपने दीव्य पुरुषार्थ द्वारा जेन समाजपर बडा भारी उपकार कीया आपश्रीको ज्ञानका तो आले दर्जेका प्रेम है जहा पधारते है वहा ही ज्ञानका उद्योत करते है

ओशीयाँ तीर्थ पर पाठशाला बोर्डींग ऋऋ कन्ति लायब्रेरी, श्री रत्न प्रभाकर ज्ञान प्रचारक भंडार आदि मे आपश्रीने मदद करी है फलोधी मे श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला संस्था-इसकी दुसरी शाखा आदि स्थानोंमे स्थापन करी जिन संस्थाओं द्वारा ... संस्था का नरत्न ज्ञानसरा आज ७७ पुष्प नीकल चुंके है जिस्की कीताबें ३०,००० करीबन हिन्दुस्तान के सब विभागमे जनता कि सेवा बजा रही है इनके सिवाय विद्याशाला जैन लायब्रेरी आदि भी स्थापन करवाइ गइ थी हम शासन नायक से यह प्रार्थना करते है कि एसे पुरुषार्थी महात्मा चीरकाल शासन कि सेवा करते हुवे मरुधर देशमे विहार कर हम लोगोपर सदैव उपकार करे। शम

पुस्तक बाकी आवृत्ति १०००० ... १९१६ ... }

आपका चरणोपासक,
इन्द्रचंद पारख—जोइन्ट सेक्रेटरी.

श्री जैन युवक मित्रमण्डल, आफीस—लोहावट (मारवाड)।

मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज
जन्म सं १९३७ विजयादशमी.
स्थानकवासी दिक्षा सं १९६३
जैन दिक्षा सं १९७२
आनन्द प्रीन्टीग
प्रेस नागोर
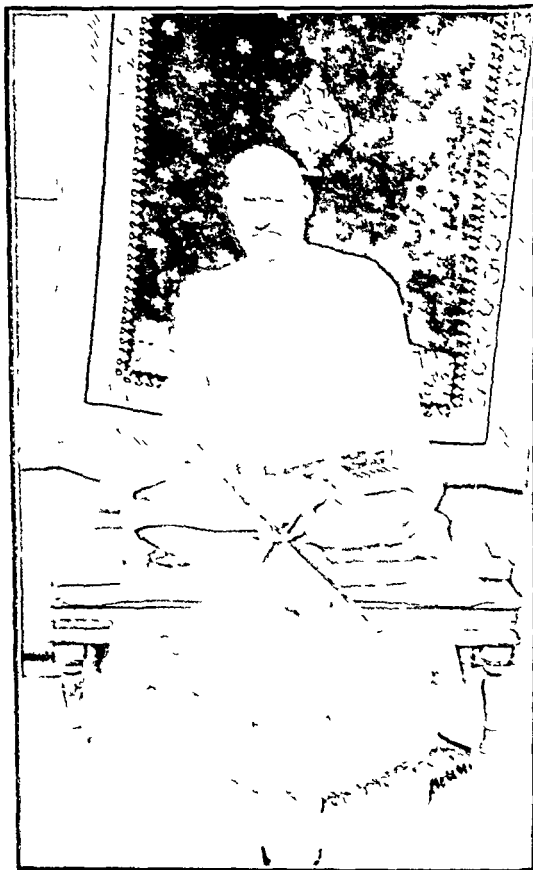
रत्न परिचय.

परम योगिराज प्रात स्मरणीय अनेक सद्गुणालकृत श्री श्री १००८ श्री श्री रत्नविजयजी महाराज साहिब !

आपश्रीका पवित्र जन्म कच्छदेश ओसवाल ज्ञाति म हुवा था आप बालपणासे ही वियादेवीके परमोपासक थे दश वर्षकि बाल्यावस्थामें ही आपने पिताश्रीके साथ ससार त्याग किया था, अठारा वर्ष स्थानकवासीमत में दीक्षा पाल सत्य मार्ग सशोधन कर-शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद्विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराजके पास जैन दीक्षा धारण कर सस्कृत प्राकृतका अभ्यास कर जैनागमोका अवलोकन कर आपश्रीने एक अच्छे गीतार्थाकि पक्तिको प्राप्त करी थी आपश्रीने कच्छ, काठीयावाड, गुजरात, मालवा, मेवाड और मारवाडादि देशोंमें विहार कर अपनि अमृतमय देशनाका जनताको पान करवाते हुए अनेक जीवोका उद्धार कीया था इतना ही नही किन्तु आबु गिरनारादि निवृत्तिके स्थानों में योगाभ्यास कर जैनोमे अनेक गइ हुइ चमत्कारी वियावों हासल कर कइ आत्मावो पर उपकार कीया था ।

आपका नि स्पृह सरळ शान्त स्वभाव होनेसे जगत के गच्छगच्छान्तर-मत्तमत्तान्तरके झगडे तो आपसे हजार हाथ दूर ही रहते थे जैसे आप ज्ञानमें उच्चकोटीके विद्वान थे वेसे ही कविता करनेमें भी उच्चकोटीके आप कवि भी थे आपने अनेक स्तवनों, सज्झायो, चैत्यवन्दनो, स्तुतियो, कल्प रत्नाकरी टीका और विनति शतकादि रचके जैन समाजपर परमोपकार कीया था

आपको निवृत्तिस्थान अधिक प्रसन्न था। श्रीमदुपकेश गच्छाधिपति श्री रत्नप्रभसूरीश्वरजी महाराजने उपकेशपट्टन (ओशीयाँ) में ३८४००० राजपुतको प्रतिबोध दे जैन बना कर प्रथम ही ओसवस स्थापन कीया था उस ओशीयो तीर्थपर आपश्रीने चतुर्मास कर अलभ्य लाभ प्राप्त कीया जैसे मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजीको ढुढकभाल से बचाके सवेगी दीक्षा दे उपकेश गच्छका उद्धार करवाया था फीर दोनों मुनिवरोने इस प्राचीन तीर्थके जीर्णोद्धारमें मदद कर वहापर जैन पाठशाला, बोर्डीग, श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान भडार, जैन लायब्रेरी स्थापन करी थी और भी आपको ज्ञानका बडा ही प्रेम

जन्म स. १९३२

ढुंढक दीक्षा स १९५२

जैनदीक्षा १९६०

स्वर्गवास १९७७

मुनि महाराजश्री रत्नविजयजी महाराज.

આનંદ પ્રે:   ગ.

यह बात किसीसे छीपी नही है कि आगम शिरोमणी परम प्रभाविक श्रीमत् भगवतीसूत्र जैन सिद्धान्तो मे एक महत्वका सूत्र है. चारों अनुयोग द्वारोंका महान् खजाना है इसके पठन पाठन के अधिकारी भी बहुश्रुति गीतार्थ मुनि ही है, तथपि अल्पश्रुतवालोंको सुगमतापूर्वक बोध होने के लिये कितनेक द्रव्यानुयोग विषयोंका सुगम रीती से थोकडा रुप में लिखकर अन्य २ शीघ्रबोध भागो में प्रकाशित किये है जिसकी सूचि यहां दी जाती है की कोइ भी विषयको देखना हो तो सुगमतापूर्वक देख सके.

नबर	श्री भगवतीसूत्र.	थोकडो में विषय.	शीघ्रबोध के किस भाग में है.
१	श० १ उ० १	चलमाणे चलिय	भाग २५
२	श० १ उ० १	नरकादि ४५ द्वार	,, २५
३	श० १ उ० १	ज्ञानादिप्रश्न	,, २५
४	श० १ उ० २	देवोत्पातके १४ बोल	,, १
५	श० १ उ० ३	कांक्षामोहनीय	,, १६
६	श० १ उ० ३	,,	,, १६
७	श० १ उ० ४	अस्ति अधिकार	,, २५
८	श० १ उ० ४	वीर्याधिकार	,, २५
९	श० १ उ० ५	कषाय	,, ९
१०	श० १ उ० ६	सूर्योदय	,, २५
११	श० १ उ० ७	नरकादि	,, २५
१२	श० १ उ० ७	गमन	,, २५
१३	श० १ उ० ८	आयुष्यबन्ध	,, १६
१४	श० १ उ० ९	अगरूलघु	,, १६
१५	श० २ उ०१०	पंचास्तिकाय	,, १६
१६	श० ३ उ० ३	चौभंगी ४९	,, १६
१७	श० ५ उ० ८	परमाणु	,, ८
१८	श० ५ उ० ८	हियमान	,,

१९	श० ५ उ० ८	सावचिया	,,	९
२०	श० ५ उ० ८	सप्रदेशी	,,	९
२१	श० ६ उ० ३	५० बोलकी बन्धी	,,	५
२२	श० ७ उ० १	आहार	,,	२५
२३	श० ७ उ० १	अकर्मगति	,,	२५
२४	श० ७ उ० २	प्रत्याख्यान	,,	२५
२५	श० ७ उ० ६	आयुष्यबन्ध	,,	२५
२६	श० ७ उ० ७	कामाधिकार	,,	२५
२७	श० ८ उ० १	पुद्गलके ९ दडक	,,	८
२८	श० ८ उ० २	आसीविष	,,	६
२९	श० ८ उ० २	पाच ज्ञान लब्धि	,,	१६
३०	श० ८ उ० ८	इरियावहि संपराय	,,	५
३१	श० ८ उ० ९	बन्ध	,,	८
३२	श० ८ उ० ९	सर्वबन्ध देशबन्ध	,,	८
३३	श० ८ उ० १०	पुद्गल	,,	८
३४	श० ८ उ० १०	अराधना	,	४
३५	श० ८ उ० १०	कर्म	,,	५
३६	श० १ ५ ६ ८ ११ ७	क्रियाधिकार		२
३७	श० १० उ० १	दशदिश		८
३८	श० ११ उ० १	उत्पल कमल द्वार ३६	,,	८
३९	श० ११ उ० १०	लोकाधिकार	,,	८
४०	श० ११ उ० १०	,,	,	८
४१	श० १२ उ० ५	रूपी अरूपी	,	१
४२	श० १२ उ० ९	देवाधिकार	,	९
४३	श० १३ उ० १-२	उपयोग		१
४४	श० १६ उ० ८	लोक चरमान्त		८
४५	श० १८ उ० ४	कुड जुम्मा		८
४६	श० २० उ० १०	सोपक्रमी आयुष्य		९
४७	श० २० उ० १०	प्रत सचय		९
४८	श० २१ उ० ८०	वनस्पति	,,	२४
४९	श० २२ उ० ६०	,,	,,	२४

अभी तक श्री भगवतीजी सूत्र का विषय लिखना बाकी रह गया है वह जैसे जैसे प्रकाशित होगा वैसे वैसे इस अनुक्रमणिका को साथमें मीला दीया जावेगा ताके सब साधारण को सुविधा रहै.

अन्तमें हम नम्रतापूर्वक यह निवेदन करना चाहते है कि छद्मस्थोंमें त्रुटीये रहनेका स्वाभावीक नियम है तदानुसार अगर प्रेस कॉपी करते या प्रुफ सुधारते समय दृष्टिदोष या मतिदोष रह गया हो तो आप सज्जन उसे सुधार के पढे और ऑफीस में सूचना करेंगे तो हम सहर्ष उपकार के साथ स्वीकार कर अन्यावृत्ति में उसे सुधार देंगे इति अस्तु कल्याणमस्तु । शान्ति ३

आपका,

मेघराज मुनोत.

फलोदी (मारवाड).

विषयानुक्रमणिका.

शीघ्रबोध भाग १० वां.

शीघ्रबोध भाग १० वां.

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला पुष्प न. ३२

श्री सिद्धसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग ६ ठा.

थोकडा नम्बर ६४ वां

श्री नन्दीजी सूत्रसे पांच ज्ञानाधिकार ।

ज्ञान—ज्ञान दो प्रकारके होते है (१) सम्यक्ज्ञान. (२) मिथ्याज्ञान. जिस्मे जीवादि पदार्थों कों यथार्थ सम्यक् प्रकारसे जानना उसे सम्यक् ज्ञान कहते है और जीवादि पदार्थों को विप्रीत जानना उसे मिथ्याज्ञान कहते है ॥ ज्ञानवर्णियकर्म और मोहनियकर्म के क्षोपशम हानेसे सम्यक्ज्ञान कि प्राप्ती होतो है तथा ज्ञानवर्णिय कर्म का क्षोपशम और मोहनिय कर्म का उदय होने से मिथ्याज्ञान कि प्राप्ती होती है जैसे किसी दो कवियोंने कविता करी जिस्मे एक कविने ईश्वरभक्ति का काव्य रचा. दुसराने शृंगार रस मे 'महिला मनोहर माला' रची. इस्मे पहले कविके ज्ञानावर्णिय और मोहनीय दोनों कर्मोका क्षोपशम है और दुसरे कवि के ज्ञानावर्णिय कर्म का तो क्षोपशम है परन्तु साथमे मोहनिय कर्म का उदय भी है वास्ते पहले कवि का सम्यक् ज्ञान है और दुसरे का मिथ्याज्ञान है । इन दोनों प्रकार के ज्ञानके अन्दर

में यहांपर सम्यक् ज्ञान का ही विवेचन करुंगा. इसके अन्तर्गत आत्मीक ज्ञान के साथ और व्यवहारीक ज्ञान का समावेस भी हो सक्ता है।

ज्ञान पञ्च प्रकार के है यथा मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. इन पांचो ज्ञान को संक्षिप्त से कहा जाय तों दो प्रकारके है. (१) प्रत्यक्षज्ञान (२) परोक्षज्ञान जिस्मे प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद है इन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान, नोइन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान. जिस्मे भी इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान का पांच भेद है (प्रत्येक इन्द्रियों द्वारा पदार्थ का ज्ञान होना) यथा–

(१) श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान–शब्द श्रवणसे ज्ञान होना. कि यह अमुक शब्द है.

(२) चक्षुइन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान–रूप देखनेसे ज्ञान होना कि यह अमुक रूप है.

(३) घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान–गन्ध लेने से ज्ञान होना कि यह अमुक गन्ध है.

(४) रसेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान–रस स्वादन करने से ज्ञान होना कि यह अमुक रस है.

(५) स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्षज्ञान–स्पर्श करनासे ज्ञान होना कि यह अमुक स्पर्श है.

दुसरा जो नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान है वह भूत भविष्य काल कि बात हस्तामल कि माफीक जान सके उनके तीन भेद है (१) अवधिज्ञान, (२) मनःपर्यवज्ञान (३) केवलज्ञान. जिस्मे अवधिज्ञान के दो भेद है (१) भवप्रत्य (अपेक्षा) (२) क्षोपशमप्रत्य, भवप्रत्यनो नरक और देवताओं को होते है जैसे नरकमें या देवतों में जीव उत्पन्न होता है वह सम्यग्दृष्टि हो तो निश्चय अवधिज्ञानी होता है और मिथ्यादृष्टि हो तो विभंगज्ञानी होता है और दुसरा जो क्षोपशमप्रत्ययी मनुष्य और तीर्यंच पांचेन्द्रियको अच्छे अध्यव-

सायों के निमत्त कारण ज्ञानावर्णिय कर्म के क्षोपशमसे अवधिज्ञान होता है तथा गुणप्रतिपन्न अनगार को अनेक प्रकार कि तपश्चर्यादि करने से अवधिज्ञान उत्पन्न होता है जिस्के भेद असंख्याते है परन्तु यहांपर सक्षिप्तसे छे भेद कहते है.

(१) अनुगामिक-जहांपर जाते हो वहांपर ही ज्ञान साथमें चले।

(२) अनानुगामिक-जीस जगाहा ज्ञान हुवा हो उसी जगहा रहै।

(३) वृद्धमान-उत्पन्न होने के वाद सदैव वढता ही रहै।

(४) हीयमान-उत्पन्न होने के वाद कम होता जावे।

(५) प्रतिपाति-उत्पन्न होंने के वाद पीच्छा चला जावे।

(६) अप्रतिपाति-उत्पन्न होने के वाद कभी नही जावे।

विस्तारार्थ-अनुगामिक अवधिज्ञान जैसे कीसी मुनि कों अवधिज्ञान उत्पन्न हुवा हो उस्के दो भेद है अंतगयं और मज्ञगयं. उस्मे भी अंतगय के तीन भेद है आगेके प्रदेशों से, पीच्छेके प्रदेशों से पासवाडे के प्रदेशों से. जैसे दृष्टान्त-कोइ पुरुष अपने हाथमें दीवा मणि चीराख लालटेनादि आगे के भागमें रख चलता हो ता उस्का प्रकाश आगे के भागमें पडेगा. इसीं माफीक पीच्छाडी रखनेसे पीच्छाडी प्रकाश पडेगा और पसवाडे रखनेसे प्रकाश पसवाडे मे पडेगा. इसी माफीक जोस जीस प्रदेशों के कर्मदल दूरा हुवा है उस उस प्रदेशों से प्रकाश हो सर्व रूपी पदार्थों को अवधिज्ञान द्वारा जान सकेगा, और जो 'मज्ञगयं' अवधिज्ञान है वह जैसे कोइ आदमि दीपक चीराख मणी आदि मस्तकपर रखे तों उस्का प्रकाश चौतर्फ होगा इसी माफीक मध्य ज्ञानोत्पन्न होनेसे वह चोतरफ के पदार्थों कों जान सकेगा. एवं अनुगामिक ज्ञान का स्वभाव है कि वह जहां जावे वहां साथमें चले।

अनानुगामिक अवधिज्ञान जेसे कोइ मनुष्य एक सीघडीमें

अग्नि लगाइ हो वह जहांपर सागडी रखी हो वहां पर उसका ताप प्रकाश होगा इसी माफीक अवधिज्ञानोत्पन्न हुवा है वहां वेठा हुवा अवधिज्ञान द्वारा संख्याते योजन असंख्याते योजन के क्षेत्र में संबन्धवाले असंबन्धवाले पदार्थों कों जान सकेगा परन्तु उस स्थानसे अन्य स्थानपर जाने के वाद कीसी पदार्थ कों नही जानेगा. अनानुगामिक अवधिज्ञान का स्वभाव है कि वह दुसरी जगाहा सार्थमें न चाले उत्पन्न क्षेत्रमे ही रहै !

वृद्धमान अवधिज्ञान-प्रशस्ताध्यवसाय विशुद्धलेश्या. अच्छे परिणामवाले मुनि को अवधिज्ञान होने के वाद चो तरफसे वृद्धि होती रहै जैसे जघन्य सूक्ष्म निलण फूलके जीवों के तीसरे समय के शरीर जीतना, उत्कृष्ट संपूर्ण लोकतथा लोक जैसे असंख्यात खंडवे अलोकमें भी जाने. इसपर काल और क्षेत्र कि तूलनाकर बतलाते है कि कीतने क्षेत्र देखनेपर वह ज्ञान कीतने काल रह सके। कालसे आवलिकाके असख्यात भाग तकका ज्ञान हों तों क्षेत्र से आंगुलके असख्यात में भागका क्षेत्र देखे एवं दोनोंके सख्यातमें भाग. आवलिकामें कुच्छ न्युन हो तो एक आंगुल पुर्णावलिका हो तों प्रत्येकांगुल. महुर्त हो तों. एक हाथ. एक दिन हो तो एक गाउ. प्रत्येक दिन हो तो एक योजन. एक पक्ष हो तो पचवीस योजन एक मास होतो भरतक्षेत्र, प्रत्येक मास होतो जंबुद्विप, एक वर्ष होतो मनुष्यलोक, प्रत्येक वर्ष होतो रुचकद्विप, संख्यातो काल होतो संख्याताद्विप, असंख्यातो काल होतो, सख्याते असंख्याते द्विप तात्पर्य एक कालकि वृद्धि होनेमे क्षेत्र द्रव्य भावकि आवश्य वृद्धि होती है क्षेत्रकि वृद्धि होनेसे कालकि वृद्धि स्यात् हो या नभी हो. और द्रव्य भावकि आवश्य वृद्धि हो. द्रव्यकि वृद्धि होनेमे कालक्षेत्रकि भजना और भावकि अवश्य वृद्धि हो. भावकि वृद्धि होनेमें द्रव्य क्षेत्र कालकि अवश्य वृद्धि होती है. द्रव्य क्षेत्र काल भावमें सूक्षम बादरकि तरतमता, काल बादर है जिनमें सूक्षम

क्षेत्र है कारण सूची अग्रभागमें जो आकाश प्रदेश है उसे प्रत्येक समय एकेक प्रदेश निकाले तो असख्यात सर्पिणी उत्सर्पिणी पुरी होजावे क्षेत्रसे द्रव्य सूक्षम है कारण एक प्रदेशके क्षेत्रमें अनंते द्रव्य है द्रव्यसे भाव सूक्षम है कारण एक द्रव्यमे अनंत पर्याय है.

हयमान अवधिज्ञान-उत्पन्न होनेके बाद अविशुद्ध अध्यवसाय अप्रशस्त लेश्या खराब परिणाम होनेसे प्रतिदिन ज्ञान न्युनता होता जावे.

प्रतिपात्ति अवधिज्ञान होनेके बाद कीसी कारणोंसे वह पीच्छा भी चला जाता है वह ज्ञान कितने विस्तारवाला होता है वह बतलाते है यथा. आंगुलके असंख्यातमें भागका क्षेत्र को जाने. संख्यातमे भागके क्षेत्रको जाने. एवं बालाग्र, प्रत्येक बालाग्र लीख, प्रत्येकलिख, जू प्र०जू जॅव प्र०जव, अंगुल प्र०आंगुल, पाद प्र० पाद, वेहाथ प्र०वेहाथ, कुत्सि प्र०कुत्सि, धनुष्य प्र०धनुष्य, गाउ-प्र० गाउ, योजन प्र०योजन, सोयोजन प्र०सोयोजन, सहस्रयोजन प्र० सहस्रयोजन, लक्ष्योजन प्र०लक्षयोजन, क्रोडयोजन प्र०क्रोडयोजन क्रोडाक्रोडयोजन प्र०क्रोडाक्रोडयोजन, संख्यातेयोजन, असंख्याते योजन उत्कृष्ट सम्पूर्ण लोकके पदार्थको जानके पीच्छ पडे अर्थात् वह ज्ञान पीच्छा चला जावे. उसे प्रतिपाति अवधिज्ञान कहा जाता है।

अप्रतिपाति अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके बाद कबी न जावे परंतु अन्तर महुर्त्त के अन्दर केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है इन छे भेदों के सिवाय प्रज्ञापना पद ३३ में और भी भेद लिखा हुवा है वह अलग थोकडा रूपमें प्रकाशित है।

अवधिज्ञानके सक्षिप्तसे च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव.

(१) द्रव्यसे अवधिज्ञान जघन्य अनते रूपी द्रव्योंको जाने. उत्कृष्ट भी अनंते द्रव्य जाने. कारण अनंते के अनंते भेद है.

(२) क्षेत्रसे अवधिज्ञान. जघन्य आंगुलके असंख्यातमें भागका क्षेत्र ओर उ० सर्व लोक ओर लोक जैसे असंख्यात खडवे अलोकमें भी जान सके वहां पर रूपी द्रव्य नही है।

(३) कालसे जघन्य आवलिकाके असंख्यात भाग और उत्कृष्ट असंख्याते सर्पिणि उत्सर्पिणि वातें को जाने.

(४) भावसे ज० अनंते भाव. उ० अनंते भाव जाने वह सर्व भावोंके अनंते भाग है इति.

(२) मनःपर्यव ज्ञान-अढाइ द्विपके संज्ञी पांचेन्द्रिय के मनोगत भावको जानसके इस ज्ञानके अधिकारी-मनुष्य-गर्भज-कर्मभूमि-संख्यातेवर्षोंकेआयुष्यवाले-पर्याप्ता-सम्यग्दृष्टि- संयति -अप्रमत-ऋद्धिवान् मुनिराज है जिस मन.पर्यव ज्ञानके दो भेद है (१) ऋजुमति (२) विपुलमति. जिस्के संक्षिप्तसे च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव।

(१) द्रव्यसे-रूजुमति मनःपर्यव ज्ञान-अनंते अनंत प्रदेशी द्रव्य मनपणे प्रणमे हुवे को जाने देखे और विपुलमति विशुद्धसे विस्तारसे जाने देखे।

(२) क्षेत्रसे ऋजुमति मन पर्यव ज्ञान उर्द्ध लोकमें ज्योतिषीयोंके उपरका तला तीर्यग्लोकमें अढाइद्विप दो समुद्रमें पंदरा कर्मभूमी तीस अकर्म भूमी छपन अन्तरद्विपोके संज्ञी पांचेन्द्रिय के मनोगत भावोंको जाणे देखे. विपुलमति इससे अढाइ अंगुल क्षेत्र अधिक वह भी विशुद्ध और विस्तारसे जाने देखे।

(३) कालसे ऋजुमति मन.पर्यव ज्ञान-ज० पल्योपम के असंख्यातमें भागका कालको उ० भी पल्यो० असं० मे भागके कालको जाने देखे. विपुलमति विशुद्ध और विस्तार करके जाने देखे।

(४) भावसे ऋजुमति मनःपर्यव ज्ञान-ज० अनंते भाव उ०

अनंते भाव सर्व भावोंके अनंतमें भागके भावोको जाने देखे. विपु-लमति-विस्तार और विशुद्ध जाने देखे । इति ।

(३) केवलज्ञान सर्व आत्मा के प्रदेशोंसे ज्ञानावर्णिय दर्शनावर्णिय मोहनिय अन्तराय एवं च्यार घातिकर्म क्षय कर सर्व प्रदेशोंको निर्मल बनाके लोकालोकके भावों को समय समय हस्तामलकि माफीक जाने देखे. जिस केवल ज्ञानका दो भेद है एक भव प्रत्ययी-मनुष्य भवमे तेरहवे चौदवे गुणस्थानवाले जीवों को होते है दूसरा सिद्ध प्रत्ययी सकल कर्म मुक्त हो सिद्ध हो गये है उनोके केवल ज्ञान है जिस्मे भव प्रत्यके दो भेद है सयोग केवली तेरहवे गुणस्थान दुसरा अयोग केवली चौदवे गुणस्थान दुसरा सिद्धोंके केवलज्ञानके दो भेद है एक अनंतर सिद्ध जिस सिद्धोंके सिद्धपदकों एक समय हुवा है दुसरा परम्पर सिद्ध जिस सिद्धोको छि समयसे यावत् अनंत समय हुवा हो अनन्तर परम्पर दोनो सिद्धोंके अर्थ सहित भेद शाघ्रबोध भाग दुसरेके अन्दर छप चूके है वहां देखो । पृष्ट ८० से ।

संक्षिप्तकर केवलज्ञानके च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्रकाल भाव ।

(१) द्रव्यसे केवलज्ञानी सर्व द्रव्यको जाने देखे ।

(२) क्षेत्रसे केवलज्ञानी सर्व क्षेत्रको जाने देखे ।

(३) कालसे केवलज्ञानी सर्व कालको जाने देखे ।

(४) भावसे केवलज्ञानी सर्व भावको जाने देखे ।

इति केवलज्ञान इति नोइन्द्रिय प्र० ज्ञान इति प्रत्यक्षज्ञान ।

सेवं भंते सेवं भंते-तमेव सच्चम्

—*—

थोकडा नंबर ६५ वां.

(परोक्षज्ञान)

(२) परोक्ष ज्ञानके दो भेद है मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, जिस्मे मतिज्ञान मनविचारणा बुद्धिप्रज्ञा मनन करनेसे होता है और श्रुतिज्ञान श्रवण पठन पाठन करनेसे होता है जहां मतिज्ञान है वहां निश्चय श्रुतिज्ञान भी है जहां श्रुतिज्ञान है वहां निश्चय मतिज्ञान भी है कारण मति विगर श्रुति हो नही सकता है और श्रुति विगर मति भी नही होती है सम्यग्दृष्टि की मति निर्मल होनेसे मतिज्ञान कहा जाता है और मिथ्यादृष्टि को विषम मति होनेसे तथा मोहनिय कर्मका प्रबलोदय होनेसे मति अज्ञान कहा जाता है इसी माफीक श्रुतिज्ञान भी सम्यग्दृष्टियों के तत्व रमणता तत्व विचार में यथार्थ श्रवण पठन पाठन होनेसे श्रुति-ज्ञान कहा जाता है और मिथ्यादृष्टियों के मिथ्यात्व पूर्वक मिथ्या श्रद्धना होनेसे श्रुति अज्ञान कहा जाता है सम्यग्दृष्टि के सम प्रवृ-ति समविचार समतत्व होनेसे उसको मति श्रुतिज्ञानवन्त और मिथ्या दृष्टि कि मिथ्या प्रवृति मिथ्या विचार मिथ्या तत्व होने से मति अज्ञान श्रुति अज्ञान कहा जाता है

मतिज्ञान के दो भेद है एक श्रवण करने कि अपेक्षा याने श्रवण करके मतिसे विचार करनेसे. दुसरा अश्रवण याने बुद्धि बलसे विचार करनेसे मतिज्ञान होता है जिस्मे अश्रवण के च्यार भेद है.

(१) उत्पातिको बुद्धि-बिगर सु[illegible] र देखा बातों या प्रश्नोंको उत्तर देना.

(२) विनयसे बुद्धि— [illegible] रचा[illegible] प्राप्त हुइ

(३) कर्मसे बुद्धि—जैसे जैसे कार्य करे वैसी बुद्धि प्राप्त हो
(४) पारिणामिका—जैसी अवस्था होती जाती है या अवस्था वढती है वैसी बुद्धि हो जाती है.

इन च्यारो बुद्धियोंपर अच्छी बोधकारक कथावों नन्दी सूत्रकि टीकामें है वह खासकर श्रवण करनेसे बुद्धि प्राप्त होती हैं श्रवण करनेकि अपेक्षा मतिज्ञानके च्यार भेद है.

(१) उगृहा—शीघ्रताके साथ पदार्थोका गृहन करना.
(२) ईहा—गृहन कीये हुवे पदार्थ का विचार करना.
(३) आपय—विचारे हुवे पदार्थ में निश्चय करना
(४) धारणा–निश्चय किये हुवे पदार्थों को धारण कर रखना।

उगृह मतिज्ञान के दो भेद है अर्थ ग्रहन, व्यञ्जन ग्रहन, जिस्मे व्यञ्जन ग्रहनके च्यार भेद है व्यञ्जन कहते है पुद्गलोंको) श्रोत्रेन्द्रिय. घ्राणेन्द्रिय. रसेन्द्रिय. स्पर्शेन्द्रिय इन च्यारों इन्द्रियों को स्व स्व विषयके पुद्गल मिलनेसे मतिसे ज्ञान होता है कि यह पुद्गल इष्ट है या अनिष्ट है तथा चक्षु इन्द्रियको पुद्गल ग्रहनका अभाव है चक्षु इन्द्रिय अपनेसे दुर रहे हुवे पुद्गलों को देखके इष्ट अनिष्ट पदार्थका ज्ञान कर सक्ती है इस वास्ते इसे व्यञ्जन ग्रहनमें नहीं मानी है दुसरा जो अर्थग्रहन है उस्के छे भेद है.

(१) श्रोत्रेन्द्रिय अर्थ ग्रहन—शब्द श्रवणकर उस्के अर्थका ज्ञान करना.
(२) चक्षु इन्द्रिय अर्थ ग्रहन रूप देख उसके अर्थका ज्ञान करना.
(३) घ्राणेन्द्रिय अर्थग्रहन—गन्ध सुँघनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना.

(४) रसेन्द्रिय अर्थग्रहन—स्वादन करनेसे उस्के अर्थ को ग्रहन करना.

(५) स्पर्शेन्द्रिय अर्थ ग्रहन—स्पर्श करनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना.

(६). मन अर्थ ग्रहन--मन पणे पुद्गल प्रणमनेसे उस्के अर्थको ग्रहन करना.

इन छहो अर्थ ग्रहनका मतलब तो एक ही है परन्तु नाम उच्चारण भिन्न भिन्न है जिस्के पांच भेद है—अर्थको ग्रहन करना अर्थको स्थिर करना. अर्थको सावधानपणे संभालना. अर्थके अन्दर विचार करना. और अर्थका निश्चय करना। इसी माफीक ईहा नामके मतिज्ञानका भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस माफीक है विचारमें प्रवेश करे विचार करे, अर्थ गवेषना करे. अर्थ चिंतवण करे भिन्न भिन्न अर्थमें विमासण करे। इसी माफीक आपाय. मतिज्ञान के भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस माफीक है अर्थका निश्चय करे. चिंतवनका निश्चय करे. विशेष निश्चय करे. बुद्धि पूर्वक निश्चय करे विज्ञान पूर्वक निश्चय करे. इसी माफीक धारणा मतिज्ञान के भी श्रोतादि छे भेद है परन्तु पांच नाम इस प्रकार है निश्चत किये हुवे अर्थ कों धारण करना. चीरकाल स्मृतिमे रखना. हृदय कमलमें धारण करना. विशेष विस्तारपूर्वक धारण करना, जेसे कोठारमें रखा हुवा अनाज कि माफीक जावते के साथ धारण कर रखना. यह सब मतिज्ञान के विशेष भेद है उगृह मतिज्ञान कि स्थिति एक समयकी है ईहा और अपाय कि स्थिति अन्तरमुहुर्त कि है और धारण कि स्थिति संख्यातकाल (मनुष्यापेक्षा) असंख्याते काल (देवापेक्षा) की है एवं अश्रवणापेक्षा ४ ओर श्रवणापेक्षा २४ मीलाके मतिज्ञान के २८ भेद होते है.

तथा कर्मग्रन्थमें इन अठावीस प्रकारके मतिज्ञानको बारह

बारह प्रकारसे बतलाये है यथा-बहु अल्प, बहुविध, एकविध, क्षिप्र, चीर, अनिश्रीत, निश्रित, सन्दिग्ध, असन्दिग्ध, ध्रूव अध्रूव,- विवरण जैसे शंख, नगारा झालर आदि वाजंत्रके शब्दों में से क्षयोपशमकी विचित्रताके कारणसे कोइ जीव बहुतसे वाजित्रोंके शब्दोंको अलग अलग सुनते है १ कोइ जीव स्वल्प हा सुनते है २ कोइ जीव उन वार्जीत्रोके स्वर तालादि बहुत प्रकारसे जानते है ३ ३ कोइ जीव मंदतासे सब शब्दोंकों एक वाजित्रही जानते है ४ कोइ जीव शीघ्र-जलदीसे सुनता है ५ कोइ जीव देरीसे सुनता है ६ कोइ जीव ध्वजाके चिन्हसे देवमन्दिरको जानता है ७ कोइ जीव विगर पत्ताका अर्थात् विगर चिन्हसे ही वस्तुको जान लेता है ८ कोइ जीव सशय सहित जानता है ९ कोइ जीव संशय रहित जानता है १० कोट जीवकों जसा पहला ज्ञान हुवा है वैसा ही पीछे तक रहता है उसे ध्रूवज्ञान कहते है ११ कोइ जीवकों पहले ओर पीच्छे में न्यूनाधिकपणेवा विशेषपणा रहता है एवं २८ कों १२ गुणा करनेसे ३३६ तथा अश्रुत निश्रितके ४ भेद मीला देनेसे ३४० भेद मतिज्ञानके होते है इनके सिवाय जाति-स्मरणादि ज्ञान जो पूर्व भव संवन्धी ज्ञान होना यह भी मति ज्ञानका ही भेद है एसे विचित्र प्रकारका मतिज्ञान है जावोंको जैसा जैसा क्षयोपशम होता है वैसी वैसी मति होती है।

मतिज्ञानपर शास्त्रकारोंने दो दृष्टान्त भी फरमाया है यथा एक पुन्यशाली पुरुष अपनी सुखशय्याके अन्दर सुता हुवाथा उसे कीसी दुसरा पुरुषने पुकार करी उसके शब्दके पुद्गल सुते हुवे पुरुष के कांनोंमें पडे वह पुद्गल न एक समयके स्थितिके थे यावत् न संख्याते समयेकि स्थितिके थे किन्तु असंख्याते समयकि स्थितिके पुद्गल थे अर्थात् बोलनेमे असंख्यात समय लगते हैं तदनन्तर वह पुद्गल कोनोंमें पडने को भी असंख्यात समय चाहिये। सुता हुवा पुरुष पुद्गलोंको ग्रहन किया उसे 'उग्रहमतिज्ञान' कहते

है फीर विचार किया कि मुझे कोन पुकारता है उसे 'ईहामति ज्ञान' कहते है बाद में निश्चय किया कि अमुक मनुष्य मुझे पुकारता है उसे 'आपायमतिज्ञान' कहते है उस पुकारकोस्वल्प या चीरकाल स्मरणमें रखना उसे 'धारणामति ज्ञान' कहते है जेसे वह अव्यक्त पणे शब्द श्रवण कर च्यारों भेदोंसे निश्चय किया. इसी माफीक अव्यक्तपणे रूख देखनेसे गन्ध सुँघनेसे स्वाद लेनेसे स्पर्श करनेसे और स्वप्न देखनेसे भी समझना ! दुसरा दृष्टान्त कीतने पुद्गल कांनोंमें जानेसे मनुष्य पुद्गलोकों जान सकते है ? जैसे कोइ मनुष्य कुंभारके वहांसे एक नया पासलीया (मट्टीका वरतन लाके उसमे एकेक जलबिन्दु प्रक्षेप करे तब वह पासलीया पुरण तोरसे परिपूर्ण भरजावे तब उस पासलीयोंसे जलबिन्दु बाहार गीरना शरू हो, इसी माफीक बोलनेवालेके भाषाद्वारा निकले हुवे पुद्गल श्रवण करनेवालेके कानोमें भरते भराते श्रोत्रेन्द्रिय विषय पूर्ण पुद्गल आजावे तब उसे मालुम होती है कि मुझे कोइ पुकारता है इसी माफीक पांचो इन्द्रिय-स्व-स्व विषय के पूर्ण पुद्गल ग्रहन करनेसे अपनी अपनी विषयका ज्ञान होता है इसी माफीक स्वप्नेके भी समज लेना.

मतिज्ञानके संक्षिप्त च्यार भेद है द्रव्य क्षेत्र काल भाव।

(१) द्रव्यसे मतिज्ञान-संक्षिप्त सर्व द्रव्य जाने किन्तु देखे नहीं.

(२) क्षेत्रसे मतिज्ञान संक्षिप्तसे सर्व क्षेत्र जाने पण देखे नहीं.

(३) कालसे मतिज्ञान—संक्षिप्तसे सर्व काल जाने परन्तु देखे नहीं.

(४) भावसे मतिज्ञान-संक्षिप्तसे सर्व भाव जाने परंतु देखे नहि.।

कारण मतिज्ञान है सो देशज्ञान है मनन करनेसे सामान्य प्रकारसे सर्व द्रव्यादिको जान सके परन्तु अपासणीया उपयोग होनेसे देख नही सके इति ।

सेवंभंते सेवभंते तमेवसच्चम्

—※◎※—

थोकडा नम्बर ६६

—•—

(परोक्ष श्रुतिज्ञान)

श्रुतिज्ञान—सामान्यापेक्षा पठन पाठन श्रवण करनेसे होते है या अक्षरादि है वह भी श्रुतिज्ञान है श्रुतिज्ञानके १४ भेद है

(१) अक्षर श्रुतिज्ञान जिस्का तीन भेद है (१) आकारादि अक्षर कि संज्ञा स्थानोपयोगसंयुक्त उच्चारण करना (२) ह्रस्व दीर्घ उदात्त अनुदात्तादि शुद्ध उच्चारण (३) लब्धिअक्षर इन्द्रियजनित जैसे अनेक जातिके शब्द श्रवण कर उसमें भिन्न भिन्न शब्दोंपर ज्ञान करना. एवं अनेक रूप गन्ध रस स्पर्श तथा नोइन्द्रिय-मन से पदार्थ को जानना. इसे अक्षरश्रुति ज्ञान कहते है।

(२) अनाक्षर श्रुतिज्ञान कीसी प्रकार के चन्ह-चेष्टा करनेसे ज्ञान होता है जैसे मुंह मचकोडना नेत्रों से स्नेह या कोप दर्शाना, सिर हीलाना, अंगुली से तरजना करना, हांसी खांसी छींक उवासी डकार अनेक प्रकार के वाजित्रादि यह सब अनाक्षर श्रुतिज्ञान है।

(३) सन्नी श्रुतिज्ञान. सन्नी पांचेन्द्रिय मनवाले जीवों को होते है जिस्के तीन भेद है (१) दीर्घकाल=स्वमत्त परमत्त के

श्रुति ज्ञान पर दीर्वकालका विचार करना तथा श्रुतिज्ञान द्वारा निश्चय करे (•) हेतुवाद=हितोपदेशादि श्रवण कर श्रुतिज्ञान प्राप्त करना (३) दृष्टिवाद=द्वादशांगी अन्तर्गत दृष्टिवाद अङ्ग को पठन पाठन कर श्रुतिज्ञान हांसल करे इस्कों संज्ञी श्रुतिज्ञान कहते है।

(४) असंज्ञी श्रुतिज्ञान-मन और संज्ञीपणे के अभाव पसे एकेन्द्रिसे असंज्ञी पांचेन्द्रिय के जीवों को होता है वह अव्यक्तपणे संज्ञा मात्र से ही प्रवृति करते है जिस्के तीन भेद है स्वल्प काल कि संज्ञा अहेतुवाद अदृष्टिवाद याने सज्ञीसे विप्रीत समझना।

(५) सम्यक् श्रुतिज्ञान-श्री सर्वज्ञ वीतराग-जिन-केवली-अरिहन्त-भगवान प्रणित स्याद्वाद तत्त्व विचार-षट्द्रव्य नय निक्षेप प्रमाण द्रव्य गुण पर्याय परस्पर अविरूद्ध श्री तीर्थकर भगवान् त्रिलोक्य पूजनीय भव्य जीवों के हितके लिये अर्थरूप फरमाइ हुइ वाणि जिस्कों सुगमता के लिये गणधरोंने सूत्र रूपसे गुंथी और पूर्व महा रूषियोंने उसके विवरणरूप रची हुइ पांचांगी उसे सम्यक्सूत्र कहते है या चौदा पूर्वधरो के रचित तथा अभिन्न दश पूर्वधरों के रचित ग्रन्थों को भी सम्यक् श्रुतिज्ञान कहते है। उस्के नाम आगे लिखेंगे।

(६) मिथ्याश्रुतिज्ञान-असर्वज्ञ सरागी छद्मस्त अपनि बुद्धि से स्वछंदे परस्पर विरूद्ध जिस्मे प्राणवधादि का उपदेश स्वार्थ पोषक हटकदाग्रह रूप जीवों के अहितकारी जो रचे हुये अनेक प्रकार के कुरांणपूरांण ग्रन्थ है उसमें जीवादि का विप्रीत स्वरूप तथा यज्ञ होम पिंडदान रूतुदान प्राणवधादि लोक अहित कारक उपदेश हो उसे मिथ्याश्रुतिज्ञान कहते है।

(क) सम्यग्दृष्टियों के सम्यक्सूत्र तथा मिथ्यासूत्र दोनों सम्यग् श्रुतिज्ञानपणे प्रणमते है कारण वह सम्यग्दृष्टि होनेसे जैसी वस्तु हो उसे वैसी ही श्रद्धना है और मिथ्यादृष्टियोंके सम्यग्सूत्र

तथा मिथ्यासूत्र दोनों मिथ्याश्रुति ज्ञानपणे प्रणमते है कारण उसकी मति मिथ्यात्वसे भ्रमित है वास्ते सम्यग्सूत्र भी मिथ्यात्व पणे प्रणमते है जैसे जमालि आदि निन्हवोंके वीतरागों कि वाणी मिथ्यारूप हो गइ थी और भगवान् गौतम स्वामिके च्यार वेद अठारे पुरांण भी सम्यक्पणे प्रणमिये थे कारण वह उनके भावों को यथार्थपणे समज गये थे इत्यादि

(७) सादि (८) सान्त (९) अनादि (१०) अनान्त= श्रुतिज्ञान विरहकालापेक्षा भरतादि क्षेत्रमें सादि सान्त है और अविरह कालापेक्षा महाविदेह क्षेत्रमें अनादि अनान्त है जिस्के संक्षिप्त से च्यार भेद है यथा द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव। जिस्मे द्रव्यापेक्षा एक पुरुषापेक्षा श्रुतिज्ञान सादि सान्त है और बहुत पुरुषापेक्षा अनादि अनान्त है क्षेत्रापेक्षा पांच भरत पांच एरव-रतापेक्षा सादि सान्त है महा विदेहापेक्षा अनादि अनान्त है। कालापेक्षा उत्सर्पिणि अवसर्पिणि अपेक्षा सादि सान्त है और नोसर्पिणि नोउत्सर्पिणि अपेक्षा अनादि अनान्त है। भावापेक्षा जिन प्रणित भाव द्वादशांगी सामान्यविशेष उपदेश निर्देश परू-पणा है वह तो सादि सान्त है और क्षोपशम भावसे जो श्रुति-ज्ञान प्राप्त होता है वह अनादि अनान्त है तथा भव्यसिद्धी जीवों कि अपेक्षा सादि सान्त है और अभव्य जीवों कि अपेक्षा अनादि अनान्त है।

श्रुतिज्ञान के अभिभाग पलिच्छेद (पर्याय) अनंत है जैसे कि एक अक्षर कि पर्याय कीतनी है कि सर्व आकाशप्रदेश तथा धर्मास्तिकायादि कि अगुरु लघुपर्याय जीतनी है। सूक्ष्म निगोद के जीवों से यावत् स्थुल जीवों के आत्मप्रदेश मे अक्षर के अन-न्तमें भाग श्रुतिज्ञान सदैव निर्मल रहता है अगर उसपर कर्मदल लग जावे तो जीवका अजीव हो जावे परन्तु एसा न तो भूतकाल में हुवा न भविष्य कालमें होगा इस वास्ते ही सिद्धान्तकारोंने

कहा है कि जीवों के आठ रूचक प्रदेश सदैव निर्मल रहते है वहां कर्मदल नहीं लगते है यह ही चैतन्यका चैतन्यपणा है जैसे आकाश में चन्द्र सूर्य कि प्रभा प्रकाश करती है कदाच् उस को महामेघ-बादले उस प्रभा के प्रकाश को झांकासा बना देते है तथपि उस प्रकाश को मूलसे नष्ट नही कर सकते है बादल दूर होने से वह प्रभा अपना संपुरण प्रकाश कर सक्ती है इसी माफीक जीवके चैतन्यरूप प्रभा का प्रकाश कों कर्मरूप बदल झांकासा बना देते है तथपि चैतन्यता नष्ट नही होती है कर्म दल दुर होने से वह ही प्रभा अपना संपुरण प्रकाश कों प्रकाशित कर सक्ती है।

(११) गमिक श्रुतिज्ञान-दृष्टिवादादि अंगमें एकसे अलावे अर्थात् सदृश सदृश बातें आति हो उसे गमिक श्रुतिज्ञान कहते है।

(१२) अगमिक श्रुतिज्ञान-अंग उपांगादि में भिन्न भिन्न विषयोंपर अलग अलग प्रबन्ध हो उसे अगमिक श्रुतिज्ञान कहते है जैसे ज्ञातासूत्रमें पचवीस क्रोड कथावों थी जिस्मे साढा एकवीस क्रोड तों गमिक कथावों जो कि उस्मे ग्राम नाम कार्य संबन्ध एकसाही था ओर साढातीन क्रोड कथावो अगमिक थी इसी माफीक और आगमोमे भी तथा दृष्टिवादांगमें भी समजना.

(१३) अग श्रुतिज्ञान-जिस्मे द्वादशांगसूत्र ज्ञान है

(१४) अनांग श्रुतिज्ञान-जिस्के दो भेद है (१) आवश्यक सूत्र (२) आवश्यकसूत्र वितिरित्तसूत्र जिस्मे आवश्यकसूत्र के छे अध्ययन रूप छे विभाग है यथा. सामायिक, चउवीसत्थ, वन्दना, पडिक्रमण, काउसग्ग, पञ्चखांण और आवश्यक वितिरित्त सूत्रोंके दो भेद है एककालिकसूत्र जो लिखते समय पहले या चरम पेहर में समाप्त किये गये थे. दुसरे उत्कालिक जो दुसरी तीसरी पेह-रमें समाप्त कीये गये थे.

कालिक सूत्रोंके नाम इस मुजब है

(१) श्री उतराध्ययनजी सूत्र
(२) श्री दशाश्रुतस्कन्धजी सूत्र
(३) श्री बृहत्कल्पजी सूत्र
(४) श्री व्यवहारजी सूत्र
(५) श्री निशिथजी सूत्र
(६) श्री महानिशिथजी सूत्र
(७) श्री ऋषिभाषित सूत्र
(८) श्री जम्बुद्विप प्रज्ञप्ति सूत्र
(९) श्री द्विपसागर प्रज्ञप्ति सूत्र
(१०) श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
(११) श्री क्षुलकवैमान प्रवृति "
(१२) श्री महा वैमान प्रवृति "
(१३) श्री अङ्गचूलिका सूत्र
(१४) श्री वङ्गचूलिका सूत्र
(१५) श्री विवाहाचूलिका सूत्र
(१६) श्री आरूणोत्पातिक सूत्र
(१७) श्री गारूडोत्पातिक सूत्र
(१८) श्री धरणोत्पातिक सूत्र
(१९) श्री वैश्रमणोत्पातिक सूत्र
(२०) श्री वैलंधरोत्पातिक सूत्र
(२१) श्री देवीन्द्रोत्पातिक सूत्र
(२२) श्री उस्थान सूत्र
(२३) श्री समुस्थान सूत्र
(२४) श्री नागपरिआवलिका
(२५) श्री निरयावलिका सूत्र
(२६) श्री कप्पयाजी सूत्र
(२७) श्री कप्पवर्डिसिया सूत्र
(२८) श्री फुप्फीयाजी सूत्र
(२९) श्री पुप्फयजी सूत्र
(३०) श्री वणियाजी सूत्र
(३१) श्री विन्हीदशा सूत्र
(३२) श्री आसीविष भावना "
(३३) श्री दृष्टिविष भावना "
(३४) श्री चरणसुमिण भावना "
(३५) श्री महासुमिण भावना "
(३६) श्री तेजस निसर्गसूत्र
प्रसंगोपात श्री
(३७) श्री वेदनीशतक (ठवा०)
(३८) श्री बन्धदशा (स्या०)
(३९) श्री दोगिद्धिदशा (,,)
(४०) श्री दीहदशा (,,)
(४१) श्री सखेवित्तदशा ,,)
(४२) श्री आवश्यक सूत्र

उत्कालीक सूत्रोंके नाम.

(४३ श्री दशवैकालिक सूत्र
(४४) श्री कल्पाकल्प सूत्र
(४५) श्री चूलकल्प सूत्र
(४६) श्री महाकल्प सूत्र
(४७) श्री उत्पातिक सूत्र
(४८) श्री राजप्रश्नेनि सूत्र
(४९) श्री जीवाभिगम सूत्र

(५०) श्री प्रज्ञापना सूत्र
(५१) श्री महाप्रज्ञापना सूत्र
(५२) श्री प्रमादाप्रमाद सूत्र
(५३) श्री नन्दीसूत्र
(५४) श्री अनुयोगद्वार सूत्र
(५५) श्री देवीन्द्रस्तुति सूत्र
(५६) श्री तंदुलव्याली सूत्र
(५७) श्री चन्द्रविजय सूत्र
(५८) श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र
(५९) श्री पौरषी मंडल सूत्र
(६०) श्री मंडलप्रवेश सूत्र
(६१) श्री विद्याचारण सूत्र
(६२) श्री विगिच्छओ सूत्र
(६३) श्री गणिविजय सूत्र
(६४) श्री ध्यानविभूति सूत्र
(६५) श्री मरणविभूति सूत्र
(६६) श्री आत्मविशुद्धि सूत्र
(६७) श्री वीतराग सूत्र
(६८) श्री संलेखणा सूत्र
(६९) श्री व्यवहार कल्पसूत्र
(७०) श्री चरणविधि सूत्र
(७१) श्रीआउरप्रत्याख्यान सूत्र
(७२) श्री महाप्रत्याख्यान सूत्र

साथमें बारहाअंगो के नाम

(७३) श्री आचारांग सूत्र
(७४) श्री सूत्र कृतांग सूत्र
(७५) श्री स्थानायांग सूत्र
(७६) श्री समवायांग सूत्र
(७७) श्री भगवतीजी सूत्र
(७८) श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र
(७९) श्रीउपासक दशांग सूत्र
(८०) श्री अन्तगड दशांग सूत्र
(८१) श्री अनुत्तरोपपातिक सूत्र
(८२) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र
(८३) श्री विपाक सूत्र
(८४) श्री दृष्टिवाद सूत्र

एवं ८४ आगमोंके नाम

इन ८४ आगमोंके अन्दर जो बारहा अंग है उनोंके अन्दर कीसकीस बातोंका विवरण कीया गया है वह संक्षिप्तसे यहां बतला देते है। यथा:—

१ आचारांग सूत्रमें—साधुका आचार है सो श्रमण निग्र-न्थोंका सुप्रशस्त आचार, गोचर भिक्षा लेनेकी विधि, विनय वैनयिक, कायोत्सर्गादि स्थान, विहार भूम्यादिकमें गमन, चंक्र-मण (श्रम दूर करनेके लिये उपाश्रयमें जाना), या आहारादिक पदार्थोंका माप, स्वाध्यायमें नियोग, भाषादि समिति, गुप्ति,

शय्या, उपधि, भक्त, पान, उद्गमादि (उद्गम, उत्पात और एषणा), दोषोकी विशुद्धि, शूद्धाशुद्ध ग्रहण आलोचना, व्रत, नियम, तप और भगवान वीरप्रभुका उज्वल जीवन है। प्रथम श्री आचारांग सूत्रमें दो श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यंत्रमें.

२ सूत्रकृतांग (सूअगडांग) सूत्रमें—स्वसिद्धांत परसिद्धांत; स्वऔरपरसिद्धांत, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष तकके पदार्थों, इतर दर्शनसे मोहित, सदिग्ध नव दीक्षितकी बुद्धिकी शुद्धिके लिये एकसोएंशी क्रियावादिका मत, चौरासी अक्रियावादिका मत, सडसठ अज्ञानवादिका मत, बतीस विनयवादिका मत एकुल मीलकर ३६३ अन्य मतियों के मतकों परिक्षेप करके स्वसमय स्थापन व्याख्यान है दुसरा अंगका दो श्रुतस्कन्ध इत्यादि शेष यंत्रमें.

३ स्थानांग सूत्रमें—स्वसमयकों, परसमयकों, और उभय समयकों स्थापन, जीवकों अजीवकों, जीवाजीवकों, लोककों, अलोककों, लोकालोककों स्थापन, पर्वत, शिखर, कुंट, ज्ञाण, कुड, गुफा, आगर, द्रहें, नदी आदि एकएक बोलसे लगाके दशदश बोलका संग्रह कीया हुवा है. जीस्का श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष यंत्रमें.

४ समवायांग सूत्रमें—स्वसिद्धांत, परसिद्धांत, उभय सिद्धांत, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक अलोक, लोकालोक और एकादिक कितनाक पदार्थोंकों एकोतरिक परिवृद्धिपूर्वक प्रतिपादन अर्थात् प्रथम एक संख्यक पदार्थोंका निरुपण पीछे द्विसंख्यक यावत क्रमसर ३-४ यावत् क्रोडाक्रोड पर्यंत अथवा द्वादशांग गणिपिटकका पर्यवोकों प्रतिपादन और तिर्थकरोंके पूर्वभव मातापिता वा दीक्षा, ज्ञान, शिष्य आदि व चक्रवर्त्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रति वासुदेवादिकका व्याख्यान है जीस्का श्रुतस्कंध १ इत्यादि शेष यंत्रमें.

५ व्याख्यान प्रज्ञप्तिः—(भगवती) भगवतीसूत्रमें स्वसमय-परसमय, स्वपरसमय, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक, अलोक, लोकालोक अलग अलग प्रकारका देव, राजा राजर्षि और अनेक प्रकारके संदिग्ध पुरुषोंने पुछे हुवे प्रश्नोंका श्रीजिनभगवान विस्तार पूर्वक कहा हुवा उत्तर, सो उत्तर, द्रव्य. गुण, क्षेत्रकाल, पर्याय. प्रदेश और परिणामका अनुगम निक्षेपण, नय, प्रमाण और विविध सुनिपुण उपक्रमपूर्वक यथास्ति भावना प्रतिपाद करे. जिन्हसे लोक और अलोक प्रकाशित है, वह विशाल संसार समुद्र तारनेको समर्थ है. इंद्रपूजित है भव्य लोकोंके हृदयका अभिनन्दक हे, अंधकाररूप मेलका नाशक हे, सुष्टुदृष्ट है, दीपभूत है. इहा. मति और बुद्धिका वर्धक है, जीस प्रश्नोंकी संख्या ३६००० की है जीसमें श्रुतस्कंध इत्यादि शेष यंत्रमें.

६ ज्ञाता धर्मकथासूत्र में—उदाहरण भूत पुरुषोंका नगरो. उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ. माता पिता, समवसरणो, धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, यहलोकिक और परलोकिक ऋद्धि विशेषो भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो, तपो, उपधानो. पर्याओ संलेखणा, भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलमां प्रत्ययतागे, बोधिलाभो और अंतक्रियाओ, इस अगमें दो श्रुत स्कंध और आगणीस अध्ययनो है। धर्म कथाका दश वर्ग है जीसमें एक एक धर्मकथामें पांचसो पांचसो आख्यायिकाओ है। एकेक आख्यायिकामें पांचसो पांचसो उपाख्यायिकाओ है। एक एक उपाख्यायिकाओमें पांचसो पांचसो आख्यायिको-पाख्यायिकाओ है यह सर्व मिलके कथा वर्गमें गमिक (सादृश) और अगमिक सामिल है जीसमें गमिक कथाओ छोडके शेष साढा तीन क्रोड कथाओ इस अंगमें है शेष यत्रमें देखो।

७ उपासक—दशांग सूत्रमें उपासको (श्रावको) का नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता पिताओ, समवसरणो,

धर्माचार्यो. धर्मकथाओ यहलोककी और परलोककी ऋद्धी विशेष और श्रावकोंका शीलव्रतो, विरमणो, गुणव्रतो, प्रत्याख्यानो, पौषधोपवासो, श्रुत परिग्रहो, तपो उपधानो, प्रतिमाओ, उपसर्गा, संलेखना भक्त प्रत्याख्यानो पादपोपगमनो देवलोक गमनो, सुकुलमां जन्मो, बोधिलाभ और अंतक्रिया. इस अंगका श्रुतस्कंध १ है इत्यादि शेष यंत्रमें।

अंतकृद्दशांग सूत्रमें---अंतकृत (अन्तकेवल) प्राप्त पुरुषोंका नगरो उद्यानो, चैत्यो. वनखंडो, राजाओ, माता पिता, समवसरणो, धर्माचार्यो. धर्मकथाओ, यह लोक और परलोककी ऋद्धि, भोग परित्यागो, प्रव्रज्याओ, श्रुतपरिग्रहोः तपो उपधानो बहुविध प्रतिमाओ, क्षमा, आर्जव, मार्दव सत्य सहित शौच, सत्तर प्रकारको संयम उत्तम ब्रह्मचर्य. अकिंचनता. तप क्रियाओ, समितिओ, गुप्तिओ, अप्रमादयोग उत्तम स्वाध्याय और ध्यानका स्वरूप, उत्तम सयमको प्राप्त और जित परिषह पुरुषोंको चार प्रकारका कर्मक्षय हुवा बाद उत्पन्न हुवो अंत समय केवल ज्ञानको लाभ, मुनिओंका पर्याय काल, पादपोपगमन पवित्र मुनिवर जीतना भक्तो (भक्तनो) कुं त्याग करके अतकृत हुवा इत्यादि. इस अंगका श्रुतस्कंध एक है इत्यादि शेष यंत्रमें.

९ अनुत्तरोपपातिक सूत्रमें—अनुत्तरोपपातिको (मुनिओ)का नगरो, उद्यानो चैत्यो वनखंडो राजाओ माता पिताओ, समवसरणो, धर्माचार्यो. धर्म कथाओ, यह लोकका और परलोकका ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो, श्रुतपरिग्रहो. तपो उपधानो. पर्याय. प्रतिमा. संलेखना. भक्तपान प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो, सुकुलावतारो, बोधि लाभो और अंतक्रियाओ नवमा अंगमें १ श्रुतस्कंध है इत्यादि शेष यंत्रमें.

१० प्रश्न व्याकरण सूत्रमें—एकसो आठ प्रश्नो, एकसो आठ अप्रश्नो, एकसो आठ प्रश्नाप्रश्नो, अंगुठा प्रश्नो, बाहु प्रश्नो, आदर्श

(काच) प्रश्नो और भी विद्याका अतिशयो तथा नागकुमार और सुवर्ण कुमारको साथे हुआ दिव्य संवादो इस अंगमें श्रुत स्कंध १ है इत्यादि शेष यंत्रमें वर्तमान इस अंगमें पांचाश्रव पांच संवरका सविस्तार वर्णन है।

११ विपाक–सूत्रमें विपाक संक्षेपसे दो प्रकार दुःख विपाक (पापका फल) और सुख विपाक (पुण्यका फल) जीसमें दुःख विपाकमें दुःखविपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो वनखंडो, राजाओ, माता पिता, समवसरण धर्माचार्यो, धर्म कथाओ, नरक गमनो संसार प्रबंध दुःख परपरा, और सुख विपाकमें सुख विपाकवालाओका नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, माता, पिताओ, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, अलोकको और परलोककी ऋद्धि विशेषो, भोग परित्यागो प्रव्रज्याओ, श्रुत परिग्रहो तपो, उपधानो पर्यायो प्रतिमाओ, संलेखनाओ, भक्त प्रत्याख्यानो, पादपोपगमनो, देवलोक गमनो, सुकुलावतार, बोधिलाभ और अंतक्रियाओ, इस अंगमें इत्यादि शेष यंत्रमें।

१२ दृष्टिवाद सूत्रमें –सब पदार्थोंकी प्ररूपणा है जीस्का अंग पाच है। १ परिकर्म (गणित विशेष तथा छन्द, पद, काव्यादिकी रचनाकी संकलना २ सूत्र (दृष्टिवाद संबंधी ८८ सूत्रका विचार) ३ पूर्व (१४ पूर्व) ४ अनुयोग (जिसमें तिर्थकरोंका च्यवनादि पंचकल्याणक व परिवार तथा रुषभदेव और अजीतनाथके आंतरामें पाटोनपाट मोक्ष गये थे जीस्का अधिकार (५) चूलिका (पूर्वोक्त उपर चूलिका) दृष्टिवादमें श्रुतस्कंध एक है पूर्व चौदा वस्तु (अध्येन) संख्याता इत्यादि।

इन द्वादशांगीमें प्रत्येक अंगकी, प्रत्येक वांचना है संख्याता व्याख्यानद्वार, संख्याता वेढा जातका छंद, संख्याता श्लोक, संख्याती निर्युक्ति, संख्याति संग्रहणी गाथा, संख्याति परिवृत्ति, संख्यातापद, संख्याता अक्षर, अनंता गमा, अनंतापर्यवा, परिताश्रस और अनंता स्थावर इत्यादि सामान्य विशेष प्रकारे भी

(९) प्रतिपत्तिश्रुत—गति इन्द्रिय आदि किसी द्वारसे संसारके जीवोंका ज्ञान होना उसे प्रतिपत्तिश्रुत कहते हैं।

(१०) प्रतिपत्तिसमासश्रुत—गति इन्द्रिय आदि बहुतसे द्वारोंसे संसारी जीवोंका ज्ञान होना।

(११) अनुयोगश्रुत—'संतपय परूवणा दव्व पमाणं च' इस पदमें कहा हुआ अनुयोगद्वारोंमेंसे किसी एकके द्वारा जीवादि पदार्थोंको जानना अनुयोगश्रुत है

(१२) अनुयोगसमासश्रुत—एकसे अधिक दो तीन अनुयोगद्वारोंसे जीवादि पदार्थोंको जानना उसे अनुयोगसमासश्रुत कहते हैं।

(१३) प्राभृत-प्राभृतश्रुत—दृष्टिवादके अन्दर प्राभृत-प्राभृत नामका अधिकार है उनोंमे किसी एकका ज्ञान होना।

(१४) प्राभृत प्राभृत समासश्रुत—दो तीन इत्यादि प्राभृत प्राभृतोंसे ज्ञान होना उसे प्रा० प्रा० समास कहते हैं।

प्राभृतश्रुत—जैसे एक अध्ययनके अनेक उद्देशा होते हैं इसी माफिक प्राभृत प्राभृतके विभागरूप प्राभृत है जिस एकसे ज्ञान होना उसे प्राभृत ज्ञान कहते हैं

(१६) प्राभृतसमासश्रुत—उक्त दो तीन इत्यादिसे ज्ञान होना उसे प्राभृतसमासश्रुत कहते हैं।

(१७) वस्तुश्रुत—कई प्राभृतके अधिकाररूप वस्तु होते हैं जिनमें एक वस्तुसे ज्ञान होना उसे वस्तुश्रुत

(१८) वस्तुसमासश्रुत—उक्त दो तीन इत्यादि वस्तुओंसे ज्ञान होना उसे वस्तुसमास कहते हैं।

(१९) पूर्वश्रुत—अनेक वस्तुओंसे एक पूर्व होते हैं उन एक पूर्वका ज्ञान होना उसे पूर्वज्ञान कहते हैं।

(२०) पूर्वसमासश्रुत—दो तीन पूर्व-वस्तुओंसे ज्ञान होना उसे पूर्वसमास ज्ञान कहा जाता है।

इनके सिवाय श्रुतज्ञानवाला उपयोग संयुक्त [illegible] द्रव्यरूपसे जान सकता है।

एकादशांगका यंत्र.

संख्या	अंगनाम	मूलपद संख्या	वर्तमान पद संख्या	कर्ता.	अध्ययन.	उद्देशा.	टीका संख्या.	टीका कर्ता.	टीका संवत्.
१	आचारांग	*१८०००	२५२५	पांचमा गणधर सुधर्मा स्वामिजी	२५	८५	१२०००	शीलांकाचार्य	९३३
२	सूयगडायांग	३६०००	२१००		२३	३३	१२८५०		९३३
३	स्थानायांग	७२०००	३६००		ठा० १०	२१	१४२५०	श्री अभयदेवसूरिजी	११२०
४	समवायांग	१४४०००	१६६७		१	१	३५७५		११२०
५	भगवतीजी	२८८०००	१५७५२		श० ४१	१०००० १९२५	१८६१६		११२०
६	ज्ञाताधर्म कथा	५७६०००	५५००		१९ / २०८	०	३८००		११२०
७	उपासकदशांग	११५२०००	८१२		१०	०	९००		११२०
८	अन्तगडदशा०	२३०४०००	८९९		व. ८	९०	४००		११२०
९	अनुत्तरोववाइ	४६०८०००	१९२		व. ३	३३	१००		११२०
१०	प्रश्नव्याकरण	९२१६०००	१२५६		१०	०	४६००		११२०
११	विपाक	१८४३२०००	१२१६		२०	०	९००		११२०

* एक पदके अक्षर १६३४८३०७८८८ इतने होते हैं जिन्होंके ३२ अक्षरके श्लोक गीणा जावें तो एक पदके ५१०८८४६२१॥ श्लोक होते हैं एस १८००० पद श्री आचारांगसूत्रके थे इसी माफिक सर्व आगमोंका समज लेना।

इन द्वादशांगीको भूतकालमें अनंतेजीवों विराधना करके चतुर्गति संसारके अंदर परिभ्रमण कीया. वर्तमान कालमें संख्याते जीव परिभ्रमण करते है और भविष्य कालमें अनंतेजीव परिभ्रमण करेंगे.

इन द्वादशांगीकी भूतकालमें अनंतेजीवों आराधना करके संसाररूपी समुद्रकों पार पहोंचे (मोक्ष गये) और वर्तमान कालमें संख्याते जीव मोक्ष जाते है (महाविदेह अपेक्षा) और भविष्यमें द्वादशांगीकों आराधन करके अनंते जीव मोक्ष जावेगें.

यह द्वादशांगी भूतकालमें थी, वर्तमान कालमें है और भविष्य कालमें रहेगी. जैसे पंचास्तिकायकी माफिक निश्चल नित्य. शाश्वती अक्षय, अव्याबाध, अवस्थित रहेगी.

श्रुतज्ञानका संक्षेपसे चारभेद है द्रव्य. क्षेत्र. काल. भाव.

(१) द्रव्यसे उपयोग युक्त श्रुतज्ञान सर्व द्रव्यकों जाने देखे.
(२) क्षेत्रसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व क्षेत्रकों जाने देखे.
(३) कालसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व कालकों जाने देखे.
(४) भावसे उपयोग सहित श्रुतज्ञान सर्व भावकों जाने देखे.

चौदा प्रकारके श्रुतिज्ञानके अन्तमें सूत्रका व्याख्या करनेकी पद्धति वतलाइ हैं. व्याख्यानदाताओंको प्रथम मूल सूत्र कहना चाहिये. तदान्तर मूल सूत्रका शब्दार्थ. तदान्तर निर्युक्ति. तदान्तर विषय विस्तारसे प्रतिपादनार्थ, टीका, चूर्णी भाष्य तथा हेतु दृष्टान्त युक्ति द्वारा स्पष्टिकरण करना यह व्याख्यानकी पद्धति है।

इति श्रुतज्ञान. इति परोक्षज्ञान.

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम.

—※—
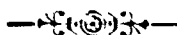
थोकडा नम्बर ६७

सूत्रश्री पन्नवणाजी पद ३३ अवधिज्ञानाधिकार

भव १ विषय २ संस्थान ३ अभ्यान्तरबाह्य ४ देशसर्व ५ हीयमान वृद्धमान अवस्थीत ६ अनुगमि अनानुगमि ७ प्रतिपाति अप्रतिपाति ८ ।

(१) भव-नारकि देवतावोंको अवधिज्ञान भवप्रत्य होते है और मनुष्य तथा तीर्यंच पांचेन्द्रियकों क्षोपशमसे होते है ।

(२) विषय-अवधिज्ञान अपनी विषयसे कितने क्षेत्रकों देख सकते है जान सकते है ।

(१) रत्न प्रभा नारकि	जघन्य	३॥	गाउ	उत्कृष्ट	४	गाउ
(२) शर्करा प्रभा नारकि	,,	३	,,	,,	३॥	,,
(३) बालुका प्रभा नारकि	,,	२॥	,,	,,	३	,,
(४) पङ्क प्रभा नारकि	,,	२	,,	,,	२॥	,,
(५) धूम प्रभा नारकि	,,	१॥	,,	,,	२	,,
(६) तमः प्रभा नारकि	,,	१	,,	,,	१॥	,,
(७) तमस्तमा प्रभा नारकि	,,	०॥	,,	,,	१	,,

असुरकुमार के देव ज० २५ योजन उ० उर्ध्व लोकमे सौधर्म कल्प अधोलोकमे तीसरी नरक. तीर्यगलोगमें असंख्याते द्विप समुद्र अवधिज्ञानसे जाने देखे । नागादि नौजातिके देव० ज० २५ योजन. उ० उर्ध्वलोकमें ज्योतीषीयोंके उपरका तला. अधोलोकमे पहली नरक. तीर्यगलोकमें संख्याते द्विपसमुद्र. वाणव्यन्तर देव. और ज्यातिषी देव. ज० उ० संख्याते द्विप समुद्र जाने. सौधर्मशान कल्पके देव जघन्य आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० उर्ध्व स्वध्वजा पताका अधोमें पहली नारक तीर्यगलोकमें असंख्याते द्विपसमुद्र

एवं संनत्कुमार महीन्द्रदेव परन्तु अधोलोकमें दूसरी नरक जाने.
एव ब्रह्म और लांतकदेव परन्तु अधोलोकमें तीसरी नरक जाने.
एवं महाशुक्र सहस्रदेव परन्तु अधोलोकमें चोथी नरक जाने
एवं आणत प्राणत भरण्य अच्यूतदेव परन्तु अधोलोक पांचमी नरक
जाने. एवं नौग्रीवेगके देव परन्तु अधोलाकमें छटी नरक जाने.
एवं च्यारानुत्तर वैमान परन्तु अधोलोकमें सातमी नरक जाने
और सर्वार्थसिद्ध वैमानके देव, लोकभिन्न याने सर्व त्रसनालिको
जाने यह बात ख्यालमे रखना कि सब देव उर्ध्व तो अपने अपने
वैमानके ध्वजा पताका और तीर्यगलोकमे असंख्याते द्विप समुद्र
देखता है। तीर्यच पांचेन्द्रिय ज० आंगुलके असख्यातमे भाग.
उ० असख्याते द्विप समुद्र जाने.। मनुष्य ज० आंगु० अस० भाग
उ० सर्व लोक जाने देखे और लोक जैसे असंख्यात खंड अलोकमें
भी जान सक्ते है। परन्तु वहां रूपी पदार्थ न होनेसे मात्र विषय
ही मानी जाती है.

(३) संस्थान-अवधिज्ञानद्वार जिस क्षेत्रको जानते है वह कीस
आकारसे देखते वह कहते है. नारकि तीपायाके सस्थान. भुवनपति
पालाके सस्थान, व्यन्तर देव ढोलके सस्थान. ज्योतिषी झालरके
सस्थान. बारह देवलोकके देव उर्ध्व मर्दग के सस्थान, नौग्रीवेग
पुष्पोंकि चगेरीके आकार, पांचानुत्तर वैमानके देव, कुमारिकाके
कचुके सस्थान मनुष्य और तीर्यच अनेक संस्थानसे जानते है।

(४) नारकी देवताओमें अवधिज्ञान है उसे अभ्यान्तर
ज्ञान कहते है कारण वह परभवसे आते है तब ज्ञान साथमें ले
के आते है। तीर्यचको बाह्य ज्ञान. अर्थात् वह उत्पन्न होनेके बाद
क्षोपशम भावसे ज्ञान होता है। मनुष्यमें दोनो प्रकारसे ज्ञान
होता है अभ्यान्तर ज्ञान और बाह्यज्ञान।

(५) नारकि देवता और तीर्यच पांचेन्द्रियके ज्ञान है वह
देशसे होता है (मर्यादा सयुक्त) और मनुष्य के देश और सर्व
दोनो प्रकारसे होता है

(६) नारकि देवताओंके ज्ञान है सो अवस्थीत है कारण यह भवप्रत्य ज्ञान है और मनुष्य तीर्यंचके ज्ञान तीनो प्रकारका है हियमान वृद्धमान और अवस्थीत।

(७) नारकि देवताओंके अवधिज्ञान अनुगामि है याने जहां जाते है वहां साथमें चलता है और मनुष्य तीर्यंचमें अनुगामि अनानुगामि दोनो प्रकारसे होता है।

(८) नारकि देवताओंके अवधिज्ञान अप्रतिपाति है कारण वह भवप्रत्य होता है और तीर्यंच पांचेन्द्रियमें प्रतिपाति है मनुष्यके दोनो प्रकारका होता है प्रतिपाति अप्रतिपाति कारण मनुष्यमें केवलज्ञान भी होता है परम अवधिज्ञान भी होता है इति

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकडा नम्बर ६८

सूत्रश्री भगवतीजी शतक ८ उ० २ पांच ज्ञानकि लब्धि।

द्वारोंके नाम जीव, गति, इन्द्रिय, काय, सूक्षम, पर्याप्ति, भवार्थी, भवसिद्धि, संज्ञी, लब्धि, ज्ञान, योग, उपयोग, लेश्या, कषाय, वेद, आहार, नाण, काल, अन्तर. अल्पाबहुत्व, ज्ञानपांच, मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, या अज्ञान तीन मतिअज्ञान, श्रुतिअज्ञान, विभंगज्ञान, जहां भजना. भ हो वहा भजना, स्यात हो स्यात न भी हो स्यात् कम भी हो. जहा नि-नियम. निश्चय कर होता ही है।

संख्या.	मार्गणा.	पांच ज्ञानसे.	तीनाज्ञानसे.
१	समुच्चय जीवमें	५ भजना	३ भजना
२	पहली नरक १० भुवनपति व्यन्तरमें	३ नियमा	३ भजना
३	छे नरक ज्योतिषी १२ देवलोक नौग्रीवैक	३ नियमा	३ नियमा
४	पांचानुत्तर वैमानमें	३ नियमा	० ० ०
५	पांच स्थावर असंज्ञी मनुष्यमें	० ० ०	२ नियमा
६	तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यंचमे	२ नियमा	२ नियमा
७	संज्ञी तीर्यंच पांचेन्द्रियमें	३ भजना	३ भजना
८	संज्ञी मनुष्यमे	५ भजना	३ भजना
९	श्री सिद्ध भगवानमें	१ नियमा	० ० ०
१०	नरकगतिऔर देवगतियोमें	३ नियमा	३ भजना
११	तीर्यंचगतियोमें	२ नियमा	२ नियमा
१२	मनुष्य गतियोमें	३ भजना	२ नियमा
१३	सिद्धगतियोंमें	१ नियमा	० ० ०
१४	सेन्द्रिय पांचेन्द्रियमें	४ भजना	३ भजना
१५	तीन वैकलेन्द्रियमें	२ नियमा	२ नियमा
१६	एकेन्द्रियमें	० ० ०	२ नियमा
१७	अनेन्द्रियमें	१ नियमा	० ० ०

१८	सकाय त्रसकायमें	५ भजना	३ भजना
१९	पांच स्थावर कायमें	० ० ०	२ नियमा
२०	अकायमें	१ नियमा	० ० ०
२१	सूक्ष्ममें	० ० ०	२ नियमा
२२	बादरमे	५ भजना	३ भजना
२३	नोसूक्ष्मनो बादरमे	१ नियमा	० ० ०
२४	प्रथम नरक १० भुवन० व्यन्तरके अपर्याप्ता	३ नियमा	३ भजना
२५	पांच नरक २१ देवलोक ज्योतिषीयोके अपर्याप्ता.	३ नियमा	३ नियमा
२६	पांचानुत्तर वैमानके अपर्याप्तामें	३ नियमा	० ० ०
२७	सातवी नरकके अपर्याप्तामें	० ० ०	३ नियमा
२८	पांच स्थावर असज्ञी मनु० अपर्या०	० ० ०	२ नियमा
२९	तीन वैकले० असज्ञी तीर्यच अपर्याप्ता	२ नियमा	२ नियमा
३०	संज्ञी तीर्यचके अपर्याप्ता	२ नियमा	२ नियमा
३१	सज्ञी मनुष्यके अपर्याप्ता	३ भजना	२ नियमा
३२	नरकसे नौग्रीवैगके पर्याप्तामें	३ नियमा	३ नियमा
३३	पांचानुत्तर वैमानके पर्याप्तामें	३ नियमा	० ० ०
३४	पांच स्थावर तीन वैकलेन्द्रिय असंज्ञी तीर्यच असंज्ञी मनुष्यके पर्याप्तामें	० ० ०	२ नियमा
३५	सज्ञी तीर्यचके पर्याप्तामें	३ भजना	३ भजना

क्रम	स्थान			ज्ञान	अज्ञान
३६	मंज्ञी मनुष्यके पर्याप्तामें			५ भजना	३ भजना
३७	नोपर्याप्ता नोअपर्याप्तामें			१ नियमा	० ० ०
३८	नरक और देव भवत्थामें	भवमें रहे हुवे कों		३ नियमा	३ भजना
३९	तीर्यंच भवत्थामें			३ भजना	३ भजना
४०	मनुष्य भवत्थामें			५ भजना	३ भजना
४१	अभवत्थामें			१ नियमा	० ० ०
४२	भवसिद्धि जीवोंमें	० ० ०	० ० ०	५ भजना	३ भजना
४३	अभवसिद्धिमें	० ० ०	० ० ०	० ० ०	३ भजना
४४	नोभव्य नोअभव्यमें			१ नियमा	० ० ०
४५	मंज्ञी जीवोंमें			४ भजना	३ भजना
४६	असज्ञी जीवोंमें			२ नियमा	२ नियमा
४७	नोसंज्ञी नोअसंज्ञी			१ नियमा	० ० ०
४८	ज्ञानलब्धियोंमें			५ भजना	० ० ०
४९	ज्ञानके अलब्धियोंमें			० ० ०	३ भजना
५०	मतिश्रुति ज्ञानके लब्धियोंमें			४ भजना	० ० ०
५१	तस्स अलब्धियोंमें			१ नियमा	३ नियमा
५२	अवधि० मनः पर्यवज्ञानलब्धियोंमें			४ भजना	० ० ०
५३	तस्स अलब्धियोंमें			४ भजना	३ भजना
५४	केवलज्ञानके लब्धियोंमें			१ नियमा	० ० ०

५५	तस्स अलद्धियोमें	४ भजना	३ भजना
५६	मतिश्रु ते अज्ञानके लद्धियोमें	० ० ०	३ भजना
५७	तस्स अलद्धियोमें	५ भजना	३ भजना
५८	विभंग ज्ञानके ल।द्धयामें	० ० ०	३ नियम
५९	तस्स अलद्धियामें	५ भजना	२ नियमा
६०	दर्शनके लद्धियामें	५ भजना	३ भजना
६१	सम्यग्दर्शनके लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
६२	तस्स अलद्धियामें	० ० ०	३ भजना
६३	मिथ्या-मिश्रदर्शन लद्धियामें	० ० ०	३ भजना
६४	तस्सलद्धियामे	५ भजना	३ भजना
६५	चारित्र लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
६६	तस्स अलद्धियामें	४ भजना	३ भजना
६७	सा० छ० प० सू० चारित्र लद्धियोमें	४ भजना	० ० ०
६८	तस्स अलद्धियामें	४ भजना	३ भजना
६९	यथाख्यात चा० लद्धियामें	५ भजना	० ० ०
७०	तस्सालद्धियामें	४ भजना	३ भजना
७१	चारित्रा चारित्रके ल० में	३ भजना	० ० ०
७२	तस्स अलद्धियामें	५ भजना	३ भजना

७३	दानालब्धि लाभ॰ भोग. उपभोग. वीर्य लब्धि के लब्धियामें ० ० ०	० ० ०	५ भजना	३ भजना
७४	तस्मालब्धियामें		१ नियमा	० ० ०
७५	बाललब्धिके लब्धियामें		३ भजना	३ भजना
७६	तस्स अलब्धियामें		५ भजना	० ० ०
७७	पंडित लब्धिके लब्धियामें		५ भजना	० ० ०
७८	तस्स अलब्धियामें		४ भजना	भजना
७९	बाल पंडित ल० ल० में		३ भजना	० ० ०
८०	तस्स अलब्धियामें		५ भजना	३ भजना
८१	सेन्द्रिय. स्पर्शेन्द्रियके लब्धियामें		४ भजना	३ भजना
८२	तस्मालब्धियामें		१ नियमा	० ० ०
८३	श्रोत्रेन्द्रिय० चक्षु० घ्राणेन्द्रिय ल० में		४ भजना	३ भजना
८४	तस्मालब्धियामें		३ नियमा	२ नियमा
८५	रसेन्द्रियके लब्धियामें		४ भजना	३ भजना
८६	तस्मालब्धियामें		१ नियमा	२ नियमा
८७	मत्यादि च्यार ज्ञानमें		४ भजना	० ० ०
८८	केवलज्ञानमें		१ नियमा	० ० ०
८९	चक्षु अचक्षुदर्शमें		४ भजना	३ भजना
९०	अवधि दर्शनमें		३ भजना	३ नियमा

९१	केवलदर्शनमें	१ नियमा	० ० ०
९२	सयोगी. मन वचन काययोगमें	५ भजना	३ भजना
९३	अयोगिमें	१ नियमा	० ० ०
९४	साकार मणाकरोपयोगमें	५ भजना	३ भजना
९५	सलेशी शुक्लेशीमें	५ भजना	३ भजना
९६	कृष्णादि पांच लेश्यामें	४ भजना	३ भजना
९७	अलेशीमें	१ नियमा	० ० ०
९८	सकषायि. क्रोधमानमायालोभमें	४ भजना	३ भजना
९९	अकषायिमें	५ भजना	० ० ०
१००	सवेद. स्त्रि. पुरुष. नपुंसकवेदमें	४ भजना	३ भजना
१०१	अवेदीमें	५ भजना	० ० ०
१०२	आहारीक जीवोमें	५ भजना	३ भजना
१०३	अनाहारीक जीवोमें	४ भजना	३ भजना

पाचों ज्ञानकि विषय थोकडा नं. ६४-६५-६६ में लिखी गइ है तीन अज्ञानकि विषय संक्षेपसे यहां लिखी जाति है. मति अज्ञानके च्यार भेद है द्रव्यसे परिग्रहीत द्रव्यको जाने. क्षेत्रसे परिग्रहित क्षेत्रको जाने. कालसे परिग्रहित कालको जाने, भावसे परिग्रहित भावको जाने. श्रुति अज्ञानके भी इसी माफीक च्यार भेद है परन्तु यहां सामान्य विशेष रूपमे प्ररुपणा करे. एवं विभंगज्ञानकेभी च्यार भेद है परन्तु परिग्रहितद्रव्यादिको सामान्य विशेष रूपमे जाने ओर देखे (इति)

कालद्वार—सज्ञानिके दो भेद है. सादि सान्त. प्रथम गुण-स्थान त्यागसे ज्ञानकि सादि है और ग्यारवे गुणस्थानादिसे पुनः प्रथम गुणस्थान जाना ज्ञानका अन्त है। मतिज्ञान श्रुतिज्ञानकि स्थिति जघन्य अन्तरमुहुर्त्त उ० छासट (६६) सागरोपम साधिक एवं अवधिज्ञान परन्तु जघन्य एक समयका कालभी है. मनःपर्यव ज्ञान. ज० एक समय. उ० देशोनपूर्वकोड. केवलज्ञानकि स्थिति नही है किन्तु सादि अनन्त है. मतिअज्ञान श्रुति अज्ञानके तीन भेद है अनादि अनन्त.=अभव्यापेक्षा, अनादि सान्त, भव्यापेक्षा सादि सान्तकि स्थिति ज० अन्तरमहुर्त उ० देशोन अर्धपुद्गल. विभंगज्ञान. ज० एक समय उ० तेतीस सागरोपम देशोन पूर्व कोड अधिक।

अन्तरद्वार—सज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतिज्ञानी अवधिज्ञानी मन पर्यवज्ञानीका अन्तर पडे तो ज० अन्तर मुहुर्त्त उ० देशोन आदापुद्गल. केवलज्ञानका अन्तर नही है मतिअज्ञान श्रुतिअज्ञान सादी सान्तका अन्तर ज० अन्तर मुहूर्त्त उ० छासट सागरोपम साधिक. विभंगज्ञानका अन्तर ज० एक समय उ० अनंतकाल यावत् देशोन आधापुद्गलपरावर्तन।

अल्पाबहुत्वद्वार=सर्व स्तोक मन पर्यवज्ञानी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणे, मतिज्ञानी श्रुतिज्ञानी आपसमे तूल्य और विशेषाधिक. केवलज्ञानी अनंतगुण सज्ञानीविशेषाधिक सर्वस्तोक विभंगज्ञानी, मतिअज्ञानी श्रुतिअज्ञानी आपसमे तुल्य अनंतगुण समुच्चयअज्ञानि विशेषाधिक।

ज्ञानपर्यवकि अल्पाबहुत्व सर्वस्तोक मनःपर्यव ज्ञानके पर्यव अवधिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. श्रुतिज्ञानके पर्यव अनन्त गुणे मतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. केवलज्ञानके पर्यव अनंतगुणे ॥ सर्वस्तोक विभगज्ञानके पर्यव. श्रुतिअज्ञानके पर्यव अनंतगुणे मतिज्ञानके पर्यव

अनंतगुणे । दोनो सामिल ॥ सर्वस्तोक मनःपर्यव ज्ञानके पर्यव. विभंगज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. अवधिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. श्रुतिअज्ञानके पर्यव अनंतगुने. श्रुतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. मति अज्ञानके पर्यव अनंतगुणे. मतिज्ञानके पर्यव अनंतगुणे., केवल ज्ञानके पर्यव अनंतगुणे ॥ इतिशम् ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्.

इति श्री शीघ्रबोध भाग ६ ठा समाप्तम्

अथश्री

शीघ्रबोध भाग ७ वां.

थोकडा नम्बर ६६

इस थोकडे में जीवों के प्रश्न लिखे जाते है जीसको पढनेसे तर्कशक्ति बहुत बढ जाति है अनेक आगमोंका सूक्ष्मज्ञान कि भी प्राप्ती होती है स्याद्वाद रहस्यका भी ज्ञान हो जाता है और संसार समुद्रमें अनेक प्रकारकि आपतियोंसे सहज ही से मुक्त हो जाता है वुद्धिबल इतना तो जोरदार हो जाता है कि इस थोकडेकों उपयोग पूर्वक कण्ठस्थ करलेनेके बाद कैसा ही प्रश्न क्यों न हो वह फौरन् ही समझमे आजायगा ओर स्याद्वादसे उस्का उत्तर भी वह ठीक तोरसे दे सकेगा वास्ते आप इस थोकडेको कण्ठस्थ कर अनुभव रसका आन्नद लिजिये। शम्

जीवोंके भेद.	कोनसे कोनसे स्थानपर मिलते हैं उनोंके नाम कि मार्गणा निचे मुजब है.	नरकके भेद. १४	तीर्यंचके भेद. ४८	मनुष्यके भेद. ३०३	देवतोंके भेद. १९८
१	अधोलोकके केवलीमे	०	०	१	०
२	निश्चय एकावतारीमे	०	०	०	२
३	तेजोलेशी एकेन्द्रियमे	०	३	०	०

४	पृथ्वीकायमे	०	४	०	०
५	मिश्रदृष्टि तिर्यचमें	०	५	०	०
६	उर्ध्वलोककि देवीमें	०	०	०	६
७	नरकके पर्याप्तामे	७	०	०	०
८	दोयोगवाले तीर्यचमे	०	८	०	०
९	उर्ध्वलोक नोगर्भज तेजोलेशीमे	०	३	०	६
१०	एकान्त सम्यगदृष्टिमे	०	०	०	१०
११	वचनयोगी चक्षुइन्द्रियनीर्यचमे	०	११	०	०
१२	अधोलोकके गर्भजमें	०	१०	२	०
१३	वचनयोग तीर्यचमे	०	१३	०	०
१४	अधोलोक वचनयोगी औदारीकश०	०	१३	१	०
१५	केवलीमें	०	०	१५	०
१६	उर्ध्वलोक पाचेन्द्रियतेजोलेशीमे	०	१०	०	६
१७	सम्यगदृष्टि घ्राणेन्द्रियनीर्यचमे	०	१७	०	०
१८	सम्यगदृष्टि तीर्यचमें	०	१८	०	०
१९	उर्ध्वलोकके तेजोलेशीमें	०	१३	०	६
२०	मिश्रदृष्टिगर्भजमें	०	५	१५	०
२१	औदारीकमें वैकियकरनेवालोमें	०	६	१५	०
२२	एकेन्द्रियजीवोमें	०	२२	०	०
२३	अधोलोकके मिश्रदृष्टिमें	७	५	१	१०

२४	घ्राणेन्द्रिय तीर्यचमे	०	२४	०	०
२५	अधोकवचन योगीदेवोंमे	०	०	०	२५
२६	त्रसतीर्यचमे	०	२६	०	०
२७	शुक्लेशी मिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	७
२८	तीर्यच एक संहननवालोमे	०	२८	०	०
२९	अधोलोक त्रस औदारीकमे	०	२६	३	०
३०	एकान्तमिथ्यात्वी तीर्यचमे	०	३०	०	०
३१	अधोलोक पुरुषवेद भापकमे	०	५	१	२५
३२	पद्मलेशीमिश्र दृष्टिमे	०	५	१५	१२
३३	पद्मलेशी वचन योगीमे	०	५	१५	१३
३४	उर्ध्वलोकके एकान्तमिथ्यात्वीमे	०	२८	०	६
३५	अवधिदर्शन औदारीक श० मे	०	५	३०	०
३६	उर्ध्वलोक एकान्त नपुंसकमे	०	३६	०	०
३७	अधोलोक पाचेन्द्रिय नपुंसकमे	१४	२०	३	०
३८	अधोलोकके मनयोगीमें	७	५	१	२५
३९	अधोलोक एकान्त असंज्ञीमे	०	३८	१	०
४०	औदारीक शुक्लेशीमें	०	१०	३०	०
४१	शुक्लेशी सम्यग्द्रष्टि अभापक	०	५	१५	२१
४२	शुक्लेशी वचनयोगीमें	०	५	१५	२२
४३	उर्ध्वलोकके मनयोगीमें	०	५	०	३८

४४	शुक्लेशी देवताओमें	०	०	०	४४
४५	कर्मभूमि मनुष्योंमें	०	०	४५	०
४६	अधोलोकके वचन योगीमें	७	१३	१	२५
४७	उर्ध्वलोकके शुक्लेशी अवधिज्ञान	०	५	०	४२
४८	अधोलोक त्रसअभापक	७	१३	३	२५
४९	उर्ध्वलोक शुक्लेशी अवधिदर्शन	०	५	०	४४
५०	ज्योतिपीयोकि अगतिमें	०	५	४५	०
५१	अधोलोकके औदारीकमें में	०	४८	३	०
५२	उर्ध्वलोक शुक्ल० सम्यग्द्रष्टिमें	०	१०	०	४२
५३	अधोलोक एकान्त नपुंसक वेदमे	१४	३८	१	०
५४	उर्ध्वलोक शुक्लेशीमे	०	१०	०	४४
५५	अधोलोक बादर नपुंसकमे	१४	३८	३	०
५६	तीर्यग्लोक मिश्रदृष्टिमें	०	५	१५	३६
५७	अधोलोक पर्याप्तामें	७	२४	१	२५
५८	अधोलोक अपर्याप्तामें	७	२४	२	२५
५९	कृष्णलेशी मिश्रदृष्टिमें	३	५	१५	३६
६०	अकर्मभूमिमंज्ञीमें	०	०	६०	०
६१	उर्ध्वलोक अनाहारीमें	०	२३	०	३८
६२	अधोलोक एकान्त मिथ्यात्वीमें	१	३०	१	३०
६३	अधो० उर्ध्वलोकके देवामरमें	०	०	०	६३

६४	पद्मलेशी सम्यग्द्रष्टिमे	०	१०	३०	२४
६५	अधोलोग तेजोलेश्यामे	०	१३	२	५०
६६	पद्मलेशीमे	०	१०	३०	२६
६७	मिश्रदृष्टि देवतोमे	०	०	०	६७
६८	तेजोलेशीमिश्रादृष्टिमे	०	५	१५	४८
६९	उर्ध्वलोक बादरसास्वतोमे	०	३१	०	३८
७०	अधोलोकके अभाषकमे	७	३५	३	२५
७१	अधोलोक अवधिदर्शनमे	१४	५	२	५०
७२	तीर्यग्लोकके देवताओमे	०	०	०	७२
७३	अधोलोकके बादरमरणेवालोमे	७	३८	३	२५
७४	मिश्रादृष्टिनोगर्भजमे	७	०	०	६७
७५	उर्ध्वलोकके अवधिज्ञानमे	०	५	०	७०
७६	उर्ध्वलोकके देवताओमे	०	०	०	७६
७७	अधो० चक्षुइन्द्रियनोगर्भजमे	१४	१२	१	५०
७८	उर्ध्व० नोगर्भज सम्यग्द्रष्टिमे	०	८	०	७०
७९	उर्ध्वलोकके सास्वतोमे	०	४१	०	३८
८०	धातकिखण्डका त्रसमे	०	२६	५४	०
८१	सम्यग्द्रष्टि देवतोके पर्याप्तामे	०	०	०	८१
८२	शुक्लेशी सम्यग्द्रष्टिमे	०	१०	३०	४२
८३	अधोलोक मरणेवालोमे	७	४८	३	२९

८४	शुक्लेशी जीवोंमें	०	१०	३०	४४
८५	अधो० कृष्णलेशीत्रसमें	६	२६	३	९०
८६	उर्ध्वलोकके पुरुषवेदमें	०	१०	०	७६
८७	उर्ध्वलोक घ्राणेन्द्रियसम्यग्द्रष्टिमे	०	१७	०	७०
८८	उर्ध्व० सम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	०	७०
८९	अधो० चक्षुइन्द्रियमें	१४	२२	३	९०
९०	मनुष्य सम्यग्द्रष्टिमें	०	०	९०	०
९१	अधोलोकके घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३	९०
९२	उर्ध्व० त्रसमिथ्यात्वीमें	०	२६	०	६६
९३	अधोलोकके त्रसमे	१४	२६	३	९०
९४	देवना मिथ्यात्वीपर्याप्तामें	०	०	०	९४
९५	नोगर्भजाभापक सम्यग्द्रष्टिमें	६	८	०	८१
९६	उर्ध्वलोकके पाचेन्द्रियमें	०	२०	०	७६
९७	अधो० कृष्णलेशीबादरमे	६	३८	३	९०
९८	धातकीखंडके प्रत्येक शरीरमें	०	४४	५४	०
९९	वचनयोगीदेवनाओंमें	०	०	०	९९
१००	उर्ध्व० प्र० शरीरीबादरमिथ्यात्वी	०	३४	०	६६

थोकडा नंबर ७०

१०१	वचनयोगीमनुष्यमे	०	०	१०१	०
१०२	उर्ध्वलोककेत्रसमे	०	२६	०	७६
१०३	अधोलोककेनोगर्भेजमे	१४	३८	१	९०
१०४	एकान्त मिथ्या० सास्वतोंमे	०	३०	९६	१८
१०५	अधो० के बादमे	१४	३८	३	९०
१०६	मनयोगी गर्भेजमे	०	५	१०१	०
१०७	अधोलोकके कृष्णलेशीमे	६	४८	३	९०
१०८	औदारीक श० सम्यग्द्रष्टिमे	०	१८	६०	०
१०९	कृष्ण० वैक्रिय० नोगर्भेजमे	६	१	०	१०२
११०	उर्ध्वलोक बादर प्र० शरीरमे	०	३४	०	७६
१११	अधो० के प्रत्येक शरीरमे	१४	४४	३	९०
११२	उर्ध्वलोकके मिथ्यात्वीमे	०	४६	०	६६
११३	वचनयोगीघ्राणेन्द्रियऔदारीकमे	०	१२	१०१	०
११४	औदारी० वचनयोगीमे	०	१३	१०१	०
११५	अधोलोकमे	१४	४८	३	९०
११६	मनुष्यापर्याप्ता मरनेवालोंमे	०	०	११६	०
११७	क्रियावादीसमोसरण अमरमे	६	०	३०	८१
११८	उर्ध्वलोक प्रत्येक शरीरमे	०	४२	०	५६

११९	घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगसास्वतेमें	७	१२	१९	८१
१२०	एकान्त असंज्ञी अपर्याप्तामें	०	१९	१०९	०
१२१	विभंगज्ञान मरनेवालोमें	७	५	१५	९४
१२२	कृष्णलेशीवैक्रय० त्रिवेदमें	०	५	१५	१०२
१२३	तीनशरीरीऔदारीक सास्वनोमें	०	३७	८६	०
१२४	लवणसमुद्रके घ्राणेन्द्रियसास्वनोमें	०	१२	११२	०
१२५	लवणसमु० के तेजोलेशीमें	०	१३	११२	०
१२६	मरणेवाले गर्भेज जीवोमें	०	१०	११६	०
१२७	वैक्रयशरीर मरनेवालोमें	७	६	१५	९९
१२८	देवीमें	०	०	०	१२८
१२९	एकान्त असंज्ञी बादरमें	०	२८	१०१	०
१३०	लवणसमु० असमिश्रयोगीमें	०	१८	११२	०
१३१	मनुष्य नपुंसकवेदमें	०	०	१३१	०
१३२	सास्वना मिश्रयोगीमे	७	२५	१५	८५
१३३	मनयोगी सम्यग्द्रष्टि असं भववालोमें	७	५	४५	७६
१३४	बादर औदारीक सास्वनोमें	०	३३	१०१	०
१३५	प्र० शरीरी एकान्त असंज्ञीमें	०	३४	१०१	०
१३६	तीनवेदी औदारीशरीरमें	०	३५	१०१	०
१३७	क्रियावादी असास्वनोमें	६	५	४५	८१
१३८	मनयोगी सम्यग्द्रष्टिमें	७	५	४५	८१

१३९	औदारीकनोगर्भजमें	०	३८	१०१	०
१४०	कृष्णलेशी अमरमे	३	०	८६	५१
१४१	अवधिदर्शन मरनेवालोमें	७	५	३०	९९
१४२	पांचेन्द्रिय सम्यक्० मरनेवालोमें	६	१०	४५	८१
१४३	एकान्तनपुंसक बादरमे	१४	२८	१०१	०
१४४	नोगर्भज सास्वतामें	७	३८	०	९९
१४५	अपर्याप्ता सम्यग्द्रष्टिमे	६	१३	४५	८१
१४६	त्रसनोगर्भज एकान्तमिथ्या० में	१	८	१०१	३६
१४७	लवणसमुद्रके अभापकमें	०	३५	११२	०
१४८	स्त्रिवेद वैक्रियशरीरमें	०	५	१५	१२८
१४९	संज्ञी एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	०	११२	३६
१५०	तीर्यग्लोकके वचनयोगीमें	०	१३	१०१	३६
१५१	तीर्यग्लोग पाचेन्द्रियनपुंसकमें	०	२०	१३१	०
१५२	तीर्यग्लोगपाचेन्द्रिबसास्वतोमें	०	१५	१०१	३६
१५३	एकान्त नपुंसक वेदमे	१४	३८	१०१	०
१५४	तेजोलेशीवचनयोगी सम्यक्० मे	०	५	१०१	४८
१५५	तीर्यक् प्र० शरीरीबादरपर्याप्तामें	०	१८	१०१	३६
१५६	तीर्यक्बादर पर्याप्तामे	०	१९	१०१	३६
१५७	मनुष्य एकान्तमिथ्यात्वी अपर्याप्तामे	०	०	१५७	०
१५८	नोगर्भज एकान्तमिथ्याबादर में	१	२०	१०१	३६

१७६	तीर्य० समु० नपुसकवेदमे	०	४८	१३१	०
१८०	तीर्य० सम्यक्द्रष्टिमे	०	१८	६०	७२
१८१	नोगर्भज चक्षु० सम्यग्द्रष्टिमे	१३	६	०	१६२
१८२	नो० घ्राणेन्द्रिय सम्यग्द्रष्टिमे	१३	७	०	१६२
१८३	नो० सम्यग्द्रष्टिमे	१३	८	०	१६२
१८४	मिश्रयोगी देवता वैक्रियमे	०	०	०	१८४
१८५	कृष्णलेशी सम्यग्द्रष्टिमे	५	१८	६०	७२
१८६	निललेशी सम्यग्द्रष्टिमे	६	१८	६०	७२
१८७	अभापकमनुष्य एकसंस्थानीमे	०	०	१८७	०
१८८	विभंगज्ञानी देवताओमे	०	०	०	१८८
१८९	तीर्य० नोगर्भज त्रसमे	०	१६	१०१	७२
१९०	लवणसमुद्रके चक्षुइन्द्रियमे	०	२२	१६८	०
१९१	तीर्यक्० कृष्णलेशीनोगर्भजमे	०	३८	१०१	५२
१९२	लवण० घ्राणेन्द्रियमे	०	२४	१६८	०
१९३	समुच्चयनपुसकमें	१४	४८	१३१	०
१९४	लवण० त्रसजीवोमे	०	२६	१६८	०
१९५	सम्यग्द्रष्टि वैक्रियशरीरमे	१३	५	१५	१६२
१९६	तेजोलेशी सम्यग्द्रष्टिमे	०	१०	६०	६६
१९७	एकवेदीचक्षुइन्द्रियमे	१४	१२	१०१	७०
१९८	एकान्तमिथ्यात्वी अभापकमे	१	२२	१५७	१८

१५६	तीर्यक्० प्र० शरीरीपर्याप्तामें	०	२२	१०१	३६
१६०	ती० कृष्णलेशीसम्यग्द्रष्टिमें	०	१८	६०	५२
१६१	ती० के पर्याप्तामे	०	२४	१०१	३६
१६२	देवतासम्यग्द्रष्टियोंमे	०	०	०	१६२
१६३	स्त्रिवेद अवधिदर्शनमें	०	५	३०	१२८
१६४	प्र० शरीरीनोगर्भेज एकान्तमिथ्या०	१	२६	१०१	३६
१६५	पांचेन्द्रिय नपुंसकवेदमे	१४	२०	१३१	०
१६६	अभापक मरनेवालोमे	०	३५	१३१	०
१६७	कृष्णलेशी घ्राणेन्द्रिय वचनयोगी	३	१२	१०१	५१
१६८	कृष्णलेशी वचनयोगीमें	३	१३	१०१	५१
१६६	ती० नोगर्भेजकृष्णलेशी त्रसमे	०	१६	१०१	५२
१७०	तेजोलेशीवचनयोगीमे	०	५	१०१	६४
१७१	नो० कृ० त्रसमरनेवालोंमे	३	१६	१०१	५१
१७२	कृष्णलेशीस्त्रिवेद सम्यक्०	०	१०	६०	७२
१७३	तेजोलेशीअभापकमें	०	८	१०१	६४
१७४	नोगर्भेजकृष्णले० अपर्याप्तामे	३	१६	१०१	५१
१७५	औदारीक शरीर कृष्णलेशीमें	०	३	१७२	०
१७६	स्त्र० त्रस एकान्तमिथ्यात्वीमे	०	८	१६८	०
१७७	तीर्य० पांचेन्द्रियसम्यग्द्रष्टिमें	०	१५	६०	७२
१७८	तीर्य० चक्षुइन्द्रिय सम्यग्द्रष्टिमें	०	१६	६०	७२

२१७	वचनयोगी पाचेन्द्रियमे	७	१०	१०१	६६
२१८	त्रस वैक्रय मिश्रमे	१४	९	१९	१८४
२१९	वैक्रय मिश्रमे	१४	६	१९	१८४
२२०	वचनयोगीमे	७	१३	१०१	६६
२२१	अचरम बादर पर्याप्तामे	७	१९	१०१	६४
२२२	पाचेन्द्रिय सास्वतोंमे	७	१९	१०१	६६
२२३	वैक्रय मिथ्यात्वीमे	१४	६	१९	१८८
२२४	चक्षुइन्द्रिय सास्वतोंमे	७	१७	१०१	९९
२२५	प्र० शरीरी बादरपर्याप्तामे	७	१८	१०१	९९
२२६	औदारीक अपर्याप्तामे	०	२४	२०२	०
२२७	नोगर्भेज बादर अभाषकमे	७	२०	१०१	९९
२२८	त्रस सास्वतोंमे	७	२१	१०१	९९
२२९	प्र० शरीरी पर्याप्तामे	७	२२	१०१	९९
२३०	त्रसौदारीक अभाषकमे	०	१३	२१७	०
२३१	पर्याप्ताजीवोंमे	७	२४	१०१	९९
२३२	पाचेन्द्रि औदारीमिश्रमे	०	१९	२१७	०
२३३	वैक्रय शरीरमे	१४	६	१९	१९८
२३४	औदारीक मिश्रयोगी त्रसेन्द्रियमे	०	१७	२१७	०
२३५	औदारीक मिश्रयोगी त्रसमे	०	१८	२१७	०
२३६	मनुष्यादि आगतिमे नोगर्भेजमे	३	३०	१०१	९९

१९९	नोगर्भजवैक्रयमिश्रयोगीमें	१४	१	०	१८४
२००	वचनयोगीतीनशरीरीमें	७	८	८६	९९

थोकडा नम्बर ७१.

२०१	एकवेदी त्रसजीवोंमें	१४	१६	१०१	७०
२०२	नोगर्भज विभंगज्ञानीमें	१४	०	०	१८८
२०३	नो० वैक्रय मिथ्यात्वीमें	१४	१	०	१८८
२०४	एकान्त मिथ्या० तीनशरीरीमें	०	२९	१९७	१८
२०५	एकान्त मिथ्या० मरनेवालोंमें	०	३०	१९७	१८
२०६	लवगा समुद्रके बाहरमे	०	३८	१६८	०
२०७	मनयोगी मिथ्यात्वीमें	७	९	१०१	६४
२०८	नगा भववाले अवधिज्ञानमें	१३	९	३०	१६०
२०९	समु० संख्यातकालके त्रसमरनेवाले	१	२६	१३१	५१
२१०	एकान्तसंज्ञी मिश्रयोगीमें	१३	५	४९	१४७
२११	तिर्यक्लोगके नोगर्भजमें	०	३८	१०१	७२
२१२	मनयोगी जीवोंमें	७	५	१०१	८८
२१३	एकान्त मिथ्यात्वी मनुष्यमें	०	०	२१३	०
२१४	मिथ्यात्वी वैक्रय मिश्रमें	१४	६	१५	१७६
२१५	ओदारीक नजोगीमें	०	१३	२०२	०
२१६	लवणसमुद्रमें	०	४८	१६८	०

२१७	वचनयोगी पाचेन्द्रियमे	७	१०	१०१	६६
२१८	त्रस वैक्रय मिश्रमे	१४	९	१९	१८४
२१९	वैक्रय मिश्रमे	१४	६	१९	१८४
२२०	वचनयोगीमे	७	१३	१०१	६६
२२१	अचरम बादर पर्याप्तामे	७	१९	१०१	६४
२२२	पाचेन्द्रिय साम्वतोंमे	७	१५	१०१	६६
२२३	वैक्रय मिथ्यात्वीमे	१४	६	१९	१८८
२२४	चक्षुइन्द्रिय साम्वतोंमे	७	१७	१०१	९९
२२५	प्र० शरीरी बादरपर्याप्तामे	७	१८	१०१	९९
२२६	औदारीक अपर्याप्तामे	०	२४	२०२	०
२२७	नोगर्भज बादर अभाषकमे	७	२०	१०१	९९
२२८	त्रस साम्वतोमे	७	२१	१०१	९९
२२९	प्र० शरीरी पर्याप्तामे	७	२२	१०१	९९
२३०	त्रऔदारीक अभाषकमे	०	१३	२१७	०
२३१	पर्याप्ताजीवोमे	७	२४	१०१	९९
२३२	पाचेन्द्रि औदारीमिश्रमे	०	१५	२१७	०
२३३	वैक्रय शरीरमे	१४	६	१९	१९८
२३४	औदारिक मिश्रयोगी त्रागेन्द्रियमे	०	१७	२१७	०
२३५	औदारीक मिश्रयोगी त्रसमे	०	१८	२१७	०
२३६	मनुष्यकि आगतिमें नोगर्भजमे	३	२०	१०१	९९

२३७	औदारीक पांचेन्द्रिय मरनेवालोमे	०	३०	२१७	०
२३८	प्र० शरीरी बादर सास्वतोंमें	७	३१	१०१	९९
२३९	सम्यग्द्रष्टि मिश्रयोगीमें	१३	१८	६०	१४८
२४०	सास्वते बादरमे	७	३३	१०१	९९
२४१	प्र० शरीरी नोगर्भेज मरनेवालोमे	७	३४	१०१	९९
२४२	बादरौदारिक मिश्रयोगीमें	०	२५	२१७	०
२४३	औदारीक एकान्त मिथ्यात्वीमे	०	३०	२१३	०
२४४	तीनशरीरी नोगर्भेज मरनेवालोमे	७	३७	१०१	९९
२४५	समु० असंज्ञी त्रसमे	१	२१	१७२	५१
२४६	प्र० शरीरी सास्वतोंमे	७	३९	१०१	९९
२४७	अवधिदर्शनमे	१४	५	३०	१९८
२४८	तीर्यक्० पांचेन्द्रिय अपर्याप्तामे	०	१०	२०२	३६
२४९	तीर्यक्० चक्षुइन्द्रियपर्याप्तामें	०	११	२०२	३६
२५०	भव्यसिद्धि सास्वतोंमें	७	४३	१०१	९९
२५१	तीर्यक्० त्रस अपर्याप्तामें	०	१३	२०२	३६
२५२	औदारीक० अभाषकमें	०	३५	२१७	०
२५३	मिश्रयोगी मरनेवालोंमें	७	३०	१३१	८५
२५४	स्त्रिवेद मिश्रयोगीमें	०	१०	११६	१९८
२५५	पांचेन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	५	२१३	३६
२५६	चक्षुइन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	६	२१३	३६

२५७	घ्राणेन्द्रिय एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	७	२१३	३६
२५८	त्रस एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	८	२१३	३६
२५९	धर्म देवकि आगतिके घ्राणेन्द्रियमे	५	२४	१३१	९९
२६०	पाचेन्द्रिय तीनशरीरी सम्यक्० मे	१३	१०	७५	१६२
२६१	कृष्णलेशी असास्वतोंमे	३	५	२०२	५१
२६२	पुरुषवेदी सम्यग्दृष्टिमे	०	१०	९०	१६२
२६३	प्र० शरीरी समुच्चय असंज्ञीमे	१	३९	१७२	५१
२६४	तीर्यक्० कृष्णलेशी त्रिवेदमे	०	१०	२०२	५२
२६५	औदारीक शरीर मरनेवालोंमे	०	४८	२१७	०
२६६	पाचेन्द्रिय कृष्ण० अनाहारीमे	३	१०	२०२	५१
२६७	चक्षुइन्द्रिय कृष्ण० अनाहारीमे	३	११	२०२	५१
२६८	एकदृष्टि त्रसकायमे	१	८	२१३	४६
२६९	तीर्यक्० कृष्ण त्रस मरनेवालोंमे	०	२६	२१७	२६
२७०	बादर एकान्तमिथ्यात्वीमे	१	२०	२१३	३६
२७१	मनुष्यकि आगतिके मिथ्यात्वीमे	६	४०	१३१	९४
२७२	मनुष्यकि आगतिके प्र० शरीरीमे	६	३६	१३१	९९
२७३	निललेशी एकान्तमिथ्यात्वीमे	०	२०	२१३	३०
२७४	कृष्णलेशी एकान्तमिथ्यात्वीमे	४	२०	२१३	३०
२७५	क्रियावादी समोसरणमे	१३	१०	९०	१६२
२७६	मनुष्यकि आगतिमे	६	४०	१३१	९९

२९६	एकान्त संज्ञीमे	१३	५	१३१	१४७
२९७	त्रस कृष्णालेशी मरनेवालोमे	३	२६	२१७	५१
२९८	पाचेन्द्रिअ पर्याप्ता एक संस्थानीमे	७	५	१८७	९९
२९९	चक्षुइन्द्रिअ पर्याप्ता एक संस्थानीमे	७	६	१८७	९९
३००	त्रिवेद एक संस्थानीमे	०	०	१७२	१२८

थोकडा नम्बर ७२.

३०१	एक सम्थानी औदारीक बादरमे	०	२८	२७३	०
३०२	घ्राणेन्द्रियेक सम्थानी अचर्म मरने०	७	१४	१८७	९४
३०३	मनुष्यमे	०	०	३०३	०
३०४	नोगर्भज पाचेन्द्रिय मिश्रयोगी	१४	५	१०१	१८४
३०५	सम्य० आगति कृष्णा० बादरमे	३	३४	२१७	५१
३०६	तीर्यक् घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगीमे	०	१७	२१७	७२
३०७	नीर्यक् त्रस मिश्रयोगीमे	०	१८	२१७	७२
३०८	असाम्वता मिथ्यात्वीमे	७	५	२०२	९४
३०९	सम्य० आगति एक सस्थानी त्रसमे	७	१६	१८७	९९
३१०	औदारीक तीनशरीरी एकसंस्थानीमे	०	३७	२७३	०
३११	औदारीक एक सस्थानीमे	०	३८	२७३	०
३१२	नोगर्भजकि आगति कृष्णा० तीन शरीरी	०	४३	२१७	५२

३१३	असास्वतोमे	७	९	२०२	६६
३१४	कृष्णालेशी स्त्रीवेदमे	०	१०	२०२	१०२
३१५	प्र० तीन शरीरी कृष्ण० मरनेवालोमें	३	४४	२१७	९१
३१६	त्रसानाहारी अचरममे	७	१३	२०२	९४
३१७	नोगर्भेज घ्राणेन्द्रिय मिथ्या०मे	१४	१४	१०१	१८८
३१८	श्रोतेन्द्रिय अपर्याप्तामे	७	१०	२०२	९९
३१९	कृष्णालेशी मरनेवालोमे	३	४८	२१७	९१
३२०	तीन शरीरी स्त्रीवेदमे	०	५	१८७	१२८
३२१	त्रस अपर्याप्तामे	७	१३	२०२	९९
३२२	बादरानाहारी अचरममे	७	१६	२०२	९४
३२३	नोगर्भेज पाचेन्द्रियमे	१४	१०	१०१	१९८
३२४	तीन शरीरी त्रस मिथ्या० मे	७	२[illegible]	२०२	९४
३२५	औदारीक चक्षुइन्द्रियमे	०	२२	३०३	०
३२६	मिथ्या० एक मरनेवाली मरनेवालोमे	७	३८	१८७	९४
३२७	नोगर्भेज घ्राणेन्द्रियमे	१४	१४	१०१	१९८
३२८	बादर अभाषक अचरममे	७	२५	२०२	६४
३२९	औदारीक त्रसमे	०	२६	३०३	०
३३०	औदारीक एकान्त भवस्थागणी देह	०	४२	२८८	०
३३१	नोगर्भेज बादर मिथ्या० मे	१४	२८	१०१	१८८
२	त्रस एकान्त सम्याकाल्किस्थिति- वालोमे	७	२४	२०२	६६

३३३	चक्षुइन्द्रिय प० सं० स्थि०मे	७	२०	२०७	९९
३३४	तीर्यक्० अधोलोकिक स्त्रिमे	०	१०	२०२	१२२
३३५	घ्रागेन्द्रिय प० स० स्थि०मे	७	२२	२०७	९९
३३६	कारमाग त्रसमे	७	१३	२१७	६६
३३७	नोगर्भेज प्र० शरीरी अचर्ममे	१४	३४	१०१	१८८
३३८	अभापक अचर्ममे	७	३५	२०२	९४
३३९	उर्ध्व० तीर्यक्० के मरनेवालोमे	०	४८	२१७	७४
३४०	नोगर्भेज बादर तीनशरीरीमे	१४	२७	१०१	१९८
३४१	औदारीक बादरमे	०	३८	२०३	०
३४२	घ्रागेन्द्रिय मिथ्या० मरनेवालोमे	७	२४	२१७	९४
३४३	तेजोलेश्यावाले जीवोमे	०	१३	२०२	१२८
३४४	त्रस मिथ्या० मरनेवालोमे	७	२६	२१७	६४
३४५	तीनशरीरी मिथ्या० मरने० मे	७	४२	२०२	६४
३४६	प्र० शरीरी ज० अन्तरमुहूर्त उ० १६ सागरोपमकि स्थितिके मरनेवालोमे	५	४४	२१७	८०
३४७	अनाहारीक जीवोमे	७	२४	२१७	६६
३४८	बादर अभापकमे	७	२५	२१७	६६
३४९	त्रस मरनेवालोमे	७	२६	२१७	६६
३५०	नोगर्भेज तीनशरीरीमे	१४	३७	१०१	१९८
३५१	औदारीक शरीरमे	०	४८	२०३	०

३५२	ज० अन्त० उ० १७ सा० मग्ने०में	६	४८	२१७	८१
३५३	नोगर्भजकि गतिके त्रस तीनशरीरीमे	२	२१	२२८	१०२
३५४	मिथ्य० एकान्तसंख्या० स्थितिमे	७	४६	२०५	९४
३५५	तीर्यक् लो० पांचेन्द्रिय एकसंस्थानिमें	०	१०	२७३	७२
३५६	बादर मिथ्या० मग्नेवालोंमे	७	३८	२१७	९४
३५७	सम्या० आगतिके बादरमे	७	३४	२१७	९९
३५८	अभारक जीवोमे	७	३५	२१७	९९
३५९	तीर्य० घ्राणेन्द्रिय एकसंस्थानीमे	०	१४	२७३	७२
३६०	उर्ध्व० तीर्य० पुरुषवेदमे	०	१०	२०२	१४८
३६१	तीर्य० त्रस एकसंस्थानीमे	०	१६	२७३	७२
३६२	प्र० शरीरी मिथ्या० मग्नेवालोंमे	७	४४	२१७	६४
३६३	सम्य० आगतिमे	७	४०	२१७	६६
३६४	नोगर्भजकि गतिके बादर तीनश० मे	२	३२	२२८	१०२
३६५	ज० अन्त० २९ सा० स्थि० मग०में	७	४८	२१७	६३
३६६	मिथ्या० मग्नेवालोंमे	७	४८	२१७	६४
३६७	प्र० शरीरी मग्नेवालोंमे	७	४४	२१७	६६
३६८	पुरुष एकसंस्था० घणाभववालोंमें	०	०	१७२	१९[illegible]
३६९	अ० तो० तीर्य० चक्षु० मिश्रयोगी	१४	१६	२१७	१२२
०	एकान्त० संख्य० स्थितिवालोंमे	३	४८	२१७	१०२
१	सम्यक्त्व मग्नेवालोंमे	७	४८	२१७	६६

३७२	तीर्य० कृष्ण० तीन शरीरी बादर०	०	३२	२८८	५२
३७३	तीर्य० बादर एक सस्थानीमें	०	२८	२७३	७२
३७४	अ० ती० बादरकृष्ण० एकान्त- भवधारणी देह	३	३२	२८८	५१
३७५	तीर्य० पाचेन्द्रिय कृष्णलेशी	०	२०	३०३	५२
३७६	एक संस्थानी मिश्रयोगी पाचेन्द्रिय अनेगीयामे	०	५	१८७	१८४
३७७	तीर्य० चक्षु० कृष्णलेशीमें	०	२२	३०३	५२
३७८	भुजपुरकि गतिके पाचे० तीन शरीरी	४	१०	२०२	१६२
३७९	तीर्य० घ्राणेन्द्रिय कृष्णलेशीमे	०	२४	३०३	५२
३८०	पुरुष तीन शरीरी अचर्ममे	०	५	१८७	१८८
३८१	तीर्य० त्रस कृष्णलेशीमे	०	२६	३०३	५२
३८२	तीर्य० तीन शरीर कृष्णलेशीमे	०	४२	२८८	५२
३८३	तीर्य० एक सस्थानीमे	०	३८	२७३	७२
३८४	संज्ञी एक संस्थानीमे	१४	०	१७२	१९८
३८५	नोगर्भजकि गतिका बादरमे	२	३८	२४३	१०२
३८६	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पाचेन्द्रियअचर्म	०	२०	२८८	५८
३८७	उर्ध्व० तीर्यके त्रस मिथ्या० एकान्त भवधारणी देहमें	०	२१	२८८	५८

३८८	अग्री० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह बादरमें	७	३२	२८८	६१
३८९	संज्ञी अभव्य तीन शरी० असंज्ञीर्यचमें	१४	०	१८७	१८८
३९०	पुरुषवेद तीन शरीरोंमे	०	५	१८७	१९८
३९१	पाचेन्द्रिय कृष्ण० एक संस्थानीमें	६	१०	२७३	१०२
३९२	तीर्य० बादर तीन शरीरोमे	०	३०	२९९	७०
३९३	तीर्य० बादर कृष्णलेशीमे	०	३८	३०३	५२
३९४	संज्ञी अभव्य तीन शरीरोंमें	१४	५	१९७	१९९
३९५	तीर्य० पाचेन्द्रियमे	०	२०	३०३	७२
३९६	ऊर्ध्व० तीर्य० एकान्त भवधारणी देह पाचेन्द्रिय	०	२०	२९९	९९
३९७	तीर्य० चक्षुइन्द्रियमें	०	२२	३०३	७२
३९८	अग्री० तीर्य० ए० भवधारणी देह	७	४२	२९९	६१
३९९	तीर्य० घ्राणेन्द्रियमें	०	२४	३०३	७२
४००	अभव्य पुरुषवेदमें	०	१०	२०२	१९९

थोकडा नम्बर ७३.

४०१	तीर्य० त्रस जीवोंमे	०	२६	३०३	७२
४०२	तीर्य० तीन शरीरोंमें	०	४०	२९९	७०
४०३	तीर्य० कृष्णलेशीमें	०	४८	३०३	५०
४०४	नपु० संज्ञी असं० भवसाथे असंज्ञीर्यचमें	१४	०	२०२	१८८

४०५	उपुरुषी गतिका चक्षु० मिश्रयोगी	१०	१६	२१५	१६२
४०६	उपुरुषि गतिका घ्राणेन्द्रिय मिश्रयोगीमें	१०	१५	२१७	१६२
४०७	बा० प्र० कृष्ण० एक संस्थानीमे	६	२६	२७३	१०२
४०८	तीर्य० एकान्त छद्मस्थमे	०	४८	२८८	७२
४०९	वादरकृष्ण० एक संस्थानिमे	६	२८	२७३	१०२
४१०	पुरुषवेदमे	०	१०	२०२	१९८
४११	तीर्य० प्र० शरीरी वादरमे	०	३६	३०३	७२
४१२	त्रिकि गतिके सज्ञी मिथ्या० मे	१२	१०	२०२	१८८
४१३	प्रशस्त लेश्यामे	०	१३	२०२	१९८
४१४	सज्ञी मिथ्यात्वीमें	१४	१०	२०२	१८८
४१५	प्र० शरीरी कृष्ण० एक संस्था०	६	३४	२७३	१०२
४१६	अप्रशस्तलेशी तीन शरीरी वादर एक सस्थानीमे	१४	२७	२७३	१०२
४१७	स्त्रीकि गति कृष्ण० एकसस्थानी	४	३८	२७३	१०२
४१८	प्र० वादर एकसंस्थान एकान्त भव धारणीदेह	७	२९	२५३	११२
४१९	कृष्णलेश्या एक संस्थानीमे	६	३८	२७३	१०२
४२०	मिश्रयोगीवादर एकान्त असयममे	१५	२०	२०२	१८४
४२१	त्रिकि गति अप्रशस्तलेशी प्र० शरीर एक सस्थानिमे	१२	३५	२७३	१०२

४२२	त्रिकि गतिकं संज्ञीमे	१२	१०	२०२	१९८
४२३	प्र० शरीगी मिश्रयोगी एकान्त असंयममे	१४	२३	२०२	१८४
४२४	समुच्चयसंज्ञीमे	१४	३०	२०२	१९८
४२५	मिश्रयोगि एकान्त अपच्चरकाणीमे	१४	२९	२०२	१८४
४२६	कृष्णालेशी बादर प्र० तीन शरीरीमें	६	३०	२८८	१०२
४२७	अप्रशस्तलेशी एक संस्थानीमे	१४	३८	२७३	१०२
४२८	कृष्णा बादर तीन शरीरीमे	६	३२	२८८	१०२
४२९	कृष्णा बा० एकान्त असंयममे	६	३३	२८८	१०२
४३०	त्रि० गतिके त्रस मिश्र० घणा भववालोमे	१२	१८	२१७	१८३
४३१	त्रि० गतिके त्रस मि० में	१२	१८	२१७	१८४
४३२	त्रसमिश्रयोगि संख्या० भववालोमे	१४	१८	२१७	१८३
४३३	त्रसमिश्रयोगिमे	१४	१८	२१७	१८३
४३४	कृ० प्र० तीन शरीरीमें	६	३८	२८८	१०२
४३५	मिश्रयोगी बादर मिथ्या० मे	१४	२५	२१७	१७९
४३६	बादर तीन शरीरी अप्रशस्तलेशी	१४	३२	२८८	१०२
४३७	बाद० एकान्त अपच० अप्रशस्तलेशी	१४	३३	२८८	१०२
४३८	कृष्णा० तीन शरीरी	६	४२	२८८	१०२
४३९	कृ० एकान्त अपचखाणीमे	६	४३	२८८	१०२

४४०	मिश्रयोग बादरमें	१४	२५	२१७	१८४
४४१	अधो० तीर्यक्० के चक्षु० तीन शरी०	१४	१७	२८८	१२२
४४२	प्र० तीन शरीगी अप्रशस्तलेशी	१४	३८	२८८	१०२
४४३	प्र० मिश्रयोगी	१४	२८	२१७	१८४
४४४	प्र० एकान्त भवधारणी देह घणा भववालोमे	७	३८	२८८	१११
४४५	अधो० तीर्य० तीन शरीरी त्रस मिश्रयोगमे	१४	२१	२८८	१२२
४४६	अप्रशस्त लेश्या तीन शरीरीमे	१४	४२	२८८	१०२
४४७	एकान्त असंयम अप्रशस्तलेशी	१४	४३	२८८	१०२
४४८	एकान्त भवधारणी देह घणा भववालोमे	७	४२	२८८	१११
४४९	त्रि गतिके एकान्त भव० देह	६	४२	२८८	११३
४५०	भवसिद्धि एकान्त भव० देह	७	४२	२८८	११२
४५१	उरपुरकि गति कृष्ण० प्र० तीन शरीरमे	२	४४	३०२	१०२
४५२	भुजपुरकि गति० अधो० तीर्य० प्र० तीन शरीरी	४	३८	२८८	१२२
४५३	त्रि० गति कृ० प्र० शरीरी	४	४४	३०२	१०२
४५४	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद० पाने० घणा भवमे	०	२०	२८८	१४६

४५५	कृष्णा० प्र० शरीरमे	२	४४	३०३	१०२
४५६	अधो० तीर्य० तीनशरीरीबादर	१४	३२	२८८	१०२
४५७	अप्रशस्तलेशी बादरमे	१४	३८	३०३	१०२
४५८	ऊर्ध्व० तीर्य० एकान्त क्षुद्र० चक्षु० मे	०	२२	२८८	१४८
४५९	ऊर्ध्व० तीर्य० के एकसमंस्थानीमे	०	३८	२७३	१४८
४६०	ऊर्ध्व० तीर्य० एकान्त क्षुद्र० घ्राणेइन्द्रियमे	०	२४	२८८	१४८
४६१	अधो० तीर्य के चक्षुइन्द्रियमे	१४	२२	३०३	१२२
४६२	अधो० तीर्य० बादर एकान्त क्षुद्र० मे	१४	३८	२८८	१२२
४६३	अधो० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमे	१४	२४	३०३	१२२
४६४	स्त्रि० गतिके अधो० तीर्य० तीन शरीरीमे	१२	४२	२८८	१२२
४६५	अ० तीर्य० के त्रसमे	१४	२६	३०३	१२२
४६६	अधो० तीर्य० के तीन शरीरीमे	१४	४२	२८८	१२२
४६७	अप्रशस्तलेश्यामे	१४	४८	३०३	१०२
४६८	ऊर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीबादरमे	०	३२	२८८	१४८
४६९	ऊर्ध्व० तीर्य० एकान्त असयम बादरमे	०	३३	२८८	१४८
४७०	अधो० तीर्य० एकान्त क्षुद्र० स्त्रि० गतिमे	१२	४८	२८८	१२२

४७१	उर्ध्व० तिर्य० के पाचेंद्रियमें	०	२०	३०३	१४८
४७२	अधो० तिर्य० एकान्त छद्मस्थमे	१४	४८	२८८	१२२
४७३	उर्ध्व० तिर्य० के चक्षुइन्द्रियमे	०	२२	३०३	१४८
४७४	उर्ध्व०तिर्य०के एकान्तछद्म०बादरमे	०	३८	२८८	१४८
४७५	उर्ध्व० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमे	०	२४	३०३	१४८
४७६	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरी घणा भववालोमे	०	४२	२८८	१४६
४७७	उर्ध्व० तीर्य० त्रसमे	०	२६	३०३	१४८
४७८	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीमे	०	४२	२८८	१४८
४७९	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त असंयममे	०	४३	२८८	१४८
४८०	,, ,, एकान्त छद्म० प्र० शरीरीमे	०	४४	२८८	१४८
४८१	त्रि० गतिके अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमे	१२	४४	३०३	१२२
४८२	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० घणा भववालोमे	०	४८	२८८	१४६
४८३	अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमे	१४	४४	३०३	१२२
४८४	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० मे	०	४८	२८८	१४८
४८५	त्रि गतिके अधो० तीर्य० मे	१२	४८	३०३	१२२
४८६	भुजपुरकि गतिके तीन शरीरी बादरमे	४	१२	२८८	१६२

४७१	उर्ध्व० तिर्य० के पाचेंद्रियमें	०	२०	३०३	१४८
४७२	अधो० तिर्य० एकान्त छद्मस्थमे	१४	४८	२८८	१२२
४७३	उर्ध्व० तिर्य० के चक्षुइन्द्रियमे	०	२२	३०३	१४८
४७४	उर्ध्व०तिर्य०के एकान्तछद्म०बादरमे	०	३८	२८८	१४८
४७५	उर्ध्व० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमे	०	२४	३०३	१४८
४७६	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरी घणा भववालोमे	०	४२	२८८	१४६
४७७	उर्ध्व० तीर्य० त्रसमे	०	२६	३०३	१४८
४७८	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीमे	०	४२	२८८	१४८
४७९	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त असंयममे	०	४३	२८८	१४८
४८०	,, ,, एकान्त छद्म० प्र० शरीरीमे	०	४४	२८८	१४८
४८१	त्रि० गतिके अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमे	१२	४४	३०३	१२२
४८२	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० घणा भववालोमे	०	४८	२८८	१४६
४८३	अधो० तीर्य० प्र० शरीरीमे	१४	४४	३०३	१२२
४८४	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त छद्म० मे	०	४८	२८८	१४८
४८५	त्रि गतिके अधो० तीर्य० मे	१२	४८	३०३	१२२
४८६	भुजपुरकि गतिके तीन शरीरी बादरमे	४	१२	२८८	१६२

४५५	कृष्णा० प्र० शरीरमें	२	४४	३०३	१०२
४५६	अधो० तीर्य० तीनशरीरीयाहर	१४	३२	२८८	१२२
४५७	अप्रशस्तलेशी याहरमे	१४	३८	३०३	१०२
४५८	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त क्षुद्र० चक्षु० मे	०	२२	२८८	१४८
४५९	उर्ध्व० तीर्य० के एकसमयस्थानीमें	०	३८	२७३	१४८
४६०	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त क्षुद्र० घ्राणेइन्द्रियमे	०	२४	२८८	१४८
४६१	अधो० तीर्य के चक्षुइन्द्रियमे	१४	२२	३०३	१२२
४६२	अधो० तीर्य० याहर एकान्त क्षुद्र० मे	१४	३८	२८८	१२२
४६३	अधो० तीर्य० घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१२२
४६४	मिश्र० गतिके अधो० तीर्य० तीन शरीरीमे	१२	४२	२८८	१२२
४६५	प्र० तीर्य० के त्रसमें	१४	२६	३०३	१२२
४६६	अधो० तीर्य० के तीन शरीरमें	१४	४२	२८८	१२२
४६७	अप्रशस्तलेश्यामें	१४	४८	३०३	१०२
४६८	उर्ध्व० तीर्य० तीन शरीरीयाहरमे	०	३२	२८८	१४८
४६९	उर्ध्व० तीर्य० एकान्त असयम याहरमे	०	३३	२८८	१४८
४७०	अधो० तीर्य० एकान्त क्षुद्र० मिश्र० गतिमे	१२	४८	२८८	१२२

५०४	खेचरकि गतिके एकान्त छद०	६	४८	२८८	१६२
५०५	तीर्यचकि गतिके त्रसमे	१४	२६	३०३	१६२
५०६	संज्ञी तीर्यचकि गतिके तीनशरीरमे	१४	४२	२८८	१६२
५०७	अन्तरद्विपके पर्याप्ताके अलद्धियोंमे	१४	४८	२४७	१६८
५०८	उरपुरकि गतिके एकान्त सकषायमे	१०	४८	२८८	१६२
५०९	चोपदकि गतिके प्र० शरीरी वादरमे	८	३६	३०३	१६२
५१०	तीर्यचणि गतिके एकान्त संयोगिमे	१२	४८	२८८	१६२
५११	एक संस्थान प्र० शरीरी वादरमे	१४	२६	२७३	१९८
५१२	तीर्यचकि गतिके एकान्त संयोगिमें	१४	४८	२८८	१६२
५१३	एक सस्थानी मिथ्यात्वीमे	१४	३८	२७३	१८८
५१४	मध्य जीवोके स्पर्शनेवाले एकान्त छद० चक्षु०	१४	२२	२८८	१६०
५१५	तीर्यचणि गतिके वादरमें	१२	३८	३०३	१६२
५१६	म० जीवोके भेद स्प० एकान्त छद० घ्राणेन्द्रि०	१४	२४	२८८	१९०
५१७	स्त्रि० गति एक संस्थानि प्र० शरीरीमे	१२	३४	२५३	१९८
५१८	पाचेन्द्रियमे एकान्त छद० यथोभव०	१४	२०	२८८	१९६
५१९	चक्षुइन्द्रिय एकान्त असंयममे	१४	१५	२८८	१९८
५२०	पाचेन्द्रिय एकान्त सकषायमे	१४	२०	२८८	१९८

५०४	खेचरकि गतिके एकान्त छद०	६	४८	२८८	१६२
५०५	तीर्यचकि गतिके त्रसमे	१४	२६	३०३	१६२
५०६	संज्ञी नीर्यचकि गतिके तीनशरीरमे	१४	४२	२८८	१६२
५०७	अन्तरद्विपके पर्यामाके अलद्धियोंमे	१४	४८	२४७	१६८
५०८	उरपुरकि गतिके एकान्त सकषायमे	१०	४८	२८८	१६२
५०९	चोपदकि गतिके प्र० शरीरी वादरमे	८	३६	३०१	१६२
५१०	तीर्यचणि गतिके एकान्त संयोगिमे	१२	४८	२८८	१६२
५११	एक संस्थान प्र० शरीरी वादरमे	१४	२६	२७१	१९८
५१२	तीर्यचकि गतिके एकान्त मयोगिमे	१४	४८	२८८	१६२
५१३	एक संस्थानी मिथ्यात्वीमे	१४	३८	२७३	१८८
५१४	भव्य जीवोके स्पर्शनेवाले एकान्त छद० चक्षु०	१४	२२	२८८	१९०
५१५	तीर्यचणि गतिके वादरमे	१२	३८	३०३	१६२
५१६	भ० जीवोके भेद स्प० एकान्त छद० घ्रायेन्द्रि०	१४	२४	२८८	१९०
५१७	स्त्रि० गति एक संस्थानि प्र० शरीरीमे	१२	३४	२७३	१९८
५१८	पांचेन्द्रियमे एकान्त छद० परोभव०	१४	२०	२८८	१९६
५१९	चक्षुइन्द्रिय एकान्त असंयममे	१४	१७	२८८	१९८
५२०	पांचेन्द्रिय एकान्त सकषायमे	१४	२०	२८८	१९८

५२१	एकसंस्थानी वगा भवव्वालोमे	१४	३८	२७३	१९६
५२२	एकान्त सकषाय चक्षु०	१४	२२	२८८	१९८
५२३	एकसंस्थानीमे	१४	३८	२७३	१९८
५२४	एकान्त सकषाय घ्राणे० मे	१४	२४	२८८	१९८
५२५	पाचेन्द्रिय मिथ्यात्वीमे	१४	२०	३०३	१८८
५२६	एकान्त सकषाय त्रसमे	१४	२६	२८८	१९८
५२७	तीर्यञ्चकि गतिमे	१४	४८	३०३	१९६
५२८	एकान्त क्षुद्र० वा० मिथ्या०	१४	३८	२८८	१८८
५२९	त्रि गतिके त्रस मिथ्या०	१२	२६	३०३	१८८
५३०	तीनशरीरी प्र० वगा भवव्वालोमे	१४	३८	२८८	१९६
५३१	त्रि० गति पाचे० संज्ञा भव०	१२	२०	३०३	१९६
५३२	तीनशरीरी बादरमे	१४	३२	२८८	१९८
५३३	एकान्त असंयम बादरमे	१४	३३	२८८	१९८
५३४	एकान्त क्षुद्र० अभव्य प्र० शरीरी	१४	४४	२८८	१८८
५३५	पाचेन्द्रिय जीवोमे	१४	२०	३०३	१९८
५३६	त्रि० गतिके वा० एकान्त सकषाय०	१२	३८	२८८	१९८
५३७	त्रि० गतिके घ्राणेन्द्रियमे	१२	२४	३०३	१९८
५३८	एकान्त क्षुद्र० बादरमे	१४	३८	२८८	१९८
५३९	घ्राणेन्द्रियमे	१४	२४	३०३	१९८
५४०	त्रि० गतिके तीनशरीरीमे	१२	४२	२८८	१९८

५४१	त्रस जीवोमे	१४	२६	३०३	१९८
५४२	तीन शरीरी एकान्त छद्म०	१४	४२	२८८	१९८
५४३	एकान्त असंयममे	१४	४३	२८८	१९८
५४४	प्र० श० एकान्त छद्म०	१४	४४	२८८	१९८
५४५	सम्य० तीर्यचके अलद्धियामें	१४	३०	३०३	१९८
५४६	एकान्त छद्म० घणे भववालोमें	१४	४८	२८८	१९६
५४७	त्रि० गतिके प्र० श० मिथ्या०	१२	४४	३०३	१८८
५४८	एकान्त छद्मस्थमे	१४	४८	२८८	१९८
५४९	मिथ्या०प्र० शरीरीमे	१४	४४	३०३	१८८
५५०	सम्य० नारकिके अलद्धिया	१	४८	३०३	१९८
५५१	त्रि० गतिके मिथ्या० मे	१२	४८	३०३	१८८
५५२	एकेन्द्रिय पर्याप्तके अलद्धिया	१४	३७	३०३	१९८
५५३	मिथ्यात्वीमे	१४	४८	३०३	१८८
५५४	नौ ग्रीवेंगके पर्याप्तके अलद्धिया	१४	४८	३०३	१८९
५५५	जीवोके मध्यभेद स्पर्शनेवालोमे	१४	४८	३०३	१९०
५५६	नरक पर्याप्ताके अलद्धियोमे	७	४८	३०३	१९८
५५७	त्रि० गतिके प्र० शरीरीमे	१२	४४	३०३	१९८
५५८	तीर्यच पाचेन्द्रिय वैक्रयके अल०	१४	४३	३०३	१९८
५५९	प्रत्येक शरीरीमें	१४	४४	३०३	१९८
५६०	तेजोलेशी एकेन्द्रियके अल०	१४	४९	३०३	१९८

५६१	भगो भववाले जीवोमे	१४	४८	३०३	१९६
५६२	एकेन्द्रिय वैक्रयश० अलद्धिया	१४	४७	३०३	१९८
५६३	सव संसारी जीवोमें	१४	४८	३०३	१९८

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्
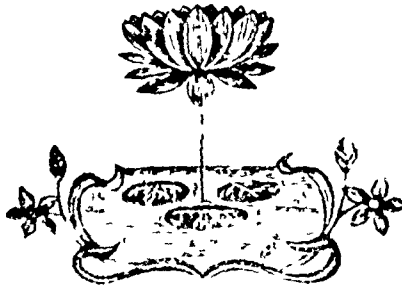
थोकडा नम्बर ७६.

कोनसे कोनसे बोलोंमें कीतने कीतने जीवोंके भेद मीलते है वह अन्तिम कोष्टमें समुच्चय जीवों के भेद के अंक रखे गये है बाद क्रमशः च्यारों कोष्टमें नरक, तीर्यच, मनुष्य, देवताओं के अलग अलग जीवों के भेद रखे गये है इस थोकडे कों कण्ठस्थ करनेवालोंको शास्त्रों का बाध और तर्कबुद्धि सहज में प्राप्त हो सकेगा.

जीवोंके भेद क्रि संख्या.	कोनसी मार्गणामें कीतने जीवोंके भेद मीलते है उस मार्गणाका नाम	नरकके १४ भेद.	तीर्यचके ४८ भेद.	मनुष्योंके ३०३ भेद.	देवताओंके १९८ भेद.	समुच्चय.
१	समुच्चय जीवोंमें जीवोंके भेद	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२	नरकगतिमें	१४	०	०	०	१४
३	तीर्यचगतिमें	०	४८	०	०	४८
४	मनुष्यगतिमें	०	०	३०३	०	३०३
५	देवगतिमें	०	०	०	१९८	१९८
६	तीर्यचणीमें	०	१०	०	०	१०
७	मनुष्यणीमें	०	०	२०२	०	२०२
८	देवीमें	०	०	०	१२८	१२८
९	सइन्द्रियजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१०	एकेन्द्रियजीवोमें	०	२२	०	०	२२
११	बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिंद्रियमें	०	२।२।२	०	०	२
१२	पांचेन्द्रिय जीवोमें	१४	२०	३०३	१९८	५३५

१३	अनेंद्रिय (केवली)	०	०	१५	०	१५
१४	श्रोत्रेंद्रिय जीवोमें	१४	२०	३०३	१९८	५३५
१५	चक्षुइन्द्रियमें	१४	२२	३०३	१९८	५३७
१६	घ्राणेन्द्रियमें	१४	२४	३०३	१९८	५३९
१७	रसेन्द्रियमें	१४	२६	३०३	१९८	५४१
१८	स्पर्शेन्द्रियमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१९	श्रोत्रेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२८	१५	०	४३
२०	चक्षुइन्द्रियका अलब्धियामें	०	२६	१५	०	४१
२१	घ्राणेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२४	१५	०	३९
२२	रसेन्द्रियका अलब्धियामें	०	२२	१५	०	३७
२३	स्पर्शेन्द्रियका अलब्धियामें	०	०	१५	०	१५
२४	सकायजीवोंमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२५	पृथ्वी, अप, तेउ, वायुकायमें	०	४।४	०	०	४
२६	वनस्पतिकायमें	०	६	०	०	६
२७	त्रसकायमें	१४	२६	३०३	१९८	५४१
२८	सयोगि--काययोगिमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
२९	मनयोगिमें	७	५	२०१	९९	३१२
३०	वचनयोगिमें	७	१३	२०१	९९	३२०
३१	औदारीककाययोग	०	४८	३०३	०	३५१
३२	औदारीकमिश्रकाययोग	०	३०	२१७	०	२४७
३३	वैक्रयकाययोग	१४	६	१५	१९८	२३३
३४	वैक्रयमिश्रकाययोग	१४	६	१५	१८४	२१९
३५	आहारीककाययोग	०	०	१५	०	१५
३६	आहारीकमिश्रकाययोग	०	०	१५	०	१५

३७	कारमणकाययोग	७	२४	२१७	९९	३४७
३८	अयोगिमे	०	०	१५	०	१५
३९	सवेदीजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४०	स्त्रिवेदवालोमें	०	१०	२०२	१२८	३४०
४१	पुरुषवेदवालोमें	०	१०	२०२	१९८	४१०
४२	नपुंसकवेदवालोमें	१४	४८	१३१	०	१९३
४३	अवेदीजीवोमें	०	०	१५	०	१५
४४	एकवेदवालेजीवोमें	१४	३८	१०१	७०	२२३
४५	दोवेदवालेजीवोमें	०	०	१७२	१२८	३००
४६	तीनवेदवालेजीवोमें	०	१०	३०	०	४०
४७	सकषायि, क्रोध, मान माया लोभमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
४८	अकषायिमें	०	०	१५	०	१५
४९	सलेशीजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
५०	कृष्णनिलकापोतलेशीमें	६	४८	३०३	१०२	४५९
५१	तेजसलेशीमें	०	१३	२०२	१२८	३४३
५२	पद्मलेशीमें	०	१०	३०	२६	६६
५३	शुक्ललेशीमें	०	१०	३०	४४	८४
५४	एकलेश्यावालेजीवोमें	१०	०	०	९६	१०६
५५	दोलेश्यावालेजीवोमें	४	०	०	०	४
५६	तीनलेश्यावालोमें	०	३५	१०१	०	१३६
५७	च्यारलेश्यावालोमें	०	३	१७२	१०२	२७७
५८	पांचलेश्यावालोमें	०	०	०	०	०
५९	छेलेश्यावालोमें	०	१०	३०	०	४०

६०	एकलीकृष्णलेश्यामें	६	०	०	०	१
६१	एकलीनिललेश्यामें	६	०	०	०	१
६२	एकलीकापोतलेश्यामें	६	०	०	०	१
६३	एकली तेजसलेश्यामें	०	०	०	२६	२१
६४	एकली पद्मलेश्यामें	०	०	०	२६	२१
६५	एकली शुक्ललेश्यामें	०	०	०	४४	४४
६६	अलेशी जीवोमें	०	०	१५	०	१५
६७	सम्यक्त्वदृष्टिमें	१३	१८	९०	१६२	२८३
६८	मिथ्यादृष्टिमें	१४	४८	३०३	१८८	५५३
६९	मिश्रदृष्टिमें	७	५	१५	६७	९४
७०	एकदृष्टिवाले जीवोमे	१	३०	२१३	४६	२९०
७१	दोयदृष्टिवाले जीवोमें	०	८	६०	१८	८६
७२	तीनदृष्टिवाले जीवोमें	१३	१०	३०	१३४	१८७
७३	सास्वादन सम्यक्त्वमें	१३	१८	३०	१३४	१९५
७४	क्षोपशम सम्यक्त्वमें	१३	१०	९०	१६२	२७५
७५	क्षायक सम्यक्त्वमे	२	८	९०	१६२	२६२
७६	उपशम सम्यक्त्वमे	१	१०	३०	१३४	१७५
७७	वेदीक सम्यक्त्वमे	७	५	१५	६७	९४
७८	चक्षुदर्शनमें	१४	२२	३०३	१९८	५३७
७९	अचक्षुदर्शनमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
८०	अवधिदर्शनमें	१४	५	३०	१९८	२४७
८१	केवलदर्शनमें	०	०	१५	०	१५
८२	समुच्चयज्ञानी मतिश्रुतिज्ञानीमें	१३	१८	९०	१६२	२८३
८३	अवधिज्ञानीमें	१३	५	३०	१६२	२१०

८४	मनपर्यवज्ञान केवल ज्ञानमें	०	०	१५	०	१५
८५	समु० अज्ञान मति० श्रुतिअज्ञान	१४	४८	३०३	१८८	५५३
८६	विभंग ज्ञानमें	१४	५	१५	१८८	२२२
८७	संयति० सा० सू० यथा०	०	०	१५	०	१५
८८	छेदोपस्था० परि०	०	०	१०	०	१०
८९	असंयतिमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९०	संयतासंयतिमें	०	५	१५	०	२०
९१	साकारमनाकारोपयोगमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९२	आहारीकमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
९३	अनाहारीकमें	७	२४	२१७	९९	३४७
९४	भाषकमें	७	१३	१०१	९९	२२०
९५	अभाषकमें	७	३५	२१७	९९	३५८
९६	परतमें अपरतमें	१४	४८	३ ३	१९८	५५३/५६३
९७	ओपरत नो अपरतमें	०	०	०	०	०
९८	पर्याप्ता जीवोंमे	७	२४	१०१	९९	२३१
९९	अपर्याप्तामें	७	२४	२०२	९९	३३२
१००	नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता	०	०	०	०	०
१०१	सूक्ष्म जीवोमें	०	१०	०	०	१०
१०२	बादर जीवोमें	१४	३८	३०३	१९८	५५३
१०३	नोसूक्ष्म नोबादर	०	०	०	०	०
१०४	संज्ञी जीवोमें	१४	१०	२०२	१९८	४२४
१०५	असंज्ञी जीवोमे	०	३८	१०१	०	१३९
१०६	नोसंज्ञी नोअसज्ञी	०	०	१५	०	१५
१०७	भव्य जीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३

१०८	अभव्यजीवोमें	१४	४८	३०३	१८८	५५३
१०९	नोभव्य नो अभव्यमें	०	०	०	०	०
११०	चरमजीवोमें	१४	४८	३०३	१९८	५६३
१११	अचरमजीवोंमे	१४	४८	३०३	१८८	५५३
११२	गर्भज जीवोंमें	०	१०	२०२	०	२१२
११३	नोगर्भज जीवोंमे	१४	३८	१०१	१९८	३५१
११४	भरतक्षेत्रके जीवोंमे	०	४८	३	०	५१
११५	महा विदेहक्षेत्रमें	०	४८	९	०	५७
११६	जंबुद्विपक्षेत्रमें	०	४८	२७	०	७५
११७	लवणसमुद्रमें	०	४८	१६८	०	२१६
११८	धातकी खंडमे	०	४८	५४	०	१०२
११९	पुष्करार्द्धद्विपमें		४८	५४	०	१०२
१२०	अढाइद्विपमें	०	४८	३०३	०	३५१
१२१	असंख्यातद्विप समुद्रमें	०	४८	३०३	०	३५१
१२२	लोककी स्थानकि पोलारमे	०	१२	०	०	१२
१२३	लोकके चर्मान्तमे	०	१२	०	०	१२
१२४	सिद्धक्षेत्रमें	०	१२	०	०	१२
१२५	श्रीसिद्ध भगवानमें	०	०	०	०	०

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

इति श्री शीघ्रबोध भाग ७ वां समाप्तम्.

॥ श्रीरत्नप्रभसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

शीघ्रबोध भाग ८ वां।

थोकडा नं० ७७

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० १.

(योगो की अल्पा बहुत्व).

संसारी जीवों के चौदे भेद है–जैसे सुक्ष्म एकेन्द्रि के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता, बादर एकेन्द्रि के दो भेद पर्याप्ता, अपर्याप्ता एव बेन्द्रि. तेरिन्द्रि. चोरिन्द्रि, सन्नीपंचेन्द्रि और असन्नीपंचेन्द्रि के दो दो भेद पर्याप्ता अपर्याप्ता करके १४ भेद हुवे।

जीव के आत्म प्रदेशों से अध्यवसाय उत्पन्न होते है और वह शुभाशुभ करके दो प्रकारके है। इन अध्यवसायों की प्रेरणा से जीव पुद्गलोंको ग्रहण करके प्रणमाते है उसे परिणाम कहते है वह सूक्ष्म है और परिणामों की प्रेरणा से लेश्या होती है और लेश्या की प्रेरणा से मन वचन काया के योग व्यापार होते है जिसे योग कहते है। योग दो प्रकार के होते है। (१) जघन्य योग (२) उत्कृष्ट योग। उपर जो १४ भेद जीवोंके कहे है उनमे जघन्य और उत्कृष्ट योग की तरतमता है उसी को अल्पाबहुत्व करके नीचे बतलाते है.—

(१) सबसे स्तोक सूक्ष्मएकेन्द्रिके अपर्याप्ताका जघन्ययोग
(२) बादर एकेन्द्रि के अपर्याप्ता का जघन्य योग असं० गुणा.
(३) बेरिन्द्रि के " " " "

४ तेरिन्द्रि के
(५) चौरिन्द्रि के
(६) असन्नी पंचेन्द्रि के
(७) सन्नी पंचेन्द्रि के
(८) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्यानाका
(९) बादर एकेन्द्रि के
(१० सुक्ष्म एकेन्द्रि के अपर्याना का उत्कृष्ट०
(११) बादर एकेन्द्रि के
(१२) सुक्ष्म एकेन्द्रि के पर्याना का
(१३) बादर एकेन्द्रि के
(१४) बेरिन्द्रि के पर्याना का जघन्य०
(१५) तेरिन्द्रि के
(१६) चौरिन्द्रि के
(१७) असन्नी पंचेन्द्रि के
(१८) सन्नी पंचेन्द्रि के
(१९) बेरिन्द्रि के अपर्याना का उत्कृष्ट०
(२०) तेरिन्द्रि के
(२१) चौरिन्द्रि के
(२२) असन्नी पंचेन्द्रि के
(२३) सन्नी पंचेन्द्रि के
२४ बेरिन्द्रि के पर्याना का
(२५) तेरिन्द्रि के
२६ चौरिन्द्रि के
२७ असन्नी पंचेन्द्रि के
२८ सन्नी पंचेन्द्रि के

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

— — —

थोकडा नं० ७८

[श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० १].

जीवोंके योगों की तरतमता देखने के लिये यह थोकडा खूब दीर्घदृष्टिसे विचार करने योग्य है।

प्रथम समय के उत्पन्न हुवे दो नारकी के नैरीया क्या सम योग वाले है या विषम योगवाले है ? स्यात् सम योग वाले है स्यात् विषम योग वाले है। क्योंकि प्रथम समय के उत्पन्न हुवे नारकी के नेरीयों के योग आहारीक से अणाहारीक और अणाहारीक से आहारीक के परस्पर स्यात् न्यून है, स्यात् अधिक है और स्यात् बराबर भी है। यद्यपि न्युन हो तो असं- ख्यातभाग, सख्यातभाग, सख्यातगुण, असंख्यातगुण न्यून हो सकते है और अगर अधिक हो तो इसी तरह असंख्यातभाग, सख्यातभाग, सख्यातगुण, असख्यातगुण, अधिक होते है और यदि बराबर हो तो दोनों के योग तुल्य होते है। यथा —

(१) एक समय का आहारीक है परन्तु मींडक गती करके आया है और दुसरा जीव भी एक समय का आहारीक है परन्तु ईलका गती करके आया है। इन दोनों के योग असख्यातभाग. न्यूनाधिक ।

(२) एक जीव एक समय का आहारीक है और मींडक गती से आया है तथा दूसरा जीव दो समय का आहारीक है परन्तु एक वंका गती करके आया है। इन दोनों के योग संख्यात भाग न्यूनाधिक है।

(३) एक जीव एक समय का आहारीक है और मींडक गती

थोकड़ा नं० ८०.

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० २.)

(द्रव्य).

द्रव्य दो प्रकार के है। जीव द्रव्य और अजीव द्रव्य। जीव द्रव्य क्या संख्याता हैं ? असंख्याता हैं या अनन्ता हैं ? संख्याता, असंख्याता नही किन्तु अनन्ता है क्योंकि जीव अनन्ता है इसी वास्ते जीव द्रव्य भी अनन्ता है।

अजीव द्रव्य क्या संख्याते, असंख्याते या अनन्ते हैं ? संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं क्योंकि अजीव द्रव्य पांच है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी है। आकाश और पुद्गल के अनन्ते प्रदेश हैं और काल वर्तमान एक समय है, भूत, भविष्यापेक्षा अनन्ते समय है इस वास्ते अजीव द्रव्य अनन्ता है।

जीव द्रव्य अजीव द्रव्यके काम आते है, या अजीव द्रव्य जीव द्रव्यके काम आते है? जीव द्रव्य अजीव द्रव्य के काम नहीं आते है किन्तु अजीव द्रव्य जीव द्रव्यके काम आते है क्योंकि जीव अजीव द्रव्य को ग्रहण करके १४ बोलों उत्पन्न करते है यथा-औदारीक शरीर, वैक्रय शरीर आहारीक शरीर, तेजस शरीर, कार्मण शरीर, श्रोत्रेन्द्रीय, चक्षुरिन्द्रीय, घ्राणेन्द्रीय, रसेन्द्रीय, स्पर्शेन्द्रीय मन योग, वचन योग, काय योग श्वासोश्वास, एव बोल।

अजीव द्रव्य के नारकी का नेरीया काम में आते है या अजीव द्रव्य नारकी के नेरीये के काम आते है ? अजीव द्रव्य के नारकी काम में नहीं आते है परन्तु नारकी के अजीव द्रव्य काम

में आते हैं। यावत् ग्रहण करके १२ बोल निपजावे औदारीक शरीर, आहारीक शरीर वर्जे के इसी माफक १३ दंडक देवताओं का भी समझ लेना और पृथ्वीकाय अजीव द्रव्य को ग्रहण करके ६ बोल निपजावे। ३ शरीर, १ स्पर्शेन्द्री, १ काय योग, १ श्वासोश्वास। इसी तरह अपकाय तेउकाय और वनस्पतिकाय भी समझ लेना तथा वायुकाय में ७ बोल कहना याने वैक्रिय शरीर अधिक कहना और बेइन्द्री में ८ बोल शरीर ३ इन्द्री २ योग २ और श्वासोश्वास। तेरिन्द्री में ९ बोल। इन्द्री एक बधी घाणेन्द्री एवं ९। चौरिन्द्रीमें १०। इन्द्री एक बधी चक्षु। तिर्यञ्च पंचेन्द्री में १३ बोल शरीर ४ इन्द्री ५ योग ३ और श्वासोश्वास एवं १३ और मनुष्य में सम्पूर्ण १४ बोल उत्पन्न करे। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।
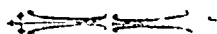
थोकडा नं० ८१

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ०–२.)

(स्थितास्थित).

हे भगवान्! जीव औदारिक शरीरपणे जो पुद्गल ग्रहण करते हैं वे क्या "ठिया" स्थित-याने अकम्प पुद्गल ग्रहण करें या "अठिया" कम्पायमान पुद्गल ग्रहण करे? गौतम! अकंप पुद्गल भी ले और कंपायमान पुद्गल भी ले. यदि स्थित पुद्गल ले तो क्या द्रव्य से ले, क्षेत्र से ले, काल से ले या भावसे ले? अगर द्रव्य से ले तो अनन्त प्रदेशी क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाह्या, काल से एक समय दो तीन यावत् असंख्यात समय की स्थिती

का, भाव से ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्शवाले पु० को लेवे, अगर वर्ण का लेवे तो एक गुण काला दो तीन यावत् अनन्त गुण काला का लेवे एवं १३ बोल वर्णादि २० बोल में लगाने से भाव के २६० भांगा, और स्पर्श किया हुवा १, अवगाह्या २, अणन्तर अवगाहा ३, अणुवा ४, बादर ५, उर्ध्वदिशीका ६, अधोदिशीका ७, तीर्यगदिशीका ८, आदिका ९, मध्यका १०, अन्तका ११, अणुपूर्वी १२, सविषय १३, निर्व्याघात ६ दिशा व्याघाताश्रीय स्यात् तीन दिशी च्यार दिशी पांच दिशी १४, एवं द्रव्यका १, क्षेत्रका १ कालका १२, भावका २६०, और स्पर्शादि १४, कुल २८८ बोल का पुद्गल औदारिक शरीर पणे ग्रहण करे एवं वैक्रिय, आहारिक परन्तु नियमा छे दिशीका लेवे, कारण दोनो शरीर त्रसनाली में है, और तेजस शरीर की व्याख्या औदारीक शरीर माफिक करना तथा कार्मण शरीर च्यार स्पर्शवाले होनेसे ५२ बोल कम करने से द्रव्यादि २३६ बोलका पुद्गल ग्रहण करे,

जीव श्रोत्रेन्द्रीय पणे २८८ बोलों वैक्रिय शरीर की माफिक नियमा छे दिशि का पुद्गल ग्रहण करे एवं चक्षु, घ्राण, रसेन्द्री भी समझना, स्पर्शेन्द्री औदारिक शरीर की माफिक समझना।

मन वचन पणे कार्मण शरीर कि माफिक चौफरसी पुद्गल ग्रहण करे। परन्तु त्रसनाली में होने से नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे और काययोग तथा श्वासोश्वास औदारीक शरीर की माफिक २८८ बोलका पुद्गल ग्रहण करे, व्याघाताश्रीय ३-४-५ दिशी का और निर्व्याघात आश्रीय नियमा ६ दिशीका पु० ग्रहण करे, इति। समुच्चय जीव उपर चौदा (५ शरीर ५ इन्द्रीय ३ योग, १ श्वासोश्वास) बोल कहा इसी को अब प्रत्येक दंडक पर लगाते हैं।

नारकी, देवताओं में १२ बोल पावे (आहारीक औदारीक

वर्जके) समुच्चयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का समझना।

पृथ्वी, अप, तेउ और वनस्पति में ६ बोल (शरीर, ३ इन्द्रिय, १ काय १ श्वासोश्वास १) पावे और समुच्चयवत् बोलों का पुद्गल ग्रहण करे, परन्तु दिशी में स्यात् ३-४-५ दिशी निर्व्याघात नियमा ६ दिशी का पुद्गल ले एवं वायुकाय परन्तु वैक्रिय शरीर अधिक है, और वैक्रिय शरीर पुद्गल नियमा छे दिशी का लेवे।

बेरिन्द्री में ८ तेरिन्द्री में ९ चौरिन्द्री में १० सर्व समुच्चयवत् समझना परन्तु नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय १३ बोल (आहारक वर्ज के) और मनुष्य में १४ बोल पावे। सर्वाधिकार समुच्चयवत् २८८ बोल का पुद्गल ग्रहण करे परन्तु नियमा छे दिशी का ले क्योंकि १९ दंडकों के जीवों केवल त्रसनाली में ही होते हैं इसलिये नियमा छे दिशी का पुद्गल ग्रहण करे शेष ५ दडक स्थावरों को सर्व लोक में है वास्ते स्यात् ३-४-५ दिशीका पु० ले। यह लोकके अन्त आश्रीय है। इस थोकडे को ध्यान पूर्वक विचारो।

सेवंभते सेवंभते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ८२.

[श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ३.]

(संस्थान).

संस्थान-आकृती को कहते हैं जिसके दो भेद हैं जीव

संस्थान समचौरसादि छे भेद और अजीव संस्थान परिमंडलादि छे भेद है। यहां पर अजीव संस्थान के भेद लिखते हैं-(१) परिमंडल संस्थान जो चूडी के आकार होता है (२) वट्ट संस्थान गोल लड्डू के आकार (३) त्रस-सिंघोडे के आकार (४) चौरस चोकीके आकार (५) आयतन लम्बा आकार (६) अनवस्थित इनपांचों से विपरीत हो। परिमंडल संस्थान के द्रव्य क्या संख्याते, असंख्याते या अनन्ते है? संख्याते असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं एव यावत् अनवस्थितादि छेओं संस्थान के द्रव्य अनन्ते है।

परिमंडल संस्थान के प्रदेश क्या संख्याते, असंख्याते, या अनन्ते है? संख्याते असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते हैं। यावत् अनवस्थितादि छेओं संस्थान के कहना। अब इन छओं संस्थानों की द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व कहते हैं:—

(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान के द्रव्य
(२) वट्ट संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा
(३) चौरस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(४) त्रस संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(५) आयतन संस्थान के द्रव्य संख्यात गुणा.
(६) अनवस्थित संस्थान के द्रव्य असंख्यात गुणा

प्रदेशापेक्षा संस्थानों की अल्पाबहुत्व भी इसी माफिक समझ लेना। अब द्रव्य प्रदेशापेक्षा दोनोंकी शामिल अल्पाबहुत्व कहते हैं—(१) सब से थोडा परिमंडल संस्थान का द्रव्य (२) वट्ट द्रव्य सं० गुणा० (३) चौरस द्रव्य सं० गुणा० (४) त्रस द्रव्य सं० गुणा० (५) आयतन द्रव्य सं० गुणा० (६) अनवस्थित द्रव्य असं० गुणा० (७) परिमंडल प्रदेश असं० गुणा० (८) वट्ट प्रदेश सं० गुणा० (९) चौरस प्रदेश सं० गुणा० (१०) त्रस

प्रदेश सं० गुणा० (११) आयतन प्रदेश सं० गु० (१२) अन्य स्थित प्रदेश असं० गुणा० इति ।

सेवंभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० ८३.

[श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ३.]

(संस्थान.)

संस्थान पांच प्रकार के होते हैं-यथा परिमंडल० वट्ट० त्रस० चौरस० आयतन परिमंडल संस्थान क्या संख्याते, असंख्याते या अनंते हैं ? संख्याते, असंख्याते नहीं किन्तु अनन्ते है एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना ।

रत्नप्रभा नारकी में परिमंडल संस्थान अनन्ते है, एव यावत् आयतन संस्थान भी अनन्ते है, इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रेवेक, ५ अनुत्तर वैमान और सिद्धशिला, पृथ्वी एव ३५ बोलों में पांचों संस्थान अनन्ते अनन्ते हैं, पैंतीस को पांच गुणा करने से १७५ भांगा हुवा ।

एक यवमध्य परिमंडल संस्थानमें दूसरे परिमंडल संस्थान कितने है ? अनन्ते है एव यावत् आयतन संस्थान भी अनन्त कहना, इसी तरह एक यवमध्य परिमंडल की माफिक शेष वट्टादि चारों संस्थानों की व्याख्या करनी एक संस्थान में दूसरे पांचो संस्थान अनन्ते है इसलिये पांचको पांचका गुण करनेसे २५ बोल हुवे, पूर्ववत् नरकादि ३५बोलोंमें ५-२५ बोल पावे एवं कुल ८७५ भांगा हुवा और १७५पहिलीका सब मिलके १०५०भांगा हुवा।

सेवंभंते सेवंभंते सच्चम् ।

थोकड़ा नं० ८४.

(श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३)

(संस्थान).

पुद्गल परमाणु के एकत्रित होने से अजीव का संस्थान (आकार) बनता है उसी का सविस्तार वर्णन करेंगे कि कितने २ परमाणु इकठ्ठे होने से कौन २ से संस्थानकी उत्पत्ति होती है।

परिमंडल संस्थान के दो भेद होते हैं, परतर और घन। जो परतर परिमंडल संस्थान है वह जघन्य से जघन्य २० प्रदेश का होता है और अवगाहना भी २० आकाश प्रदेश की होती है। उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी और असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाही होता है और घन परिमंडल संस्थान जघन्य ४० प्रदेशी और ४० आकाश प्रदेश अवगाही होता है, और उत्कृष्ट अनन्त प्रदेशी असंख्याते आकाश प्रदेश अवगाहते हैं, शेष यंत्र से समझना:—

संस्थान.	परतर.		घन.	
	ओज प्रदेशी	जुम प्रदेशी	ओज प्रदेशी	जुम प्रदेशी
वट्ट संस्थान	५	१२	७	३२
त्र्यंस ,,	३	६	४	३५
चौरंस ,,	४	९	८	२७
आयत ,,	१५	६	४५	१२

नोट—*आयतन का तीसरा भेद श्रेणी है उन के उज प्रदेशी १ प्रदेशी है जुम प्रदेशी २ प्रदेशी हैं।

जघन्य जितने प्रदेश का संस्थान होता है उतनाही आकाश प्रदेश अवगाहता है और उत्कृष्ट प्रदेश सब संस्थान अनन्त प्रदेशी है और असंख्याता आकाश प्रदेश अवगाहते हैं। इति।

सेवंभते सेवभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ८५.

श्री भगवती सूत्र श० १८—उ० ४.

(जुम्मा)

लोक में जो जीव अजीव पदार्थ हैं वह द्रव्य और प्रदेशापेक्षा कितने २ हैं उनकी गिणती करने के लिये यह संख्या बांधी है।

गौतम स्वामी भगवान से पूछते हैं कि हे भगवान! जुम्मा कितने प्रकार के हैं? गौतम! चार प्रकार के हैं. यथा=कुडजुम्मा. तेउगा जुम्मा, दावरजुम्मा, और कलउगा जुम्मा। जैसे किसी एक रासी में से चार चार निकालने पर शेष ४ बचे उसे कुडजुम्मा कहते हैं। इसी तरह चार २ निकालते हुवे शेष ३ बचे उसे तेउगा जुम्मा कहते हैं। अगर चार २ निकालने पर शेष २ बचे तो दावरजुम्मा, कहते हैं और एक बचे तो कलउगा जुम्मा, कहते हैं। नारकी के नेरिया क्या कुडजुम्मा है, यावत् कलउगा जुम्मा है? जघन्य पदे कुडजुम्मा, उत्कृष्ट पदे तेउगा. मध्यम पदे चारों भांगा पावे। इसी तरह १० भुवनपती १ तीर्यंच पंचेन्द्री,

१ मनुष्य, १ व्यंतर, १ ज्योतिषी और वैमानिक एवं १६ दंडक समझ लेना। पृथ्वीकाय जघन्य पदे कुडजुम्मा, उत्कृष्ट पदे दावर जुम्मा और मध्यम पदे चारों भांगा पावे। इसी तरह अप, तेउ, वायु, बेरिन्द्री, तेरिन्द्री और चौरिन्द्री भी समझ लेना। वनस्पति जघन्य उत्कृष्ट पदे अपदा मध्यम पदे चारों भांगा पावे एवं सिद्ध भगवान भी समझना

पनरह दंडक की स्त्री (मनुष्य १, तीर्यंच १, देवता १३) जघन्य उत्कृष्ट पदे कुड जुम्मा, और मध्यम पदे चारों भांगा।

॥ इति ॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकड़ा नं० ८९.

(श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ३.)

(संस्थान जुम्मा)

हे भगवान! एक परिमंडल संस्थान द्रव्यापेक्षा क्या कुड जुम्मा है यावत कल्डगा जुम्मा है? गौतम! कल्डगा जुम्मा है, शेष कुडजुम्मादि तीन बोल नहीं पावे। एवं वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझना क्योंकि एक द्रव्यका प्रश्न है इस लिये कल्डगा जुम्मा ही होवे।

घणा परिमंडल संस्थान के प्रश्नोत्तर में पहिले इनके दो भेद बताये हैं समुच्चय सर्व, और अलग अलग। समुच्चय अपेक्षा परिमंडल संस्थान कीसी समय कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कल्डगा है और अलग अलग की अपेक्षा से कीसी भी

समय पूछो एक कलउग जुम्मा मिलेगा शेष ३ बोल नहीं. एवं वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी समझ लेना।

हे भगवन्! एक परिमंडल संस्थान के प्रदेश क्या कुड जुम्मा है यावत् कलउगा है? गौतम! स्यात् कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलउगा जुम्मा है। घणा परिमंडल की पुच्छा समुचय की अपेक्षा स्यात् कुडजुम्मा है यावत् स्यात् कलयुग जुम्मा है और अलग अलग की अपेक्षा कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एवं वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन भी कहना।

हे भगवन्! क्षेत्रापेक्षा एक परिमंडल संस्थान क्या कुड जुम्मा प्रदेश क्षेत्र अवगाह्य है यावत् कलयुग जुम्मा प्रदेश क्षेत्र अवगाह्य है? गौतम! कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष ३ बोल नहीं एव एक वट्ट संस्थान स्यात् कुडजुम्मा, तेउगा और कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है। दावर जुम्मा नहीं, और एक त्रस सस्थान स्यात् कुडजुम्मा तेउगा, और दावरजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष कलयुगा नहीं, और चौरस सस्थान स्यात् कुड-जुम्मा, तेउगा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है। दावर जुम्मा नहीं और आयतन सस्थान स्यात कुडजुम्मा, तेउगा, दावरजुम्मा अवगाह्या है, कलयुगा नहीं।

घणा परिमंडल सस्थानकी पृच्छा--समुचय आश्रीय कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है एवं शेष घणा चार संस्थानों की अपेक्षा भी कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है कारण पांचों सस्थान पूर्ण लोक व्याप्त हैं सो लोक कुडजुम्मा प्रदेशी है और अलग २ घणा परिमंडल संस्थानों की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, प्रदेश अवगाह्य है। घणा वट्ट संस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुड-जुम्मा, घणा तेउगा, घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है। घणा त्रस

संस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, घणा तेउगा, घणा द्वावरजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है। घणा चौरस संस्थान अलग २ की अपेक्षा (वट्टवत्) घणा कुडजुम्मा, तेउगा, कलयुग प्रदेश अवगाहा है, और अलग २ घणा आयतन संस्थान घणा कुड-जुम्मा प्रदेश यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाहा है।

हे भगवान्! एक परिमंडल संस्थान कालापेक्षा क्या कुड-जुम्मा समयकी स्थितिवाला है ? यावत् कलयुगा समयकी स्थितिवाला है. ? गौतम स्यात् कुडजुम्मा समयकी स्थितिवाला है एवं यावत् स्यात् कलयुगा समयकी स्थितिवाला है। इसी तरह वट्ट, त्रस, चौरस और आयतन संस्थान भी चारों बोलोंके समयकी स्थितिवाला कहना। घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा, समुच्चय आश्रीय स्यात् कुडजुम्मा, एवं यावत् स्यात् कलयुगा समयकी स्थितिके कहने और अलग २ की अपेक्षा भी इसी तरह घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा समयकी स्थितिका कहना। एवं शेष वट्ट, त्रस, चौरस और आयतनकी भी व्याख्या परिमंडलवत् करनी।

हे भगवान एक परिमंडल संस्थान आश्राश्रीय काला गुणके पर्यवापेक्षा क्या कुडजुम्मा है ? यावत् कलयुगा है ? गौतम! स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है। एवं यावत् आयतन संस्थान भी समझना। घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा, समु-च्चयाश्रीय स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा घणा कुडजुम्मा है यावत् घणा कलयुगा है कहना। एवं यावत् आयतन संस्थान भी कहना। यह एक काले वर्णकी अपेक्षा कहा है। इसी तरह ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्शकी पांचों संस्थानों कह देना ॥ इति ॥

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० ८७

[श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ३.]

(श्रेणी)

आकाश प्रदेशकी पंक्तिको श्रेणी कहते है। गौतमस्वामी भगवान्से प्रश्न करते है कि हे भगवान्! समुच्चय आकाश प्रदेशकी द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या संख्याती, असंख्याती, या अनन्ती है? गौतम! संख्याती, असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है। इसी तरह पूर्वादि छे दिशीकी भी कह देना। एवं समुच्चयवत् अलोकाकाशकी भी श्रेणी समझना (अनन्ती है)।

द्रव्यापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती नहीं, अनन्ती नहीं किन्तु असंख्याती है। इसी तरह छे दिशी भी समझना।

प्रदेशापेक्षा समुच्चय आकाश प्रदेशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है एव पूर्वादि छे दिशीकी भी कहना।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती है परंतु अनन्ती नहीं, एवं पूर्वादि चार दिशी कहना, परतु उंची नीची केवल असंख्याती है।

प्रदेशापेक्षा आलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा! गौतम, स्यात् संख्याती, असंख्याती अनन्ती है। परंतु पूर्वादि चार दिशीमें नियमा अनन्ती है, उची नीचीमें तीनों बोल पावे।*

* लोकालोकमें स्यात् संख्याती श्रेणी कहनेका कारण यह है कि लोकके अन्तमें लोक और अलोकका खूणा है वहापर संख्याता आकाश प्रदेश लोकालोककी अपेक्षामें है इसी वास्ते संख्याती श्रेणी कही।

संस्थान अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा, घणा तेउगा, घणा द्वापरजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है। घणा चौरस संस्थान अलग २ की अपेक्षा (वट्टवत्) घणा कुडजुम्मा, तेउगा, कल्युग प्रदेश अवगाहा है, और अलग २ घणा आयतन संस्थान घणा कुडजुम्मा प्रदेश यावत् घणा कल्युगा प्रदेश अवगाहा है।

हे भगवान्! एक परिमंडल संस्थान कालापेक्षा क्या कुडजुम्मा समयकी स्थितिवाला है? यावत् कल्युगा समयकी स्थितिवाला है. १ गौतम स्यात् कुडजुम्मा समयकी स्थितिवाला है एवं यावत् स्यात् कल्युगा समयकी स्थितिवाला है। इसी तरह वट्ट त्रस, चौरस और आयतन संस्थान भी चारों बोलोंके समयकी स्थितिवाला कहना। घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा, समुच्चय आश्रीय स्यात् कुडजुम्मा, एवं यावत् स्यात् कल्युगा समयकी स्थितिके कहने और अलग २ की अपेक्षा भी इसी तरह घणा कुडजुम्मा यावत घणा कल्युगा समयकी स्थितिका कहना। एवं शेष वट्ट, त्रस, चोरस और आयतनकी भी व्याख्या परिमंडलवत करनी।

हे भगवान एक परिमंडल संस्थान भावाश्रीय काला गुणके पर्यवापेक्षा क्या कुडजुम्मा है? यावत् कल्युगा है? गौतम! स्यात कुडजुम्मा यावत कल्युगा है। एवं यावत् आयतन संस्थान भी समझना। घणा परिमंडल संस्थानकी पृच्छा, समुच्चयाश्रीय स्यात कुडजुम्मा यावत स्यात कल्युगा है, और अलग २ अपेक्षा घणा कुडजुम्मा है यावत घणा कल्युगा है कहना। एवं यावत आयतन संस्थान भी कहना। यह एक कालेवर्णकी अपेक्षा कहा है। इसी तरह ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्शका पांचों संस्थानों कह देना ॥ इति ॥

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० ८७

[श्री भगवती सूत्र श० २५—उ० ३.]

(श्रेणी)

आकाश प्रदेशकी पंक्तिको श्रेणी कहते हैं। गौतमस्वामी भगवान्से प्रश्न करते हैं कि हे भगवान्! समुच्चय आकाश प्रदेशकी द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या संख्याती, असंख्याती, या अनन्ती है? गौतम! संख्याती, असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है। इसी तरह पूर्वादि छे दिशीकी भी कह देना। एवं समुच्चयवत् अलोकाकाशकी भी श्रेणी समझना (अनन्ती है)।

द्रव्यापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! संख्याती नहीं, अनन्ती नहीं किन्तु असंख्याती हैं। इसी तरह छे दिशी भी समझना।

प्रदेशापेक्षा समुच्चय आकाश प्रदेशके श्रेणीकी पृच्छा! गौतम! संख्याती असंख्याती नहीं किन्तु अनन्ती है एवं पूर्वादि छे दिशीकी भी कहना।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा? गौतम! स्यात् संख्याती, स्यात् असंख्याती हैं परंतु अनन्ती नहीं, एवं पूर्वादि चार दिशी कहना, परतु उंची नीची केवल असंख्याती है।

प्रदेशापेक्षा आलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा! गौतम. स्यात् संख्याती, असंख्याती अनन्ती है। परंतु पूर्वादि चार दिशीमें नियमा अनन्ती है उंची नीचीमें तीनों बोल पावे।*

---

* लोकालोकमें स्यात् संख्याती श्रेणी कहनेका कारण यह है कि लोकके अन्तमें लोक और अलोकका खुणा है वहापर संख्याता आकाश प्रदेश लोकालोककी अपेक्षासे है इसी वास्ते संख्याती श्रेणी कही।

समुच्चय श्रेणी क्या सादि सान्त है (१) सादि अनन्त है, (२) अनादि सान्त है, (३) या अनादि अनन्त है ? (४) गौतम ! अनादि अनन्त है शेष तीन भांगा नहीं, इसी तरह पूर्वादि छे दिशी भी समझ लेना ।

लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा ? गौतम ! सादि सान्त है. शेष तीन भांगा नहीं एवं छे दिशी भी समझ लेना ।

अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम ! स्यात् सादि सान्त यावत् अनादि अनन्त चारों भांगा पावे यथा—

(१) सादि सान्त-लोककी व्याघातमें ।

(२) सादि अनन्त-लोकके अन्तमें अलोककी आदि है परंतु फिर अन्त नहीं ।

(३) अनादि सान्त-अलोक अनादि है परंतु लोकके पासमें अन्त है ।

(४) अनादि अनन्त-जहां लोकका व्याघात न पडे वहां ।

पूर्व पश्चिम और उत्तर दक्षिण दिशी सादी सान्त वर्ज देना तथा उर्ध्व नीची दिशी पूर्ववत् च्यारों भांगा पावे ।

हे भगवान ! द्रव्यापेक्षा श्रेणी क्या कृडजुम्मा है ? यावत कल्युगा है ? गौतम ! कृडजुम्मा है. शेष तीन भांगा नहीं, एवं यावत् छे दिशीमें कहना, इसी तरह द्रव्यापेक्षा लोकाकाशकी श्रेणी भी समझ लेना, यावत छे दिशीकी व्याख्या कर देना एवं अलोकाकाशकी भी व्याख्या करना ।

प्रदेशापेक्षा आकाश श्रेणीकी पृच्छा, गौतम ! कृडजुम्मा है शेष तीन भांगा नहीं एवं छे दिशी ।

प्रदेशापेक्षा लोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम ! स्यात कृडजुम्मा है स्यात द्वापरजुम्मा है शेष दो भांगा नहीं, एवं

पूर्वादि चार दिशी, और उर्ध्व अधो दिशी अपेक्षा कुडजुम्मा है शेष तीन भांगा नहीं।

प्रदेशापेक्षा अलोकाकाशके श्रेणीकी पृच्छा, गौतम! स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है. एवं छे दिशी परन्तु उंची नीची दिशीमें कलयुगा वर्जके शेष ३ भांगा कहना।

श्रेणी सात प्रकारकी है (१) ऋजु (सीधी), (२) एक वंका, (३) दो वंका, (४) एक खूणावाली, (५) दो खूणावाली, (६) चक्रवाल, (७) अर्ध चक्रवाल (स्थापना)।

— Λ M L L̚ ⌒ ○
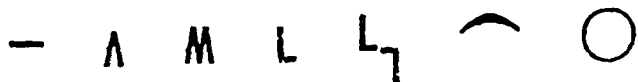
हे भगवान्! जीव अनुश्रेणी (सम) गति करे या विश्रेणी (विषम)? गौतम! अनुश्रेणी गती करे परंतु विश्रेणी गति नहीं करे इसी तरह नारकादि २४ दंडकोंके जीव समझ लेना, एवं परमाणु पुद्गल भी अनुश्रेणी करे, विश्रेणी नहीं करे, द्विप्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी भी अनुश्रेणी करे विश्रेणी न करे। इति।

॥ सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ॥

—※—

थोकडा नं० ८८

—•—

[श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४]

(द्रव्य)

द्रव्य छे प्रकारके है—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल।

हे भगवान्! धर्मास्तिकाय द्रव्यापेक्षा क्या कुडजु... कल्युगा है? गौतम! कलयुगा है शेष तीन बोल... क्योंकि धर्मास्तिकाय द्रव्यापेक्षा एक ही है एवं अधर्मास्ति... और आकाशास्तिकाय भी समझ लेना।

द्रव्यापेक्षा जीवकी पृच्छा. गौतम! कुडजुम्मा है शे... बोल नहीं एवं काल भी।

द्रव्यापेक्षा पुद्‌गलास्तिकायकी पृच्छा. गौतम! कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा चारों बोल पावे।

हे भगवान्! प्रदेशापेक्षा धर्मास्तिकाय क्या कुडजु... यावत् कल्युगा है? गौतम! कुडजुम्मा है शेष तीन बोल... एवं अधर्मास्तिकायादि छेओं द्रव्य प्रदेशापेक्षा कुडजुम्मा...

षट् द्रव्योंकी द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व—

(१) धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय द्रव्यापेक्षा परस्पर तुल्य और सबसे स्तोक है।

(२) जीव द्रव्य अनन्त गुणा (३) पुद्‌गल द्रव्य अनन्त गुणा (४) काल द्रव्य अनन्त गुणा।

षट् द्रव्योंकी प्रदेशापेक्षा अल्पाबहुत्व—

(१) धर्माधर्मास्तिकायके प्रदेश परस्पर तुल्य और स्तोक है।

(२) जीवोंके प्रदेश अनन्त गु०। (३) पुद्‌गल प्रदेश ... गुणा। (४) काल प्र० अनन्त गु०।

(५) आकाशके प्रदेश अनन्त गुणे।

प्रत्येक द्रव्यकी द्रव्य और प्रदेशापेक्षा अल्पाबहुत्व—

(१) धर्मास्तिकाय द्रव्य अपेक्षा स्तोक है धर्मास्तिकाय ... असंख्यात गुणा।

(२) अधर्मास्ति० द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश असंख्यात गुण एवं जीव और पुद्गल की। अल्पा० समझना.

(३) आकाशास्ति० द्रव्य अपेक्षा स्तोक, तस्य प्रदेश अनन्त गुणा और काल की अल्पाबहुत्व नहीं।

षद्द्रव्य के द्रव्य और प्रदेशों की अल्पा०—

(१) धर्मास्ति० अधर्मास्ति० और आकाशास्तिकाय के द्रव्य परस्पर तुल्य और सब से स्तोक।

(२) धर्माधर्मास्तिकाय के प्रदेश परस्पर तुल्य असंख्यात गुणा।

(३) जीव द्रव्य अनन्त गुणा। (४) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा।

(५) पुद्गल द्रव्य अनंत गुणा। (६) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणा।

(७) काल द्रव्य अनन्त गुणा। (९) आकाश प्रदेश अनन्त गुणा।

हे भगवान्! धर्मास्तिकाय अवगाही हुई है? (गौतम) हां अवगाही है, तो क्या संख्याता, असंख्याता या अनन्ता प्रदेश अवगाहा है? संख्याता और अनन्ता नहीं किन्तु असंख्याता प्रदेश अवगाहा है, यद्यपि असंख्याता प्रदेश अवगाहा है तो वह कुडजुम्मा है, या यावत् कलयुगा है? (गौतम) कुडजुम्मा है शेष तीन बोल नहीं एवं अधर्मास्ति० आकाशास्ति० जीवास्ति० पुद्गलास्ति० और काल की भी व्याख्या करनी के केवल कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष तीन बोल नहीं।

रत्नप्रभा नारकीकी पृच्छा? गौतम) कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है, शेष ३ बोल नहीं. इसी तरह ७ नारकी, १२ देवलोक, ९ ग्रैवेक, ५ अनुत्तर वैमान १ सिद्धशिला और लोक ये ३५ बोलों की व्याख्या करनी के एक कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है शेष नहीं।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नं० ८९

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४.

(जीवों का प्रमाण.)

इस थोकडे में सब जीवों को जुम्मा रासी कर के द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भावाश्रीय बतावेंगे।

(१) जीव द्रव्य प्रमाण।

हे भगवान! एक जीव द्रव्यापेक्षा क्या कुडजुम्मा या कल्युगा है? (गौतम) कल्युगा है, क्योंकि एक जावाश्रीय प्रश्न है इस लिए एवं २४ दंडक और सिद्ध के भी एक जीवाश्रीय कल्युगा ही कहना।

घणा जीवों की अपेक्षा क्या कुडजुम्मा है? यावत कल्युगा है? (गौतम) घणा जीवों की गणती का दो भेद है एक समुचय दूसरा अलग २. जिस में समुचय की अपेक्षा तो कुडजुम्मा है, शेष ३ भांगा नहीं और अलग २ की अपेक्षा कल्युगा है शेष ३ भांगा नहीं।

घणा नारकों की पृच्छा? (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात कुडजुम्मा यावत स्यात कल्युगा है, और अलग २ की अपेक्षा कल्युगा है शेष ३ भोल नहीं, एवं २४ दंडक और सिद्ध भी समजलेना।

(२) जीव प्रदेश प्रमाण.

हे भगवान! प्रदेशापेक्षा एक जीव क्या कुडजुम्मा है यावत कल्युगा है? (गौतम) प्रदेश दो प्रकार के है, एक जीव प्रदेश

और दूसरा शरीर प्रदेश, जिसमें जीव प्रदेश तो कुडजुम्मा है शेष ३ भांगा नहीं, और शरीर प्रदेश स्यात् कुडजुम्मा है यावत् कलयुगा है एवं २४ दंडक भी समजना। एक सिद्ध के प्रदेश की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नहीं है. और जीव प्रदेश अपेक्षा कुडजुम्मा है, शेष नहीं.

घणा जीवों के प्रदेशाश्रीय पृच्छा ? (गौतम) जीवों अपेक्षा समुचय कहो या अलग २ कहो कुडजुम्मा प्रदेश है, शेष ३ भांग नहीं और शरीरापेक्षा समु० स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा। और अलग २ अपेक्षा कुडजुम्मा भी यावत् कलयुगा भी घणा। एवं नरकादि २४ दंडकों में भी समझलेना।

घणा सिद्धों की पृच्छा ? (गौतम) शरीर प्रदेश नही है, और जीवोंके प्रदेशापेक्षा समुचय और अलग २ में सब टिकाणे कुडजुम्मा प्रदेश कहना शेष ३ भांगा नहीं।

(३) क्षेत्रापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान्! समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है यावत् कलयुग प्रदेश अवगाह्य है ? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है यावत स्यात कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है, एव २४ दंडकों और सिद्ध की भी व्याख्या करनी।

घणा जीव की पृच्छा ? (गौतम) समुचय तो कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है. क्योंकि जीव सर्व लोक में है और लोकाकाश कुडजुम्मा प्रदेशी है. अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्य है. यावत घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है।

घणा नारकी की पृच्छा ? (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है और अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् घणा कलयुगा प्रदेश अवगाह्य

है एवं एकेन्द्री वर्ज के यावत् वैमानिक और सिद्धोंकी व्याख्या करनी और एकेन्द्रीय समुचय जीववत् कहना।

(४) कालापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान् ! समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा समय स्थिति वाला है यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाला है? (गौतम) कुडजुम्मा स्थितीवाला है, क्योंकि काल का समय कुडजुम्मा है और जीव सब काल में शाश्वता है।

एक नारकी के नेरिये की पृच्छा! (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति का है एवं २४ दंडक और सिद्ध समुचय जीव की माफिक समझना।

घणा जीव की पृच्छा! (गौतम) समुचय और अलग २ कुडजुम्मा समय की स्थिति वाले है शेष बोल नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा! (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय की स्थिति वाले है और अलग २ अपेक्षा कुडजुम्मा घणा यावत् घणा कलयुगा समय की स्थिति वाले है एवं २४ दंडकों और सिद्ध समुचयवत।

(५) भावापेक्षाप्रमाण

हे भगवान! समुचय एक जीव काला गुण पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है? (गौतम) जीव, प्रदेशापेक्षा पर्याय नहीं है. और शरीर प्रदेशापेक्षा स्यात कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा पर्याय वाला है. एवं २४ दंडकों और सिद्धों में शरीर नहीं।

समुचय घणा जीव की पृच्छा! (गौतम) जीवों के प्रदेशापेक्षा पर्याय नहीं है और शरीरापेक्षा स्यात कुडजुम्मा यावत् कलयुगा पर्याय वाले है. एवं २४ दंडकों का समझ लेना और

काले वर्ण की व्याख्या के माफिक शेष वर्ण ५ गंध, २ रस, ५ स्पर्श आठ एवं २० बोलों की व्याख्या समझ लेना।

(६) ज्ञानपर्यवापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान्! समुचय एक जीव मतिज्ञान की पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा है; यावत् कलयुगा है? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एव एकेन्द्रीय वर्ज के शेष १९ दंडकों समझ लेना। एकेन्द्रीय में मतिज्ञान नहीं है ओर इसी तरह घणा जीवोंपेक्षा समुचय और अलग २ की व्याख्या भी करदेनी, एवं श्रुतज्ञान भी समझना और अवधीज्ञान की व्याख्या भी इसी तरह करदेना परन्तु १९ दंडक की जगह १६ दडक कहना क्योंकि पांच स्थावर के सिवाय तीन विकलेन्द्री में भी अवधीज्ञान नहीं होता है और मनः पर्यव ज्ञान की भी व्याख्या मतिज्ञानवत् करनी परन्तु मनुष्य दंडक सिवाय अन्य दंडक में मन पर्यव ज्ञान नहीं है इस लिये एक ही दडक कहना। केवल ज्ञान की पृच्छा? (गौतम) कुड जुम्मा पर्याय है शेष तीन बोल नहीं एवं घणा जीव समुचय और अलग २ की भी व्याख्या करदेनी।

मति अज्ञान श्रुत अज्ञान में २४ दडक और विभग ज्ञान में १६ दंडक चक्षुदर्शन में १७ दंडक, अचक्षुदर्शन में २४ दंडक और अवधी दर्शन में १६ दंडक इन सबकी व्याख्या मतिज्ञानवत् समझनी, और केवलदर्शन केवलज्ञानकी माफिक यह थाकडा खूब दीर्घद्रष्टि से विचारने लायक है. धर्म ध्यान इसी को कहते हैं, द्रव्यानुयोग में उपयोग की तिव्रता होने से कर्मों की बडी भारी निर्जरा होती है. इस लिये मोक्षाभिलाषियों को हमेशा इस बात की गवेषणा करनी चाहिये। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम्।

है एवं एकेन्द्री वर्ज के यावत् वैमानिक और सिद्धोंकी व्याख्या करनी और एकेन्द्रीय समुचय जीववत् कहना।

(८) कालापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान्' समुचय एक जीव क्या कुडजुम्मा समय स्थिति वाला है यावत् कल्युगा समय की स्थिति वाला है? (गौतम) कुडजुम्मा स्थितीवाला है, क्योंकि काल का समय कुडजुम्मा है और जीव सब काल में शाश्वता है।

एक नारकी के नेरिये की पृच्छा! (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत कल्युगा समय की स्थिति का है एवं २४ दंडक और सिद्ध समुचय जीव की माफिक समझना।

घणा जीव की पृच्छा' (गौतम) समुचय और अलग २ कडजुम्मा समय की स्थिति वाले है शेष बोल नहीं।

घणा नारकी की पृच्छा' (गौतम) समुचय स्यात कुडजुम्मा यावत कल्युगा समय की स्थिति वाले है और अलग २ अपेक्षा कडजुम्मा घणा यावत घणा कल्युगा समय की स्थिति वाले है एवं २४ दंडकों और सिद्ध समुचयवत।

• भावापेक्षाप्रमाण

हे भगवान्' समुचय एक जीव काला गुण पर्यायापेक्षा क्या कडजुम्मा यावत कल्युगा है? (गौतम) जीव, प्रदेशापेक्षा पर्याय नहीं है और शरीर प्रदेशापेक्षा स्यात कुडजुम्मा यावत स्यात कल्युगा पर्याय वाला है एवं २४ दंडकों और सिद्धों के शरीर नहीं।

समुचय घणा जीव की पृच्छा' (गौतम) जीवों के प्रदेशापेक्षा पर्याय नहीं है और शरीरापेक्षा स्यात कुडजुम्मा यावत कल्युगा पर्याय वाले है, एवं २४ दंडकों का समझ लेना और

काले वर्ण की व्याख्या के माफिक शेष वर्ण ५ गंध, २ रस. ५ स्पर्श आठ एवं २८ बोलों की व्याख्या समझ लेना।

(६) ज्ञानपर्य.वापेक्षा प्रमाण.

हे भगवान्! समुचय एक जीव मतिज्ञान की पर्यायापेक्षा क्या कुडजुम्मा है. यावत कलयुगा है? (गौतम) स्यात् कुड जुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा है, एव एकेन्द्रीय वर्ज के शेष १९ दंडकों समझ लेना। एकेन्द्रीय में मतिज्ञान नहीं है ओर इसी तरह घणा जीवोंपेक्षा समुचय और अलग २ की व्याख्या भी करदेनी, एवं श्रुतज्ञान भी समझना और अवधीज्ञान की व्याख्या भी इसी तरह करदेना परन्तु १९ दंडक की जगह १६ दडक कहना क्योंकि पांच स्थावर के सिवाय तीन विकलेन्द्री में भी अवधीज्ञान नहीं होता है और मनः पर्यव ज्ञान की भी व्याख्या मतिज्ञानवत् करनी परन्तु मनुष्य दंडक सिवाय अन्य दंडक में मन पर्यव ज्ञान नहीं है इस लिये एक ही दडक कहना। केवल ज्ञान की पृच्छा ? गौतम) कुड जुम्मा पर्याय है शेप तीन बोल नहीं एवं घणा जीव समुचय और अलग २ की भी व्याख्या करदेनी।

मति अज्ञान श्रुत अज्ञान में २४ दंडक और विभग ज्ञान में १६ दंडक चक्षुदर्शन में १७ दंडक, अचक्षुदर्शन में २४ दंडक और अवधी दर्शन में १६ दंडक इन सबकी व्याख्या मतिज्ञानवत् समझनी, और केवलदर्शन केवलज्ञानकी माफिक यह थोकडा खूब दीर्घद्रष्टि से विचारने लायक है. धर्म ध्यान इसी को कहते हैं, द्रव्यानुयोग में उपयोग की तिव्रता होने से कर्मो की बडी भारी निर्जरा होती है. इस लिये मोक्षाभिलाषियों को हमेशा इस बात की गवेषणा करनी चाहिये। इति।

सेवभंते सेवंभंते तमेव सचम्।

थोकड़ा नं० ९०.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४.

(जीव कंपाकंप.)

हे भगवान्! समुचय जीव क्या कंपायमान है या अकंप है? (गौतम) जीव दो प्रकार के है। एक सिद्धोंके और दूसरे संसारी जिसमें सिद्धों के जीव दो प्रकार के हैं, एक अणंतर (जो एक समय का) सिद्धा और दूसरा परंपर (बहुत समय का) सिद्धा. जो परम्पर सिद्ध है वे अकंप है और अणंतर सिद्ध है वे कंपायमान है अगर कंपायमान है तो क्या देश (एक हिस्सा) कंपायमान है या सर्व कंपायमान है? देश कंपायमान नहीं है किन्तु सर्व कंपायमान है क्योंकि मोक्ष जाता हुआ जीव रस्ते में सर्व प्रदेशों से चलता है।

संसारी जीव दो प्रकार के है एक शलेश प्रतिपन्न (चौदवें गुणस्थानवर्ती) और दूसरा अशलेश (पहिले से तेरवें गुणस्थान तक के) जिस में शलेश प्रतिपन्न है वह अकंप है, और अशलेश है वह कंपायमान है? अगर कंपायमान है तो क्या देश कंपायमान है या सर्व कंपायमान है. देश कंपायमान भी है और सर्व कंपायमान भी है। जैसे हाथ हिलाना यह देश कंपायमान या आयु सर्व प्रदेशों से गती आगती करता है सो सर्व है।

नारकी के नेरीयों की पृच्छा? (गौतम) देशकंप भी है और सर्व कंपा भी है कारण नारकी दो प्रकार के है, एक परभव जाने वाले, और दूसरे वर्तमान अवस्थित देशकंप है, इसी माफिक भुवनपति १० स्थावर, ५ विकलेन्द्री. तीन (, मनुष्य. १ व्यन्तर १ जोतिषी और वैमानिक भी समझ लेना। इति।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ६१.

श्री भगवती सूत्र श० २५–उ० ४.

(पुद्गलों की अल्पावहुत्व.)

पुद्गल-परमाणु संख्यातप्रदेशी, असंख्यातप्रदेशी और अनन्तप्रदेशी स्कध इनकी द्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा बहुत्व कहते है—

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कध के द्रव्य है।
(२) परमाणु पुद्गल के द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) सख्यातप्रदेशी के द्रव्य संख्यात गुणे।
(४) असख्यातप्रदेशी के द्रव्य असंख्यात गुणे।

प्रदेशापेक्षा भी अल्पाबहुत्व इसी माफिक (द्रव्यवत्) समझलेना।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पावहुत्व.)

(१) सब से स्तोक अनन्तप्रदेशी स्कध के द्रव्य।
(२) तस्य प्रदेश अनंत गुणे।
(३) परमाणु पुद्गल के द्रव्य प्रदेश अनंत गुणे।
(४) संख्यात प्रदेशी स्कंध के द्रव्य संख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे।
(६) असख्यात प्रदेश स्कंध के द्रव्य असंख्यात गुणे!
(७) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे।

क्षेत्रापेक्षा अल्पावहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक आकाश प्रदेश अवगाहा द्रव्य।

(२) संख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य संख्यात गुणे ।
(३) असंख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफिक प्रदेश की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना।
(१) सब से स्तोक एक प्रदेश अवगाह द्रव्य और प्रदेश।
(२) संख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य संख्यात गुणे।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे।
(४) असंख्यात प्रदेश अवगाह द्रव्य असंख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे।

कालापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक समय की स्थिति के द्रव्य।
(२) संख्यात समय स्थिति के द्रव्य संख्यात गुणे।
(३) असंख्यात समय स्थिति के द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफिक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेना।
(१) सब से स्तोक एक समय की स्थिति के द्रव्य और प्रदेश।
(२) संख्यात समय की स्थिति के द्रव्य संख्यात गुणे।
(३) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे।
(४) असंख्यात समय की स्थिति के द्रव्य असंख्यात गुणे।
(५) तस्य प्रदेश असंख्यात गुणे।

भावापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सब से स्तोक अनन्त गुण काले पुद्गलों के द्रव्य।
(२) एक गुण काला पुद्गल द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) संख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य संख्यात गुणे।
(४) असंख्यात गुण काला पुद्गल द्रव्य असंख्यात गुणे।
इसी माफिक प्रदेशों की भी अल्पाबहुत्व समझ लेनी।
(१) सब से स्तोक अनन्त गुण काले के द्रव्य।

(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) एक गुण काला द्रव्य और प्रदेश अनन्त गुणे ।
(४) संख्यात प्रदेश काले० पु० द्रव्य सं० गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश संख्यात गुणे ।
(६) असं० प्रदेश काले० पु० द्रव्य असंख्यात गुणे ।
(७) तस्य प्रदेश अस० गुणे ।

इसी माफिक ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष,) एवं १६ बोलों की व्याख्या काले वर्णवत् तीन तीन अल्पाबहुत्व करनी ।

कर्कश स्पर्श की अल्पावहुत्व.

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश का द्रव्य ।
(२) सं० गु० कर्कश द्रव्य सं० गु०
(३) अस गु० कर्कश द्रव्य असं गु ।
(४) अनंत गुणा कर्कश द्रव्य अनंत गुणे ।

कर्कश स्पर्श प्रदेशापेक्षा अल्पा०

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश के प्रदेश ।
(२) सं गुणा कर्कश के प्रदेश अस० गुणे ।
(३) अस० गुणा कर्कश के प्रदेश असं० गुणे ।
(४) अनंत गुणा कर्कश के प्रदेश अनंत गुणे ।

कर्कश० द्रव्य प्रदेशापेक्षा अल्पा० ।

(१) सब से स्तोक एक गुण कर्कश के द्रव्य प्रदेश ।
(२) सं० गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य स० गुणे ।
(३) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।
(४) असं० गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य अस० गुणे ।
(५) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।

(६) अनंत गुणा कर्कश पुद्गल द्रव्य अनंत गुणे ।

(७) तस्य प्रदेश अनंत गुणे ।

इसी माफिक मृदुल, गुरु, लघु भी समझ लेना । कुल १[illegible] अल्पाबहुत्व हुई । ३ द्रव्य की, ३ क्षेत्र की, ३ काल की, और १[illegible] भाव की ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

—※—

थोकडा नं० ९२.

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४.

१) द्रव्य प्रदेशापेक्षा पुच्छा ।

हे भगवान ! एक परमाणु पुद्गल द्रव्यापेक्षा क्या कृडजुम्मा है यावत कल्युगा है ? गौतम ! कल्युगा है, शेष तीन भांगा नहीं एवं यावत अनंत प्रदेशी स्कन्ध द्रव्यापेक्षा कल्युगा है ।

घणा परमाणु पुद्गल की द्रव्यापेक्षा पृच्छा ? गौतम ! समुच्चयापेक्षा स्यात् कृडजुम्मा स्यात् च्यारों भांगा पावे, अलग २ की अपेक्षा केवल कल्युगा शेष ३ भांगा नहीं एवं यावत अनंत प्रदेशी स्कन्ध भी समझना ।

एक परमाणु पुद्गल प्रदेशापेक्षा पृच्छा ! गौतम कल्युगा है शेष भांगा नहीं, एक दोयप्रदेशी स्कंधकी पृच्छा ! गौतम द्वापर जुम्मा है एक तीन प्रदेशी स्कन्ध तेउगा है, एक च्यार प्रदेशी स्कन्ध कृडजुम्मा है, एक पांच प्रदेशी स्कंध कल्युगा है, एक छे प्रदेशी स्कंध द्वापरजुम्मा है, एक सात प्रदेशी स्कन्ध तेउगा है, एक आठ प्रदेशी स्कन्ध कृडजुम्मा है, नव प्रदेशी स्कंध कल्युगा

है; दश प्रदेशी स्कध दावरजुम्मा है. शेष तीन भांगा नहीं, एक संख्यात प्रदेशी स्कंध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा एवं यावत् एक अनन्त प्रदेशी स्कंध में भी चारों भांगा समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पुच्छा! (गौतम) समुचयापेक्षा स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा है, और अलग २ अपेक्षा कल-युगा है. शेष तीन भागा नहीं।

घणा दो प्रदेशी स्कध की पृच्छा? गौतम! समुचयापेक्षा स्यात कुडजुम्मा तथा स्यात् दावरजुम्मा है शेष दो भांगा नहीं और अलग २ की अपेक्षा दावरजुम्मा है, शेष तीन भांगा नहीं, घणा तीने प्रदेनी स्कध समुचयापेक्ष स्यात् कुडजुम्मादि चारों भांगा पावे और अलग २ की अपेक्षा तेउगा है, घणा चार प्रदेशी स्कध समुचयापेक्षा कुडजुम्मा है. और अलग २ की अवेक्षा भी कुडजुम्मा है, शेष ३ मांगा नही, घणा पांच प्रदेशी स्कध और घणा नौ प्रदेशी स्कंध की व्याख्या परमाणु पुद्गलवत्, घणा छ' प्रदेशी और घणा दश प्रदेशी की व्याख्या दो प्रदेशीवत्. घणा सात प्रदेशी की व्याख्या तीन प्रदेसीवत् और घणा आठ प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् कह देना।

घणा सख्यात प्रदेशी स्कंध की पृच्छा? गौतम! समुचया पेक्षा स्यात् चारों भांगा पावे। और अलग २ की अपेक्षा भी चारों भांगा पावे! कुडजुम्मा भी घणा यावत् कलयुगा भी घणा एवं असख्यात प्रदेशी और अनत प्रदेशी भी समझ लेना।

(२) क्षेत्रापेक्षा पृच्छा

हे भगवान्! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह्य है? कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है शेष ३ भांगा नहीं।

एक दो प्रदेशी स्कध की पृच्छा? गौतम। स्यात दावर

जुम्मा स्यात् कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है शेष दो भांगा नहीं। एक तानीप्रदेशी स्कंध स्यात् तेउगा दावरजुम्मा और कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है. कुडजुम्मा नहीं। एक चार प्रदेशी स्कंध स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेश अवगाह्या है। एवं यावत् पांच, छ, सात आठ, नो. दश प्रदेशी संख्यात असख्यात और अनत प्रदेशी भी स्यात कुडजुम्मा यावत् कल्युगा आवगाह्या है।

घणा परमाणु पद्गल की पृच्छा ? गोतम ! समुचय कुडजुम्मा प्रदेश आवगाह्या है। कारण परमाणु सर्व लोक में है। अलग २ की अपेक्षा कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है। घणा दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? गोतम ! समुचय कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्या है और अलग २ की अपेक्षा घणा दावरजुम्मा घणा कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है। शेष दो भांगा नहीं। घणा तीन प्रदेशी स्कन्ध समुचय की अपेक्षा कुडजुम्मा प्रदेश अवगाह्या है। अलग २ की अपेक्षा घणा तेउगा दावरजुम्मा और कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है। शेष कुडजुम्मा नहीं। घणा चार प्रदेशी स्कन्ध समुचय की अपेक्षा कुडजुम्मा प्रदेश आवगाह्या है। अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत घणा कल्युगा प्रदेश अवगाह्या है एवं पांच प्रदेशी यावत अनन्त प्रदेशी की व्याख्या चार प्रदेशीवत् करनी।

(३ कालापेक्षा पृच्छा

हे भगवान ! एक परमाणु पुद्गल क्या कुडजुम्मा यावत् कल्युगा समय की स्थिति वाला है ? गौतम स्यात कुडजुम्मा यावत् कल्युगा समय की स्थिति वाला है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

घणा परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? गौतम ! समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कल्युगा समय स्थिति का है एवं अलग २ की

अपेक्षा भी घणा कुडजुम्मा यावत् कलयुगा समय कि स्थिति का है इसी माफक दो. तीन यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

(४) भावापेक्षा पृच्छा

हे भगवान्! एक परमाणु पु० कालावर्ण की पर्यायाश्रीय क्या कुडजुम्मा प्रदेशी है यावत् कलयुगा प्रदेशी है? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेशी है एव दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी भी समझ लेना, घणा परमाणु की पृच्छा? (गौतम) समुचय स्यात् कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेशी है, अलग २ की अपेक्षा घणा कुडजुम्मा यावत् कलयुगा प्रदेशी है एवं दो तीन यावत् अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या करनी. जैसे काले वर्ण का कहा इसी तरह शेष ४ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श (शीत, ऊष्ण स्निग्ध. रूक्ष.) एवं १६ बोल समझ लेना।

एक अनन्त प्रदेशी स्कध कर्कश स्पर्शाश्रीय क्या कुडजुम्मा प्रदेशी यावत् कलयुगा प्रदेशी है? (गौतम) स्यात् कुडजुम्मा यावत् स्यात् कलयुगा प्रदेशी है एवं घणा अनन्त प्रदेशी स्कंध भी समुचयापेक्षा स्यात् चारों भांगा और अलग २ अपेक्षा भी चारों भांगा (कुडजुम्मा भी घणा यावत कलयुगा भी घणा कहना) एव मृदुल गुरु लघु की भी व्याख्या करनी. ये चार स्पर्श वाले पुद्गल सख्यात. असंख्यात प्रदेशी नहीं होते किन्तु अनन्त प्रदेशी ही होते है क्योंकि ये चार स्पर्श बादर स्कंध में होते है जहां ये चार स्पर्श है वहां पूर्व कहे चार स्पर्श नियमा है. यह थोकडा दीर्घ दृष्टि से विचारने योग्य है।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

—⁂—

स्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असख्याता काल क्योंकि दो आदि प्रदेश में जाकर रहे तो असं० काल तक रहे।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? गौतम ! कम्पमान का स्वस्थान अन्तर ज० एक समय उ० असं० काल परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल क्योंकि जो परमाणु अलग हुवा है वही परमाणु अनन्त काल के पीछे अवश्य आकर मिलता है। उत्कृष्ट अनन्त काल तक अलग रहे और अकम्प की स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० आवलीका के असं० भाग परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

घणा दो प्रदेशी तीन प्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अन्तर नहीं क्योंकि बहुवचन होने से कम्पायमान और अकम्प सास्वते होते हैं।

(कम्पायमान् तथा अकम्प का अल्पा०)

(१) सब से स्तोक कम्पायमान परमाणु.
(२) अकम्पमान परमाणु असख्यात गुणा.

एवं दो प्रदेशी यावत असख्यात प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान अकम्प असख्यात गुणे

(१) सबसे स्तोक अकम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध।
(२) कम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त गुणे।

(परमाणु पु० से अनं० प्रदेशी स्कन्ध की कम्पाकम्प आश्रीयद्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा०)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अकम्प द्रव्य।
(२) अनन्त प्रदेशी कम्पायमान द्रव्य अनन्त गुणे।
(३) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य अनंत गुणे।

स्थानापेक्षा ज० एक समय उ० असख्याता काल क्योंकि दो आदि प्रदेश में जाकर रहे तो असं० काल तक रहे।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? गौतम ! कम्पमान का स्व स्थान अन्तर ज० एक समय उ० असं० काल परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल क्योंकि जो परमाणु अलग हुवा है वही परमाणु अनन्त काल के पीछे अवश्य आकर मिलता है। उत्कृष्ट अनन्त काल तक अलग रहे और अकम्प की स्वस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० आवलीका के असं० भाग परस्थानापेक्षा ज० एक समय उ० अनन्त काल एवं तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध समझ लेना।

घणा दो प्रदेशी तीन प्रदेशी यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अन्तर नहीं क्योंकि बहुवचन होने से कम्पायमान और अकम्प सास्वते होते हैं।

(कम्पायमान् तथा अकम्प का अल्पा०)

(१) सब से स्तोक कम्पायमान परमाणु.

(२) अकम्पमान परमाणु असख्यात गुणा.

एवं दो प्रदेशी यावत असख्यात प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान अकम्प असख्यात गुणे.

(१) सबसे स्तोक अकम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध।

(२) कम्पायमान अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अनन्त गुणे।

(परमाणु पु० से अन० प्रदेशी स्कन्ध की कम्पाकम्प आश्रीयद्रव्य, प्रदेश और द्रव्यप्रदेश की अल्पा०।)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का अकम्प द्रव्य।

(२) अनन्त प्रदेशी कम्पायमान द्रव्य अनन्त गुणे।

(३) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य अनंत गुणे।

(४) संख्यात प्र० कम्पायमान द्रव्य असं० गुणे ।
(५) असंख्यात प्र० ,, ,, ,, ,,
(६) परमाणु पु० अकम्प० ,, ,, ,,
(७) संख्यात प्र० ,, ,, सं० ,,
(८) असंख्यात प्र० ,, ,, असं० ,,

इसी माफक प्रदेशकी अल्पा० समझना; परन्तु परमाणु को अप्रदेशी कहना और ७ में बोल में संख्यात प्र० स्कन्ध के प्रदेश असंख्यात गुणा कहना अथ द्रव्य और प्रदेश की अल्पा० ।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध अकम्प का द्रव्य ।
(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) अनन्त प्रदेशी स्कन्ध कम्पायमान का द्रव्य अनन्त गुणे ।
(४) तस्य प्रदेश अनं० गुणे ।
(५) परमाणु पु० कम्पायमान द्रव्य प्रदेश अनं० गुणे ।
(६) संख्यात प्र० कम्पायमान द्रव्य असं० गुणे ।
(७) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।
(८) असंख्यात प्र० कम्प० द्रव्य असं० गुणे ।
(९) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।
(१०) परमाणु पु० अकम्प० द्रव्य, प्रदेश असं० गुणे ।
(११) सं० प्र० अकम्प० द्रव्य असं० गुणे ।
(१२) तस्य प्रदेश सं० गुणे ।
(१३) असं० प्र० अकम्प० द्रव्य असं० गुणे ।
(१४) तस्य प्रदेश असं० गुणे ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

[illegible]

थोकडा नं० ९४

श्री भगवती सूत्र श० २५-उ० ४

(परमाणु पुद्गल).

हे भगवान्! एक परमाणु पु० क्या सर्वकम्प है, देश कम्प है या अकम्प है? गौतम! देश कम्प नहीं है स्यात् सर्व कम्प है स्यात् अकम्प है। देशकम्प नहींहै।

दो प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा. गौतम! स्यात् देश कम्प (एक विभाग) है। स्यात् सर्व कम्प है और स्यात् अकम्प भी है एवं तीन चार यावत् अनन्त प्रदेशी की भी व्याख्या इसी तरह करनी।

घणा परमाणु की पृच्छा गौतम! देश कम्प नहीं है सर्व कम्प घणा और अकम्प भी घणा है और घणा दो प्रदेशी स्कन्ध, देश कम्प भी घणा, सर्व कम्प भी घणा, और अकम्प भी घणा, इसी तरह घणा तीन, चार यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध भी समझ लेना।

हे भगवान्! एक परमाणु पु० सर्व कम्प और अकम्प पने रहे तो कितने काल तक रहे? गौतम! कम्पायमान रहे तो ज० एक समय उ० आवलीका के असंख्यात में भाग जितना काल और अकम्प रहे तो ज० एक समय उ० अस० काल० तथा दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्पायमान और सर्व कम्पायमान पने रहे तो ज० एक समय उ० आवली के अस० भाग जितना काल और अकम्प पने रहे तो ज० एक समय उ० अस० काल एवं तीन, चार

(१) सबसे स्तोक दो प्रदेशी स्कन्ध सर्व कम्प ।
(२) दो प्रदेशी स्कन्ध देश कम्प असं० गु० ।
(३) ,, ,, अकम्प अस० गु० एव दो,

तीन यावत् असख्यात प्रदेशी स्कन्ध की भी अल्पा० दो प्रदेशीवत् अलग २ लगा लेना ।

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० स्कन्ध सर्व कम्प ।
(२) अकम्प अनन्त प्र० स्कन्ध अनन्त गुणा ।
(३) देशकम्प ,, ,, अनन्त गुणा ।

द्रव्यापेक्षा अल्पाबहुत्व.

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्रदेशी स्कन्ध का सर्वकम्प द्रव्य ।
(२) अन० प्र० अकम्प का द्रव्य अनन्त गुणा ।
(३) ,, ,, देशकम्प० ,, अनं० गु० ।
(४) असं० प्र० सर्वकम्प० ,, अनं० गु० ।
(५) स० प्र० ,, ,, अस० गु० ।
(६) परमाणु पु० ,, ,, अस० गु० ।
(७) स० प्र० देशकम्प० ,, अस० गु० ।
(८) अस० प्र० ,, ,, असं० गु० ।
(९) परमाणु पु० अकम्प० ,, अस० गु० ।
(१०) स० प्र० ,, ,, स० गु० ।
(११) असं० प्र० ,, ,, असं० गु० ।

इसी तरह प्रदेश की भी अल्पा० समझ लेना, परन्तु परमाणु को अप्रदेशी और १० में बोल में संख्यात प्रदेशी अकम्प प्र० अस० गुणे कहना ।

(द्रव्य और प्रदेश की अल्पाबहुत्व)

(१) सबसे स्तोक अनन्त प्र० सर्व कम्पका द्रव्य ।
(२) तस्य प्रदेश अनन्त गुणे ।
(३) अनं० प्र० अकम्प द्रव्य अनं० गुणे ।
(४) तस्य प्र० अनं० गुणे ।
(५) अनं० प्र० देशकम्प द्रव्य अनं० गुणे ।
(६) तस्य प्र० अनंत गुणे ।
(७) असं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य अनं० गु० ।
(८) तस्य प्र० असंख्यात गुणे ।
(९) सं० प्र० सर्वकम्प० द्रव्य असं० गु० ।
(१०) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।
(११) परमाणु पु० सर्वकम्प० द्रव्य प्र० असं० गु० ।
(१२) सं० प्र० देशकम्प० द्रव्य असं० गु० ।
(१३) तस्य प्र० संख्यात गुणे ।
(१४) असं० प्र० देशकम्प द्रव्य असं० गु० ।
(१५) तस्य प्रदेश असं० गु० ।
(१६) परमाणु पु० अकम्प द्रव्य प्रदेश असं० गु० ।
(१७) सं० प्र० अकम्प द्रव्य सं० गु० ।
(१८) तस्य प्रदेश सं० गु० ।
(१९) असं० प्र० अकम्प द्रव्य असं० गु० ।
(२०) तस्य प्रदेश असं० गु० ।

यह थोकड़ा खूब दीर्घ दृष्टी से विचारने योग्य है ।

सेवभंते सेवभंते तमेव सच्चम् ।
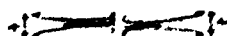
थोकडा नं० ६५

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ०-१

(पुद्गल).

सर्व लोक में पुद्गल तीन प्रकार के है. प्रयागशा, मिश्रशा और विशेशा।

दोहा-जीव गृह्या ते प्रयोगशा मिशा जीवा रहित ।
विशेषा हाथ आवें नहीं ज्ञानी भाष्या ते तहत् ॥

प्रयोगशा-जीव ने जो पुद्गल शरीरादिपने गृहण किया वह ।
मिश्रशा-जीव शरीरादि पने गृहण करके छोडे हुये पुद्गल ।
विशेषा-शीतोष्णादि पने जो स्वभाव से प्रणम्या पुद्गल ।

अब इन पुद्गलों का शास्त्रकारोने अलग २ भेद करके बतलाया है. प्रयोगशा पु० का नव दंडक कहते है जिसमें पहिले दंडक में जीव के ८१ भेद हैं, यथा सात नारकी, रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा. पंकप्रभा, धूमप्रभा तमप्रभा, तमस्तमःप्रभा १० भुवनपति-असुरकुमार, नागकु० सुवर्णकु० विद्युतकु० अग्निकु० द्वीपकु० दिशाकु० उदधिकु० वायुकु० स्तनितकुमार. ८ व्यंतर-पिशाच, भूत, जक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व. ५ ज्योतिषी-चन्द्र, सूर्य. ग्रह. नक्षत्र तारा. १२ देवलोक सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, महेन्द्र, ब्रह्म, लांतक, महाशुक्र, सहस्रार, आणत, प्राणत्, आरण, अच्युत. ग्रैवेक-भद्र, सुभद्र. सुजया, सुमाणसा, सुदर्शना, प्रियदर्शना, अमोघ, सुपडिबन्धा, यशोधरा. ५ अनुत्तर वैमान-विजय, विजयंत, जयत, अपराजित, सर्वार्थसिद्ध. ५ सूक्ष्म-पृथ्वीकाय, अप्काय. तेउकाय. वाउकाय. वनस्पतिकाय

एवं ५ बादरकाय-पृथ्वीकायादि. ३ विकलेन्द्री बेरिंद्री, तेरिंद्री, चौरिन्द्री ५ असन्नीतिर्यंच. जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरी भुजपरी, एवं ५ सन्नी तिर्यंच जलचरादि० दो मनुष्य-गर्भज और समुत्सम यह पहिले. दंडके ८१ भेद हुवे।

२) दूसरा दंडकमे जीवोंके पर्याप्ता—अपर्याप्ता के १६१ बोल है जेसे जीवोंके ८१ भेद कहा है जिस्के अपर्याप्ता के ८१ और पर्याप्ता के ८० क्योंकि समुत्सम मनुष्य पर्याप्ता नहीं होते एवं ८१ ८० मिलके १६१ भेद दूसरे दंडकका १६१ बोल हुवा

३) तीसरे दंडकमें पर्याप्ता अपर्याप्ता के शरीर ४९१ है यथा दूसरे दंडक में जो १६१ बोल कहे हैं जिसमें तीन तीन शरीर सब में पावे कारण नारकी देवता में वैक्रिय, तेजस, कार्मण शरीर है और मनुष्य तिर्यंच में औदारिक तेजस, कार्मण है इसलिये १६१ को तीन गुणा करने से ४८३ भेद हुवे तथा वायुकाय और ५ सन्नी तिर्यंच में शरीर पावे चार जिसमें तीन ३ पहिले गणचुके शेष ६ बोलों के ६ शरीर और मनुष्य में ५ शरीर है जिसमें ३ पहिले गण चुके शेष २ मनुष्य के और ६ वायु तिर्यंच के एवं ८ मिलाने से ४९१ भेद तीजे दंडक का हुवा।

(४) चौथे दंडक में जीवों की इन्द्रियों के ७१३ भेद है यथा दूसरे दंडक में १६१ भेद कह आये हैं जिसमें एकेन्द्रियके २० बोलों में २० इन्द्री विकलेन्द्री के ६ बोलों के १८ इन्द्री शेष १३५ बोलों में पांच ५ इन्द्री गणनेसे ६७५ इन्द्रियों एवं २०-१८-६७५ सब मिलके ७१३ भेद हुवे।

(५) पांचवे दंडक में शरीर की इन्द्रियों के २१३० भेद है। यथा तीसरे दंडक के ४९१ भेद कह आये है जिसमें एकेन्द्रीय के ६१ शरीर में इन्द्रीय ६१ है और विकलेन्द्री के १८ शरीर में इन्द्रीय ४८ है शेष ४१२ शरीर पंचेन्द्रीयके है, जिसमें २०६०

नहीं है कि जिसने इन पुद्गलों को ग्रहण न किया हो एकबार नहीं परन्तु अनन्तीवार इसी तरह ग्रहण कर करके छोड़ा है जैसे प्रयोगशा के नौ दंडक और उनके भेद करके बताये हैं, उसी माफिक मिश्रशाके भी भेद समझ लेना विशेषा पुद्गल वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, और संस्थानपने प्रणम्या है उसके ५३० भेद हैं वह शीघ्रबोध दूसरे भागसे समझलेना, एवं प्रयोगशा, मिश्रशा, विशेषा के १७७७८० भेद हुवे।

सेवमते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० ६६.

श्री भगवती सूत्र श० ८—उ० ९.

(बन्ध)

बन्ध दो प्रकारके होते हैं, एक प्रयोगबंध जो किसी दूसरेके प्रयोग से होता है. और दूसरा विशेषबंध जो स्वभाव से ही होता है।

(१) विशेष बंध के दो भेद अनादिबंध और सादीबंध जिसमें अनादीबंध के तीन भेद हैं धर्मास्तिकाय का अनादीबंध है एवं अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय का भी अनादि बन्ध है इन तीनु के स्वस्व प्रदेश के साथ अनादिबंध है।

धर्मास्तिकाय का अनादिबंध है वह क्या सर्वबंध है या देशबंध है? गौतम! देशबंध है क्योंकि संकल के माफिक प्रदेश से प्रदेश बंधा हुवा है, एवं अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय भी समझ लेना।

धर्मास्तिकाय के विशेषाबंध की स्थिति कितनी है? गौतम! सर्वाद्धा याने सदाकाल सास्वता बंध है एवं अधर्मास्ति० आकाशास्ति० भी समझ लेना।

सादी विशेषा बन्ध कितने प्रकारका? गौ० तीन प्रकारका बन्धनापेक्षा, भाजनापेक्षा और परिणामापेक्षा जिसमें बंधानापेक्षा जैसे दो प्रदेशी, तीन, चार यावत् अनंत प्रदेशी का आपस में बंध हो। परन्तु रूक्षसे रूक्ष न बंधे स्निग्ध से स्निग्ध न बन्धे परन्तु रूक्ष और स्निग्ध संबंध होवे वह भी जघन्य गुण वर्जके जैसे एक गुण रूक्ष और एक गुण स्निग्ध का बंध न होवे परंतु विषम मात्रा जैसे एक गुण रूक्ष और दो गुण स्निग्ध का बंध होवे इसी तरह यावत् अनंत प्रदेशी तक समझ लेना, इनकी स्थिती ज० एक समय की उ० असंख्याताकाल०।

भाजनापेक्षा—जैसे किसी भाजन में जूना गुल तथा तंदूल मदरादि गालने से उनका स्वभाव से बन्ध हो, उनकी स्थिती ज० एक समय उ० संख्या० कालकी है।

परिमाण बन्ध—जैसे बादल. इन्द्रधनुष, अमोघा, उद्गमच्छादि इनकी स्थिती ज० एक समय उ० छे मासकी है।

प्रयोग बन्ध के तीन भेद—अनादि अनन्त, अनादि सांत। और सादि सांता जिसमें (१) अनादि अनंत-जीव के आठ रुचक प्रदेशोंका बन्ध वह भी तीन २ प्रदेशके साथ है, और शेष आत्म प्रदेश हैं वे सादि सांत हैं. (२) सादी अनंत एक सिद्धों के आत्म प्रदेश स्थित हुवे हैं वह सादी है परन्तु अन्त नहीं. (३) सादि सांतके ४ भेद हैं—आलावणबन्ध. अलियावणबन्ध शरीरबन्ध, और शरीर प्रयोगबध।

आलावणबन्ध—जैसे तृणके भारेका बन्ध, काष्ट के भारेका बन्ध, एवं पत्र. पलाल, वेली आदि का बन्ध इनकी ज० स्थिती एक समय उ० संख्याता काल।

अल्लियावणबंध के ४ भेद—लेसाण बंध, उभयबन्ध, समुच्चयबंध, और साधारणबंध, जिसमें लेसाणबंध जैसे कादेसे, चूनेसे, लाखसे, मेंणसे, पत्थर तथा काष्टादि को जोडकर घर प्रासाद आदि बनाना इसकी स्थिती ज० अंतर मुहूर्त उ० संख्याता काल (२) उभयबन्ध-जैसे--तृणरासी, काष्टरासी, पत्र रासी तुस, भुस० गोबर रासी का ढेर करने से बंध होता है इसकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याता काल (३) समुच्चयबन्ध जैसे-तालाब, कूवा, नदी, द्रह, बावडी, पुष्करणी, देवकुल सभा, पर्वत छत्री, गढ, कोट, किला, घर, रस्ता, चोरस्तादि जिनकी स्थिती ज० अंतर मुहुर्त उ० संख्याताकाल की है. (४) साधारणबन्ध-जिसके दो भेद—देसबन्ध जैसे-गाडा, गाडली, पीलाण, अम्बाडी, पिलंग, सुरली, आदि और दूसरा सर्वबन्ध जैसे पाणी दूध इत्यादि इनकी स्थिती ज० अंतर मुहूर्त उ० संख्याताकाल।

शरीरबन्ध के दो भेद-पूर्व प्रयोगापेक्षा और वर्तमान प्रयोगापेक्षा जिस में पूर्व प्रयोग जैसे नरकादि सर्व संसारी जीवों के जैसा २ कारण हो वैसा २ बंध होता है. और वर्तमान प्रयोग बंध जैसे केवली समुद्घात से निवृत होता हुवा अन्तरा और समयों प्रवृतमान तेजस और कारमण का बन्धक होवे, कारण इस वक्त शरीर प्रदेशों संहत होते हैं।

शरीर प्रयोग बन्ध के ५ भेद जैसे औदारिक शरीर प्रयोग बंध, वैक्रय० आहारक० तेजस० और कारमण शरीर प्रयोगबन्ध इनकी विशेष सविस्तार आगे थो. भाग में कहेंगे।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

—*०*—

थोकड़ा नं० ६७.

श्री भगवती सूत्र श० ८–उ० ९.

(सर्वबंध देशवंध.)

शरीर पांच प्रकारके हैं-औदारिक. वैक्रिय, आहारिक तेजस. और कार्मण शरीर (१) औदारिक शरीर आठ बोल से निपजावे-द्रव्य से, वीर्य से संयोग से, प्रमाद से. भवसे जोगसे कर्मसे आयुष्यसे औदारिक शरीर का स्वामी कौन है? (१) समुचय जीव (२) समुचय एकेन्द्री (३) पृथ्वीकाय (४) अप (५) तेउ० (६) वाउ० (७) वनस्पति० (८) बेरेन्द्री (९) तेरिन्द्री (१०) चौरिन्द्री (११) तिर्यच पंचेंद्र। (१२) मनुष्य इन बारह बोलों में सर्व बन्धका आहार ले वह ज० एक समय का है सर्व बन्धका आहार जीव जिस योनी में उत्पन्न हो उस योनी में जाके प्रथम समय ग्रहण करता है और वह प्रथम समय का लिया हुवा आहार उमर भर रहता है. जैसे तेलके अंदर बडा का दृष्टांत

देश बंधका आहार—समुचय जीव. समुचय एकेन्द्रिय, वायुकाय तिर्यचपंचेन्द्री. और मनुष्य इन पांच बोलों के जीवों का देश बंध के आहार की स्थिति ज० एक समय की भी है कारण ये जीव औदारक शरीर से वैक्रिय करते है और वैक्रियेसे पीछा औदारिक करते हुवे प्रथम समय ही काल करे तो औदारिक के देश बध का एक समय जघन्य बंधक हुआ शेष सात बोलों (४ स्थावर, ३ विकलेन्द्री) के जीव देश बंध ज० क्षुलक भव से तीन समय न्यून कारण दो समय की विग्रह गती और एक समय सर्व बध का एवं ३ समय न्यून

क्षुल्लक भव १ २५६ आवली १ देश बंधका आहार करे और १२ बोल के जीवों की उत्कृष्ट देश बंध की स्थिति नीचे प्रमाणे।

समुच्चय जीव मनुष्य, और तिर्यंच तीन पल्योपम एक समय न्यून समुच्चय एकेन्द्री, पृथ्वीकाय २२००० वर्ष एक समय न्यून, एवं अप्पकाय ७००० वर्ष, तेउ० तीन दिन, वायु ३००० वर्ष, वनस्पति १०००० वर्ष, बेइन्द्री १२ वर्ष तेइन्द्री ४९ दिन, चौरिन्द्री ६ मास सब में एक समय न्यून समझना क्योंकि एक समय सर्व बंध का आहार ले।

औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर-समुच्चय औदारिक शरीर के सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुल्लक भव तीन समय न्यून कारण १ समय प्रथम भव में सर्व बंध का आहार किया और दो समय की विग्रह गती की और उ० ३३ सागरोपम पूर्व क्रोड़ वर्ष में एक समय अधिक कारण क्रोड़ पूर्व का भव किया उसमें एक समय सर्व बंध का आहार लिया सो पूर्व क्रोड़ में न्यून हुवा वहां से सातवीं नरक या सर्वार्थ सिद्ध विमान में ३३ सा० और वहां से २ समय की विग्रह गती करके उत्पन्न हुवा इस वास्ते १ समय अधिक कहा शेष ११ बोलों का [illegible] सर्व बंध का अन्तर ज० एक क्षुल्लक भव तीन समय न्यून और उ० अपनी २ स्थिति से एक समय अधिक समझना आगला पूर्ववत्।

देश बंध का [illegible] अन्तर कहते हैं-समुच्चय जीव, समुच्चय एकेन्द्री, वायुकाय तिर्यंच पंचेन्द्री और मनुष्य इनमें ज० एक समय उ० अन्तर मुहूर्त (वैक्रिय अपेक्षा) शेष ९ बोलों में ज० एक समय उ० ३ समय।

एकेन्द्री का एकान्तरवां अन्तर समुच्चय एकेन्द्री सर्व बंध अन्तर ज० २ क्षुल्लक भव तीन समय न्यून और उत्कृष्ट

का एक क्षुलक भव १ समय अधिक उ० दोनों बोलों को २००० सागरोपम संख्याता वर्षाधिक।

वनस्पतिकाय और-समुच्चय एकेन्द्रीय का सर्व अन्तर ज० एकेन्द्रीय माफिक उ० असख्याता काल पृथ्वीकाय की काय स्थितिवत्-शेष ९ बोल का सर्व वन्धान्तर ज० एकेन्द्री माफिक और उ० अनन्त काल (वनस्पति काल)।

(अल्पा बहुत्व)

(१) सबसे स्तोक औदारिक शरीर के सर्व बंध के जीवों।
(२) अबन्धक जीवों विशेषाधिक।
(३) देश बन्धक जीवों असं० गुणे।

(२) वैक्रिय शरीर ९ कारणों से बन्धते हैं जिसमें ८ पूर्व औदारिकवत् और नवमां लब्धि वैक्रिय। जिसका स्वामी (१) समुच्चय जीव. (२ नारकी, (३) देवता. (४) वायुकाय, (५) तीर्यच पंचेद्री, (६) मनुष्य।

समुच्चय वैक्रिय का बन्ध दो प्रकार के है सर्व बन्ध और देश बन्ध जिसमें सर्व बन्ध की स्थिति ज० एक समय (नरकादि प्रथम समय आहार ले वह सर्वबन्ध है) उत्कृष्ट दो समय (मनुष्य, तिर्यच औदारिक से वैक्रिय बनाता हुवा प्रथम समय का सर्ववंधका आहार गृहण करके काल करे और नारकी देवता में उत्पन्न हो वहां प्रथम समय सर्वबंध का आहार ले इसवास्ते दो समय का सर्वबंध का आहार कहा है और देशबंध की स्थिति ज० एक समय मनुष्यादि औदारिक शरीर से वैक्रिय बनावे उस वक्त एक समय का देशबंध का आहार ग्रहण करके काल करे) उ० ३३ सागरोपम एक समय न्युन।

नारकी, देवताओं में सर्व बन्धका आहार ज० उ० एक

वैक्रिय शरीर सर्वबन्ध देशबन्ध का आन्तर अन्तर मुहुर्त उ० अनंताकाल (वनस्पतिकाल) ।

(अल्पा बहुत्व).

(१) सबसे स्तोक वैक्रिय शरीर के सर्ववंध के जीवों ।
(२) वैक्रिय शरीर देशवंध वाले जीवों असं० गुणे ।
(३) ,, ,, अवंध वाले जीवों अनन्त गुणे ।

(३) आहारिक शरीर बांधने के ८ कारण औदारिकवत् नौवों लब्धि जिसका स्वामी मनुष्य वह भी ऋद्धिवन्त मुनिराज है आहारिक शरीर के सर्ववंध की स्थिती ज० उ० एक समय और देशवध की स्थिती ज० उ० अन्तर मुहुर्त अन्तर सर्व वंध देशवंध का ज० अन्तर मुहुर्त उ० अनन्तकाल यावत् अर्द्धपुद्गल परावर्त ।

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीर के जीवों सर्ववन्ध ।
(२) आहारक शरीर के देश बन्धके जीवों संख्यात गुणे ।
(३) ,, ,, अबन्धक जीवों अनन्त गुणे ।

(४) तेजस शरीर बंध का स्वामी एकेन्द्रीयसे यावत् पचेन्द्री है और आठ कारण से बंध होता है औदारिकवत् तेजस शरीर सर्व बंध नहीं होता केवल देशबंध होता है जिसके दो भेद अनादी अनन्त (अभव्यापेक्षा) और अनादि सान्त (भव्यापेक्षा) इन दोनों का अन्तर नही है निरन्तर बध होता है

(१) तेजस शरीर का अबन्धक स्तोक ।
(२) और देश बधक जीवों अनन्त गुणा ।

(५) कार्मण प्रयोग बंध के आठ भेद-यथा ज्ञानावर्णीय दर्शना०, वेदनी० मोहनी०, आयुष्य०, नाम०, गोत्र०, अंतराय० इन आठ कर्मों के बंधका ७९ कारण शीघ्रबोध० भाग २ में लिखा है करमाणका देशबध है सर्वबंध नहीं होते है स्थिती तथा अन्तर तेजस शरीर के माफिक समझ लेना अल्पाबहुत्व आयुष्य कर्म

छोड के शेष ७ कर्मकी तेजस शरीरवत् और आयुष्य कि सबसे स्तोक देशबंध के और अबन्धके संख्यात गुणे।

(परस्पर बन्ध अबन्ध)

(१) औदारिक शरीर के सर्वबंध का बंधक है वहां वैक्रिय, आहारिक का अबन्धक है और तेजस कार्मण का देश बन्धक है इसी तरह औदारिक शरीर के देशबंध का भी कह देना।

(२) वैक्रिय शरीरका बंधक है वहां औदारिक, आहारिक शरीर का अबंधक है तेजस कार्मण का देशबंधक है इसी तरह वैक्रिय का देशबंध का भी कहना।

(३) आहारिक शरीर का बंधक है वहां औदारिक वैक्रिय का अबंधक है और तेजस कार्मण का देशबंधक है एवं आहारिक शरीर के देश बंध का भी कहना।

(४) तेजस शरीर का देशबंधक है वहां औदारिक शरीर का बंधक भी है और अबंधक भी है यदि बंधक है तो देशबंधक भी है और सर्वबंध भी है एवं आहारिक वैक्रिय शरीर भी समझ लेना कार्मण शरीर नियमा देशबंध है।

(५) कार्मण शरीर की व्याख्या तेजसवत कहना। इति।

(अल्पाबहुत्व).

१ सबसे स्तोक आहारिक शरीर का सर्व बंधक।
२ आहा० शरीर का देश बंधक सं० गु०।
३ वैक्रिय ,, सर्व ,, असं० गु०।
४ ,, ,, देश ,, ,,
५ तेजस कार्मण का अबंधका अनं० गु०।
६ औदा० शरीर सर्वबंधक अनं० गु०।

(७) ,, ,, अवंधका विशेषा।
(८) ,, ,, देश ,, अस० गु०
(९) तेजस कार्मण का देश वंधक विशेषा।
(१०) वैक्रिय का अवंधक विशेषा।
(११) आहारिक शरीर के अवंधक विशेषा।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्.

थोकडा नं० ६८

श्री भगवती सूत्र श० ८-उ० १०

(पुद्गल).

हे भगवान्! पुद्गल कितने प्रकार से प्रणमते है? गौतम! पांच प्रकार से यथा वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८ और संस्थान ५ एव २५ बोलों से प्रणमते है।

पुद्गलास्तिकाय के एक प्रदेश को क्या एक द्रव्य कहना १ या घणा द्रव्य कहना २ या एक प्रदेश कहनो ३ या घणा प्रदेश कहना ४ या एक द्रव्य एक प्रदेश कहना ५ या एक द्रव्य घणा प्रदेश कहना ६ या घणा द्रव्य एक प्रदेश कहना ७ या घणा द्रव्य घणा प्रदेश कहना? इन ८ भागा में से एक प्रदेश में दो भांगा पावे (१) एक प्रदेश (२ अपेक्षा से एक द्रव्य भी कहते है।

दो प्रदेशी मे पांच भांगा पावे क्रमसर तीन प्रदेशी में सात भांगा पावे क्रमसर चार प्रदेशी में ८ भांगा पावे एवं ५-६-७-८-

९-१० सख्याते, असंख्याते और अनन्ते प्रदेशो में भी ८-८ भांगा समझ लेना ॥ एवं २-५-७-८० सब मिलाके ९४ भांगे हुवे।

हे भगवान् ! जीव पुद्गली है या पुद्गल है ? गौतम ! जीव पुद्गली भी है और पुद्गल भी है क्योंकि जैसे किसी मनुष्य के पास छात्र हो उसको छत्री कहते हैं दंड हो उसको दंडी कहते हैं इसी माफिक जीव ने पूर्व काल में पुद्गल ग्रहण किया था इस वास्ते पु० ग्रहणापेक्षा से जीवको पुद्गल कहते हैं और श्रोतेन्द्रि, चक्षु० घ्राण०, रस० स्पर्शेन्द्री की अपेक्षा से जीव को पुद्गली कहते हैं। यहा उपचरितनयापेक्षा समझना ।

पृथ्व्यादि पांच स्थावर एक स्पर्शेन्द्रीय अपेक्षा पुद्गली है और जीव अपेक्षा पुद्गल है। बेइन्द्रिय के दोइन्द्री तेन्द्रीय के तीनइन्द्रिय चोरिन्द्रीय के चारइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीवापेक्षा से पुद्गल है नारकी १ भुवनपति १०, तिर्यंच पचेन्द्री १, मनुष्य १, व्यन्तर १, ज्योतिषी १, वैमानिक एवं १६ दंडक में पांचइन्द्री की अपेक्षा से पुद्गली है और जीव की अपेक्षा से पुद्गल है भावना पूर्ववत । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ६६

श्री भगवती सूत्र श० १०-उ० १.

(लोक दिशा)

दिशा दश प्रकार की है यथा—

(१) इन्द्रा [पूर्व दिशा] [२] अग्नि [अग्निकोन]

[३] जमा (दक्षिण दिशा) (४) नेरुती [नैरुत कौन],
(५) वाउणा [पश्चिम दिशा], (६) वायु (वायव कौन),
(७) सोमा [उत्तर दिशा], (८) ईसाण [ईसान कौन],
(९) विमला [ऊंची दिशा] (१०) तमा [नीची दिशा]।

इन्द्रा (पूर्व दिशा) मे क्या जीव है १ जीव का देश है २, जीवका प्रदेश है ३, अजीव है ४, अजीव का देश है ५, अजीवका प्रदेश है ६ ? गौतम ! हां जीव है यावत् अजीवका प्रदेश है जीव है तो क्या एकेन्द्री है बे० ते० चो० पं० और अनेंदिया है ? हां एकेन्द्रीय बेन्द्रीय तेन्द्रीय चौन्द्रीय पंचेन्द्रीय और अने-न्द्रीय ये ६ बोल हैं इनके देश ६ और प्रदेश ६ एवं १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद हैं एक रूपी दूसरा अरूपी जिसमें पूर्व दिशा में रूपी का स्कन्द है स्कन्धदेश है स्कन्धप्रदेश है तथा परमाणु पुद्गल है एव चार और अरूपी का ७ धर्मास्तिकाय नहीं है परतु धर्मास्तिकाय का एक देश है और प्रदेश घणा है एवं अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय २ और सातवां काल एवं अजीव के ११ और जीव के १८ सब मिला के २९ बोल पुर्व दिशा में पावे एव पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में २९-२९ बोल पावे।

अग्निकोन की पृच्छा ? गो० जीव नही है जीव का देश है, यावत् अजीवका प्रदेश है अगर जीवके देश है तो क्या एकेन्द्रीयके हैं।

(१) अग्निकोन में नियमा एकेन्द्रीयका देश है।
(२) घणा एकेन्द्रीयके घणा देश एक बेन्द्रियको एक देश
(३) ,, ,, ,, ,, ,, के घणादेश
(४) ,, ,, ,, ,, घणे बेन्द्रिय के घणादेश
(७) एवं तीन आलापा तेरिन्द्रिय का १० तीन चौरिंद्री

थोकडा नं० १००

श्री भगवती सूत्र श० ११—उ० १०

(लोक)

हे भगवान्? लोक कितने प्रकारके है? गौ० चार प्रकार के यथा—द्रव्यलोक, क्षेत्रलोक, काललोक और भावलोक जिसमें पहिले क्षेत्रलोक की व्याख्या करते हैं, क्षेत्रलोक तीन प्रकारका है उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग लोक उर्ध्वलोक में १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तर विमान और सिद्धशिला, अधोलोकमें ७ नारकी और तिर्यग् लोक में जम्बूद्वीप, लवण समुद्रादि असंख्याद्वीप समुद्र है।

अधोलोक तिपाई के संस्थान तीर्यग् लोक झालर के सस्थान, ऊर्ध्वलोक उभी मृदंगाकार (सस्थान) सर्व लोक तीन सरावला के अथवा जामा पहिरे हुवे पुरुष के सस्थान है और अलोक पोला गोला (नारियल) के सस्थान है।

अधोलोक क्षेत्रलोक मे जीव है, जीव के देश है, जीवके प्रदेश है एवं अजीव, अजीव के देश, अजीव के प्रदेश है? जीव है यावत् अजीव का प्रदेश है तो क्या एकेन्द्रिय यावत अनेन्द्रिय है? हा एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय एवं ६ बोल और इन छे का देश और छे का प्रदेश सर्व १८ बोल हुवे।

अजीव के दो भेद रुपी और अरुपी जिसमें रुपी के चार भेद पूर्ववत् और अरुपी के ७ भेद धर्मास्ति का देश, प्रदेश एवं अधर्मास्ति, आकाशास्ति का भी देश, प्रदेश और काल

थोकडा नं० १००

श्री भगवती सूत्र श० ११–उ० १०

(लोक)

हे भगवान ? लोक कितने प्रकारके है ? गौ० चार प्रकार के यथा—द्रव्यलोक, क्षेत्रलोक, काललोक और भावलोक जिसमे पहिले क्षेत्रलोक की व्याख्या करते है, क्षेत्रलोक तीन प्रकारका है उर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग लोक उर्ध्वलोक मे १२ देवलोक ९ ग्रैवेक ५ अनुत्तर विमान और सिद्धशिला, अधोलोकमें ७ नारकी और तिर्यग् लोक में जम्बूद्वीप, लवण समुद्रादि असख्याद्वीप समुद्र है ।

अधोलोक तिपाई के संस्थान तीर्यग् लोक झालर के सस्थान. ऊर्ध्वलोक उभी मृदंगाकार (सस्थान) सर्व लोक तीन स्रावला के अथवा जामा पहिरे हुवे पुरुष के सस्थान है और अलोक पोला गोला (नारियल) के संस्थान है ।

अधोलोक क्षेत्रलोक मे जीव है. जीव के देश है, जीवके प्रदेश है एवं अजीव अजीव के देश, अजीव के प्रदेश है ? जीव है यावत् अजीव का प्रदेश है तो क्या एकेन्द्रिय यावत अनेन्द्रिय है ? हां एकेन्द्रिय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय एवं ६ बोल और इन छे का देश और छे का प्रदेश सर्व १८ बोल हुवे ।

अजीव के दो भेद रुपी और अरुपी जिसमें रुपी के चार भेद पूर्ववत् और अरुपी के ७ भेद धर्मास्ति का देश, प्रदेश एव अधर्मास्ति, आकाशास्ति का भी देश. प्रदेश और काल

छोडके शेष ३१ बोल पावे तीर्यक् लोकमे नीचा लोक वत् ३२ बोल पावे लोंक के एक आकाश प्रदेश पर भी कहना। अलोकाकाश पर जीव आदि नही है केवल आकाश अनन्त अगुरु लघु पर्याय संयुक्त है। २।

(२) द्रव्यलोक-नीचे लोक मे अनन्ते जीव द्रव्य है अनन्ते अजीव द्रव्य है एवं ऊचा लोक, तीर्यक् लोक और सर्व लोंक अलोक में केवल अजीव वह भी आकाश अनन्त अगुरु लघु पर्याय सयुक्त है।

(३) काललोक-ऊचा, नीचा, तीर्यक् और सर्वलोक कोई कयों नहीं करे, नहीं. और करसी नहीं एवं तीनों काल में सदा सास्वत है एवं अलोक।

(४) भावलोक ऊचो, नीचो, तीर्यक् लोक और सर्वलोक में अनते वर्ण, गंध, रस स्पर्श और संस्थान का पर्याय है॥ और अनन्ते गुरुलघु और अनन्ते अगुरुलघु पर्याय करके संयुक्त है और अलोक में केवल आकाश द्रव्य अगुरुलघु संयुक्त है।

इसका जादा खुलासा देखना हो तो श्रीमान् विनयविजयजी महाराज कृत लोकप्रकाश देख लीजीये॥

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम्.

थोकड़ा नं० १०१.

श्री भगवती सूत्र श० १६-उ० ८.

लोक-लोक के देश और लोक के प्रदेशों का अधिकार पहले थोकडोंमें आगे लिखा गया है अब लोक के चरमान्त का २१०

उपरवत् ७ नारकी १२ देवलोक ९ नवग्रैवेयक ५ अणुत्तर-विमान १ इसी प्रभारा पृथिवी (सिद्धशिला) एवम् ३४ बोलों के चारों दिशों के चरमांत में तथा समुचय लोक के चारों दिशों के चरमांत मिलके १४० चरमांत मे बोल छत्तीस छत्तीस पावे।

ऊंचेलोक के चरमान्त की पृच्छा-ऊंचेलोक के चरमान्त में (१) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का देश सदा काल साश्वता है (२) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय का घणे देश और एक बेन्द्रिय का एक देश (३) और घणे बेन्द्रिय के घणे देश एवम् तेन्द्रिय का २, चौन्द्रिय का २, पंचेन्द्रिय का २, मिलकर ९ बोल तथा प्रदेश (१०) एकेन्द्रिय और अनेन्द्रिय के घणे प्रदेश (साश्वता) (११) एकेन्द्री अनेन्द्रिय का घणा प्रदेश और एक बेन्द्रिय के घणे प्रदेश (१२) घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् २ तेन्द्रिय का, २ चोन्द्रिय का२, पंचेन्द्रिय का२, मिलकर १८ भेद हुवे और अजीव के १० भेद हैं रूपी के स्कन्ध, स्कन्धदेश, स्कन्धप्रदेश, परमाणु पुद्गल और अरूपी के धर्मास्तिकाय देश, प्रदेश अधर्मास्तिकाय देश, प्रदेश, आकाशास्तिकाय देश, प्रदेश, एवम् सर्व मिलाकर ऊंचेलोक के चरमान्त में बोल २८ पावे।

नीचेलोक के चरमान्त की पृच्छा बोल ३२ पावे, यथा घणे एकेन्द्रिय के घणे देश, एक बेन्द्रिय का एक देश, घणे बेन्द्रिय के घणे देश, एवम् तेन्द्रिय २ चौन्द्रिय २ पंचेन्द्रिय २ अनेन्द्रिय २ मिलाकर ११ तथा प्रदेश-घणे एकेन्द्रिय के घणे प्रदेश एक बेन्द्रिय का घणे प्रदेश, घणे बेन्द्रिय के घणे प्रदेश एवम् तेन्द्रिय के २, चोन्द्रिय के २ पंचेन्द्रिय का२, अनेन्द्रिय के २ मिलाकर ११ अजीवका १० पूर्ववत् सर्व ३२ इसी माफिक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान एक इसीप्रभारा (सिद्धशिला) के इन १५ के ऊंचे तथा नीचे ३० चरमान्त समझना।

घन चौतरा.

यह सातराज लम्बा चौडा चौतरा है जिसके मध्य भाग से नाप लेने के लिये कोई देवता महान् ऋद्धि, ज्योति कान्ती महासुख और महा भाग्य का धणी जिसके चलने की सक्ती कैसी है वह कहते है जम्बूद्वीप एकलक्ष योजन का लम्बा चौडा है जिसके मध्य भाग में मेरु पर्वत एक लक्ष योजन का ऊंचा है उस मेरु

रत्नप्रभा के ऊपर के चरमान्त की पृच्छा जैसे विमला दिशा में बोल २८ समझना रत्नप्रभा को वर्ज के ६ नरक। के ऊपर के और सातों नारकी के नीचे के चरमान्त १३ और १२ देवलोक के नीचे ऊंचे के २४ चरमान्त एवम् ३७ चरमांत में बोल पावे ३३ जिसमें जीव के देश के १२ एकेन्द्रिय पंचेन्द्रिय के घणे देश भी देवे, प्रदेश का ११ अजीव का १० ।

लोक के पूर्व का चरमांत का परमाणु पुद्गल क्या एक समय में लोक के पश्चिम के चरमांत तक जा सके ? हां गौतम ! पूर्व के चरमांत का परमाणु एक समय में पश्चिम के चरमांत में जा सका है॥ एवम् पश्चिम से पूर्व, दक्षिण से उत्तर, उत्तर से दक्षिण तथा ऊंचेलोक के चरमांत से नीचेलोक के चरमांत और नीचेलोक के चरमांत से ऊंचेलोक के चरमांत तक एक समय में जा सकता है जिस परमाणु में तीव्र वर्ण, गंध, रस, स्पर्श होता है वह परमाणु एक समय में १४ राजलोक तक जा सकता है । इति ।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०२.

श्री भगवती सूत्र श० ११-उ० १०.

(लोक.)

हे भगवान ! लोक कितना बड़ा है ? गौतम ! चौदह राज का है । यावत् असंख्याते क्रोड़ान क्रोड़ योजन लम्बा चौड़ा है ॥ जिसकी स्थापना —
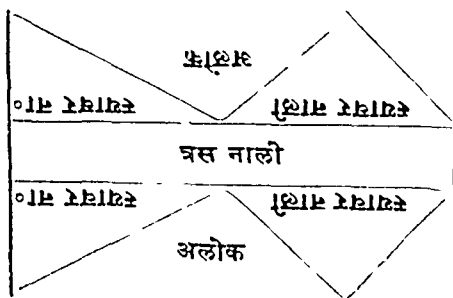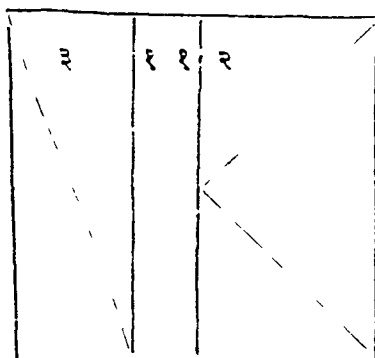
घन चौतरा.

यह सातराज लम्बा चौडा चौतरा है जिसके मध्य भाग से नाप लेने के लिये कोई देवता महान् ऋद्धि, ज्योति कान्ती महासुख और महा भाग्य का धणी जिसके चलने की सक्ती कैसी है यह कहते है जम्बूद्वीप एकलक्ष योजन का लम्बा चौडा है जिस्के मध्य भाग में मेरु पर्वत एक लक्ष योजन का ऊंचा है उस मेरु

पर्वत से मोदक के लड्डू छोडे और शीघ्र गतीवाला देवतां अधर हाथ मे लेले, इसकी सब व्याख्या पूर्ववत् कहदेना विशेष इतना है के वहां ४ लड्डू कहे है यहां ८ कहना और वहां छे दिशी का सन्त लानेको गये कहा है यहां दश दिशी कहना और लडके की आयुष्य लक्ष वर्ष की कहना तथा गतक्षेत्र की अपेक्षा शेष रहा क्षेत्र अनन्त गुणा कहना शेष रहे क्षेत्रसे गतक्षेत्र अनन्त में भाग है इतना बडा अलोक है।

लोक और अलोक किसी देवता ने नापा किया नहीं करे नहीं और करेगा नहीं परन्तु ज्ञानीयों ने ज्ञान से देखा है वैसी ही औपमा द्वारा बतलाया हे ।

सेवंभंते सेवंभते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०३.

श्री भगवती सूत्र श० ५–उ० ८.

(परमाणु.)

हे भगवान्! परमाणु पु० इधर उधर चलता है कि स्थिर है? गौ० स्यात् चलता है, स्यात् स्थिर है. भागा २, दो प्रदेशी की पृच्छा? (१) स्यात् चले (२ स्यात् न चले (३) स्यात् देश चले स्यात् देश न चले एवं भागा ३ तीन प्रदेशी का भी भांगा ३ पूर्ववत् (४) स्यात् देश चले स्यात् बहुत से देश न भी चले (५) स्यात् बहुत से देश चले स्यात् एक देश न चले एवं भागा ५। चार प्रदेशी के ५ भांगा पूर्ववत (६ बहुत से देश चले, बहुत से देश नही चले इसी माफिक ५-६-७-८-९-१०

संख्याते असंख्या० अनंत० प्रदेशी के सूक्ष्म और बादर के भी छे छे भांगे समझ लेना एवं सर्व भांगे ७६ हुये।

(२) परमाणु पु० तलवार की धारसे छेदन भेदन नहीं होवे, अग्नि में जले नहीं, पुष्करावृत मेघ वर्षे तो सडे नहीं एवं दो प्रदेशी यावत् सूक्ष्म अनंत प्रदेशी और बादर अनन्त प्रदेशी छेदन भेदन जले या सडे गले विध्वंस होवे और स्यात् नहीं भी होवे।

(३) परमाणु पु० क्या सार्द्ध है, समध्य है, सप्रदेश है, अनार्द्ध है, अमध्य है, अप्रदेश है? इन छे बोलों में एक अप्रदेशी है शेष नास्ति है दो प्रदेशी पूछता छे बोलों में दो बोल पावे सार्द्ध और सप्रदेश एवं ४-६-८-१० प्रदेशी में भी समझ लेना और तीन प्रदेशी में दो बोल समध्य सप्रदेश एवं ५-७-९ प्रदेशी और संख्यात प्रदेशी में छे बोलों में से १ अप्रदेशी वर्ज के शेष ५ बोल पावे एवं असं० अनं० प्रदेशी भी समझलेना।

(४) परमाणु पु० परमाणु पु० से स्पर्श करता जावे तो नीचे लिखे नौ भांगों में से कितना भांगा स्पर्शे (१) देश से देश (२) देश से देशों[1] (३) देश से सर्व (४) देशों से देश (५) देशों से देशों (६) देशों से सर्व (७) सर्व से देश (८) सर्व से देशों (९) सर्व से सर्व, जिसमें परमाणु पुद्गल सर्व से सर्व स्पर्शे परमाणु पुद्गल से स्पर्शतो जावे तो भांगा एक १ परमाणु पुद्गल दो प्रदेशी से स्पर्शता जावे तो भांगा दो पावे ७-९, यो परमाणु तीन प्रदेशी से स्पर्शता जावे तो भांगा ३ पावे ७-८-९, यावत् अनं० प्रदेशी कहना।

दो प्रदेशी परमाणु को स्पर्शतो जावे तो भांगा २ पावे ३-९, दो प्रदेशी दो प्र० को स्पर्शतो जावे तो भांगा ४ पावे १-३-७-९,

---

[1] [illegible]

दो प्र० तीन प्र० को स्पर्शता जावे तो भांगा ६ पावे १-२-३-७-८-९ एवं यावत् अनन्त प्रदेशी समज लेना।

तीन प्रदेशी परमाणु को स्पर्श करता जाय तो भांगा ३ पावे ३-६-९ तीन प्र० दो प्र० को स्पर्श करतो जावेतो भांगा ६ पावे १-३-४-६-७-९ तीन प्र० तीन प्र० को स्पर्श करता जावे तो भांगा ९ पूर्ववत् पावे एवं यावत् अनन्त प्रदेशी कहना चार प्रदेशी से यावत् अनन्त की व्याख्या तीन प्रदेशीवत् करनी।

(५) परमाणु की स्थिती ज० एक समय उ० अस० काल एवं दो प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी स्थिती कहदेना।

(६) एक आकाश प्रदेश अवगाहा पुद्गलों की स्थिती दो प्रकार की है एक कम्पता हुआ जैसे एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाने वाला और दूसरा अकम्पमान याने स्थिर जिसमें कम्पमान की ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अकम्प की ज० एक समय उ० अस० काल० एव दो तीन यावत् असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाहा आदि समझना।

(७) एक गुण काले पु० की स्थिती ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् अनन्त गुण काले पु० कीभी समझ लेना इसी तरह ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श भी समझ लेना।

(८) जो पुद्गल (सुक्ष्मपणे प्रणम्य हैं वे ज० एक समय उ० अस० काल एवं बादरपने प्रणम्या भी कहना।

(९) पुद्गल शब्द पने प्रणम्या हैं वे ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग।

(१०) जो पुद्गल अशब्द पने प्रणम्या हैं वे ज० एक समय उ० असं काल।

११) परमाणु पु० का अंतर ज० एक समय उ० असं०

दो प्र० तीन प्र० को स्पर्शता जावे तो भांगा ६ पावे १-२-३-७-८-९ एवं यावत् अनन्त प्रदेशी समज लेना ।

तीन प्रदेशी परमाणु को स्पर्श करता जाय तो भांगा ३ पावे ३-६-९ तीन प्र० दो प्र० को स्पर्श करतो जावेतो भांगा ६ पावे १-३-४-६-७-९ तीन प्र० तीन प्र० को स्पर्श करता जावे तो भांगा ९ पूर्ववत् पावे एवं यावत् अनन्त प्रदेशी कहना चार प्रदेशी से यावत् अनन्त की व्याख्या तीन प्रदेशीवत् करनी ।

(५) परमाणु की स्थिती ज० एक समय उ० अस० काल एवं दो प्र० यावत् अनन्त प्रदेशी स्कन्ध की भी स्थिती कहदेना ।

(६) एक आकाश प्रदेश अवगाहा पुद्गलों की स्थिती दो प्रकार की है एक कम्पता हुआ जैसे एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश जाने वाला और दूसरा अकम्पमान याने स्थिर जिसमे कम्पमान की ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग और अकम्प की ज० एक समय उ० अस० काल० एव दो तीन यावत् असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाहा आदि समझना ।

(७) एक गुण काले पु० की स्थिती ज० एक समय उ० अस० काल एवं दो तीन यावत् अनन्त गुण काले पु० कीभी समझ लेना इसी तरह ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श भी समझ लेना।

(८) जो पुद्गल (सुक्ष्मपणे प्रणम्य है वे ज० एक समय उ० अस० काल एवं बादरपने प्रणम्या भी कहना ।

(९) पुद्गल शब्द पने प्रणम्या है वे ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग ।

(१०) जो पुद्गल अशब्द पने प्रणम्या है वे ज० एक समय उ० असं काल ।

११) परमाणु पु० का अतर ज० एक समय उ० अस०

काल दो प्रदेशी का अंतर ज० एक समय उ० अनंत काल एवं यावत् अनंत प्रदेशी कहना।

(१२) एक प्रदेश अवगाहा पुद्गल का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल एवं दो तीन यावत् असं० प्रदेशी अवगाहा पु० भी कहना. और कम्पमान सब जगह ज० एक समय उ० आवली के असं० भाग० भाग। वर्ण. गंध, रस, स्पर्श, सुक्ष्म पणे और बादर पने प्रणम्या हुवा कम्पमान, अकम्पमान का अंतर पूर्ववत् समझलेना।

(१३) शब्दपने प्रणम्या का अंतर ज० एक समय उ० असं० काल।

(१४) अशब्द पने प्रणम्या का अंतर ज० एक समय उ० आवली का के असं० भाग।

(१५) अल्पाबहुत्व (१) सबसे स्तोक क्षेत्र स्थानायु (२) अवगाहना स्थानायु असं० गुणा (३) द्रव्य स्थानायुः असं० गुणा (४) भाव स्थानायु असं० गुणा विस्तार सूत्रसे देख लेना।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम्।

—•—

थोकड़ा नं १०८.

श्री भगवती सूत्र श० ११–उ० १.

(उत्पल कमल)

द्वार उत्पात १, परिमाण २, अपहरण ३, अवगाहना ४ बन्ध ५, वेद ६ उदय ७, उदीरणा ८, लेश्या ९, दृष्टी

१०, ज्ञान अज्ञान ११, योग १२. उपयोग १३, वर्ण १४, उस्वास १५, आहार १६, व्रत्ति १७, क्रिया १८, बंध १९ संज्ञा २०, कषाय २१, वेदवन्ध २२, संज्ञी २३, इन्द्रीय २४, अनुबंध २५, संवाद २६. आहार २७, स्थिति २८, समुद्घात २९, चवन ३०, वेदना ३१, मूलोत्यात् ३२ इति।

यह बत्तीस द्वार उत्पल कमलपर उतारे जावेंगे द्रव्यानु योग में प्रवेश करने वालों के लिये यह विषय बहुत ही उपयोगी है।

राजग्रहीनगर के गुणशिला उद्यान में भगवान् श्री वीर प्रभु पधारे उस वखत श्री गौतमस्वामी ने प्रश्न किया है भगवान्! उत्पल कमल के पत्ते में एक जीव है या अनेक? गौतम पत्ते में एक जीव है परन्तु उसकी निश्राय में अनेक जीव उत्पन्न होते है याने पत्ते की डडी में मूलगा एक जीव रहता है शेष उसकी निश्राय से पते में असख्यात जीव हैं।

(१) उत्पात्-उत्पल कमलमे जीव चोंहत्तर जगह से आके उत्पन्न होते हैं यथा ४६ तिर्यच (यहां वनास्पतिके चार ही भेद माना है) ३ मनुष्य (पर्याप्ता, अपर्याप्ता, समुत्सम) २५ देवता (भुवनपति १०, व्यंतर ८, ज्योतिषी ५, पहला दूसरा देवलोक) इन ७४ जगह से आके जीव उत्पन्न होते है.

(२) परिमाण-एक समय में १-२-३ यावत् संख्याते असंख्याते जीव उत्पन्न होते हैं।

(३) अपहारण-उस एक पत्ते के जीवों को एकेक समय एकेक जीवको निकले तो असंख्याते काल याने असं० उत्सर्पणी अवसर्पिणी व्यतीत होजाय इन जीवोंको किसी ने निकाला नही निकालेगा नही परतु ज्ञानियोंने अपने ज्ञानसे देखा है।

(४) अवगाहना-उत्पल कमल की अवगाहना ज० अगुल के असंख्यातमां भाग उ० एक हजार योजन कुछ अधिक।

(५) कर्मबंध-ज्ञानवर्णीय कर्मके बंधक स्यात् एक जीव मिले स्यात् बहुत जीव मिले एवं आयुष्य कर्म वर्जके शेष ७ कर्म कहना और आयुष्य कर्म बंधक के भांगा ८ (१) आयुष्य कर्म का बंधक एक (२) अबंधक एक (३) बंधक बहुत (४) अबंधक बहुत (५) बंधक एक अबंधक एक (६) बंधक एक अबंधक बहुत (७) बंधक बहुत अबंधक एक (८) बंधक बहुत अबंधक भी बहुत इसी माफक जहां पर फीर भी ८ भांगा कहे उसको भी इसी तरह लगा लेना सात कर्मोंके १४ भांगे यथा ज्ञानवर्णी का एक और ज्ञानवर्णीय के बहोत इस तरह एक वचन बहुवचन करने से १४ भांगे हुवे और ८ आयुष्य के एवं २२ भांगे।

(६) कर्मवेदे-ज्ञानावर्णीय कर्म वेदने वाले किसी समय एक और किसी समय बहुत जीव मिले एवं वेदनीय कर्म छोड़ के शेष कर्मो के १४ भांगे और वेदनीसाता, असाता दो प्रकार की वेदे इसलिये इसका ८ भांगा पूर्ववत एवं २२ भांगा।

(७) उदय ज्ञानवर्णीय के उदयवाला किसी समय एक जीव मिले और किसी समय बहोत एवं अंतराय यावत ८ कर्मो का १६ भांगा हुवे।

(८) उदीरणा वेदनी और आयुष्य कर्म को छोड़ के शेष ज्ञानावर्णीयादि ६ कर्मो के एक वचन बहुवचनापेक्षा १२ भांगे और वेदनी आयुष्य के ८-८ भांगे पूर्ववत समझना एवं २८ भांगे।

(९) लेश्या उत्पलादि में चार लेश्या कृष्ण, नील, कापोत, और तेजो इन चार लेश्याओं के असंयोगी भांगे होते हैं यथा असंयोगी ८ किसी समय कृष्णलेशी एक, किसी समय नील लेशी एक किसी समय कापोत लेशी एक और किसी समय तेजोलेशी एक एवं एक वचनापेक्षा चार भांगा इसी तरह बहुवचन के भी चार भांगा असंयोग लेश्या का ८ भांगा और द्विक संयोगी २४

कृष्ण नील		कृष्ण, कापोत		कृष्ण, तेजो	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३
नील, कापोत		**नील, तेजो**		**कापोत, तेजो**	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

त्रिक सयोगी ३२

कृ०	नी०	का०	कृ०	नी०	ते०	कृ०	का०	ते०	नी०	का०	ते०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	१	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

द्वि० वचन. द्विसंयोगी १२ त्रिक संयोगी ८

उ०	नि०	उ०	नो०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो०	उ०	नि०	नो०
१	१	१	१	१	१	१	१	१	३	१	१
१	३	१	३	१	३	१	१	३	३	१	३
३	१	३	१	३	१	१	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	१	३	३	३	३	३

(१६) आहारक-आहारक है भांगा २ पूर्ववत् ।

(१७) वृत्ति-अवृत्ति है भांगा २ पूर्ववत् ।

(१८) क्रिया-सक्रिय है भांगा २ पूर्ववत ।

(१९) बन्ध-सातकर्म का बन्धगा, आठ कर्म का बन्धगा जिसका भागा ८ पूर्ववत् ।

(२०) संज्ञा-आहारादि चारों संज्ञा पावे जिसके भागा ८० पूर्ववत् । लेश्या द्वारसे देखो ।

(२१) कषाय क्रोधादि चारों कषाय पावे भांगा ८० पूर्ववत्

(२२) वेद-एक नपुसक है भागा दो पूर्ववत् ।

(२३) वेदबन्ध-स्त्री, पुरुष, नपुसक तीनों वेद के बाधने वाले है भागा २६ पूर्ववत् । उश्वास द्वारकी माफीक ।

(२४) सज्ञी-असज्ञी है भागा दो पूर्ववत् ।

(२५) इंद्रिय-सइन्द्रिय है, भांगा दो पूर्ववत् ।

(२६) अनुबंध याने काय स्थिती-ज० अंतर मु० उ० असख्याते काल ।

(२७) सवेद-उत्पल कमल का जीव अन्य स्थान में जाकर पीछा उत्पल कमल में आवे जैसे पृथ्वी और उत्पल कमल के

अथश्री

शीघ्रबोध भाग ६ वां.

—>ॐ<—

थोकडा नम्बर १०५

(गुणस्थानपर ५२ द्वार)

[१] नामद्वार [२] लक्षणद्वार [३] क्रियाद्वार [४] बन्ध द्वार [५] उदय० [६] उदिर्णा० [७] सत्ता० [८] निर्जरा० [९] आत्मा० [१०] कारण० [११] भाव० [१२] परिसह० [१३] अमर० [१४] पर्याप्ता० [१५] आहारिक० [१६] सज्ञा० [१७] शरीर० [१८] संघयण० [१९] सस्थान० [२०] वेद० [२१] कषाय० [२२] सन्नी० [२३] समुद्घात० [२४ गति० [२५] जाति० [२६] काय० [२७] जीवके भेद० [२८] योग० [२९] उपयोग० [३०] लेश्या० [३१] दृष्टी० [३२] ज्ञान० [३३] दर्शन० [३४] सम्यक्त्व० [३५] चारित्र० [३६] नियंठा० [३७] समोवसरण० [३८] ध्यान० [३९] हेतु० [४०] मार्गणा० [४१] जीवयोनी० [४२] दंडक० [४३] नियमा भजना० [४४] द्रव्यप्रमाण० [४५] क्षेत्रप्रमाण० [४६] सान्तर निरन्तर० [४७] स्थिति० [४८] अन्तर० [४९] आगरेस० [५०] अव-गाहना० [५१] स्पर्शना० [५२] अल्पाबहुत्व०

[१] नामद्वार—[१] मिथ्यात्व गुणस्थानक [२] सास्वा-दन० [३] मिश्र० [४] अव्रतिसम्यक्त्वदृष्टि० [५] देशव्रती० [६] प्रमत्तसंयत० [७] अप्रमत्तसंयत० [८] निवृत्तीबादर० [९]

(७) मोक्षमार्गको ससारका मार्ग श्रद्धे-जैसे ज्ञान दर्शन चारित्रादिको ससार समझे । " मि०

(८) ससारके मार्गको मोक्षका मार्ग श्रद्धे-जैसे मृतककी पीछे पींड, श्राद्ध, ओसर, बलीदानादिको मोक्ष मार्ग समझना । मि०

(९) मोक्ष गयेको अमोक्ष समझना-जैसे केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष गयेको फिर आके अवतार लेगे ऐसा कहना । मि०

(१०) अमोक्षको मोक्ष कहना-जैसे कृष्णादिकी अभी मोक्ष नही हुवा उनको मोक्ष हुवा मानना। मि०

(११) अभिग्रह मिथ्यात्व-जैसे मिथ्यात्व हठ, कदाग्रहको पकडकर कुगुरु, कुदेव, कुधर्मपर ही श्रद्धा रखवे अपने ग्रहण कियेको मिथ्या समझने पर भी न छोडे । मि०

(१२) अनभिग्रह मिथ्यात्व-जैसे कुदेव, कुगुरु, कुधर्मपर वैसे ही सुदेव, सुगुरु, सुधर्मपर एक सरीखी श्रद्धा रखे सबको एक सरीखा माने । मि०

(१३) सशय मिथ्यात्व-वीतरागके वचनोंपर सकल्प विकल्प करना और उसपर सशय करना । मि०

(१४) अनाभोग मिथ्यात्व-जिसको धर्माधर्म, हिताहितका कुछ भी ख्याल नहीं है अजाणपनेसे या बेदरकारीसे हरएक काम करता है । मिथ्यात्वादि कों सेवन करता है मि०

(१५) अभिनिवेश मिथ्यात्व-धर्माधर्म सत्यासत्यकी गवेषणा और विचार करके उसका निश्चय होनेपर भी अपने हठको नहीं छोडना। मि०

(१६) लौकिक मिथ्यात्व-लोकोंके देखादेखी मिथ्यात्वकी क्रिया करे अर्थात् धन पुत्रादिके लिये लौकिक देवोंकी सेवा उपासना करे । मि०

रोंने मिथ्यात्वकी ४-५-१० यावत् अनेक तरहसे प्ररुपणा की है वे सब भेद एक दूसरेमें समावेस हो सकते है। परन्तु विस्तार करनेका इतना ही कारण है कि बालजीव सुगमतासे समझ सके। वास्तवमें मिथ्यात्व उसीका नाम है जो सद् वस्तुको असद् समझे। जब सुगमताके लिये इसके जितने भेद करना चाहे उतना भी हो सकते है।

मिथ्यात्वको गुणस्थानक क्यों कहा ? इसमें कौनसे गुणका स्थानक है ? अनादिकालसे जीव संसारमें पर्यटन करता आया है। यथा दृष्टांत -दो पुरुष कीसी रस्ते पर जा रहे थे और जाते २ उन दोनोंकी नजर एक सीपके टुकडा पर पडी। एकने कहा भाइ ! यह चांदीका टुकडा पडा है दूसरेने कहा चांदी नही यह सीपका टुकडा है। इसी तरह जीव अनादिकालसे संसार चक्रमे फिरते हुवे कभी भी उसको ऐसे ज्ञानकी प्राप्ति नहीं हुइ कि चांदी किसे कहते है और सीप किसे कहते हैं। आज यह ज्ञान हुवा कि उसने सफेद रंग और चमकको देख कर कहा कि यह चांदी हैं इसी विपरीत ज्ञानको मिथ्यात्व कहते है और जिस वस्तुका पहिले कुछ भी ज्ञान नहीं था उसको आज विपरीतपने जानता है वह जानना यह एक किस्मका गुण है। इसी तरह जीव अव्यवहार रासीमें भ्रमण करते अनंत काल व्यतीत हो गया परन्तु वह इस बातको नही जानता था कि देवगुरु धर्म किसे कहते हैं और क्या वस्तु हैं। आज उसको इतना क्षयोपशम हुवा हैं की वह सद्को असद् समझता है। अब क्रिमःशः सुयोग मिलेगा तो यथावत् सम्यग ज्ञानकी भी प्राप्ति हो जायगी। परन्तु जब तक मिथ्यात्व गुणस्थानककी श्रद्धा है तब-तक चतुष्क गती रुपी संसारार्णवमें भटकता ही रहेगा विना सम्यग् ज्ञानके परम सुखको प्राप्त नही कर सकता।

(२) सास्वादन गुणस्थानकका लक्षण—जीव अनादि

शासन पर प्रेम नही और अन्य धर्म पर द्वेष भी नही। शासनके सन्मुख हुवा पर स्वीकार करनेको असमर्थ है। जीव दूसरे गु० की माफक शुक्ल पक्षी है और नियमा मोक्ष जावेगा।

[४] अवृत्ति सम्यगदृष्टि गु०का लक्षण—चतुर्थ गु० प्राप्त करनेवाला जीव प्रथम ७ प्रकृत्तियोंका क्षय या उपशम करता है। यथा—

(१) अनन्तानुबन्धी क्रोध-पत्थर की रेखाके समान।
(२) ,, मान-वज्रके स्तम्भसमान।
(३) ,, माया-वांसकी जडके समान।
(४) ,, लोभ-किरमजी रेशमके रंग समान

यह चोकडि घात करे तो सम्यक्त्वकी. स्थिति करे तो यावत् जीवकी और गती करे तो नरककी।

(५) मिथ्यात्व मोहनी-मिथ्यात्वमें ही मग्न रहै।

(६) मिश्र मोहनी-यह भी सच्चा और वह भी सच्चा (मिश्रभाव)

(७) सम्यक्त्व मोहनी- क्षायक सम्यक्त्व को न आने दे और सम्य० का विराधक भी न होने दे। इन ७ प्रकृतियोंके ९ भांगे होते है।

[१] चार प्रकृति क्षय करे ३ प्र० उपशमावे तो क्षयोपशम सम्यक्त्व।

[२] पांच प्र० क्षय करे और २ प्र० उपशमावे तो क्षयोपशम

[३] छे प्र० क्षय करे १ प्र० उपशमावे तो क्षयोपशम सम्य०

[४] चार प्र० क्षय० २ प्र० उपशमावे १ वेदे तो क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व हो।

[५] ५ प्र० क्षय० १ प्र० उप० १ वेदे तो वेदक सम्य०

र्मको श्रद्धा पूर्वक जाणे, सामायिक, पोषध, प्रतिक्रमण, नौकारसी आदि तप करे, आचार विचार स्वच्छ रक्खें लोक विरुद्ध कार्य न करे, अभक्षादि तुच्छ वस्तुका परित्याग करे, और मरके वैमानिकमें जावे। इस गुणस्थानकके प्राप्त होनेसे जीव ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(६) प्रमत्त संयत गु० का लक्षण—जीव १५ प्रकृति क्षय या क्षयोपशम करनेसे इस गु० को प्राप्त करता है जिसमें ११ प्र० पूर्व कही और चार प्रत्याख्यानी चौक।

(१) क्रोध-रेतीपर गाडाकी लकीर समान।
(२) मान-काष्टके स्थम्भ समान।
(४) माया-चलते हुवे बलदके मूत्रकी धारा समान।
(५) लोभ-आंखके अजन समान ।

यह चोकडी सराग संयमकी घातक है। स्थिति इस चार मासकी है। और गती मनुष्यकी। इस गु० में जीव पंच महाव्रत, ५ समिति, ३ गुप्ति, चरणसत्तरी करणसत्तरी आदि मुनि मारग सम्यग प्रकारसे आराधे और मरके नियमा वैमानिकमें जावे। इस गु० वाला ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(७) अपमत्त संयत गु० का लक्षण—मद विषय कषाय, निद्रा और विकथा इन पाचों प्रमादको छोडके अप्रमत्त पने रहे। इस गुणस्थानवाला जीव तद्भव मोक्ष जाय या उ० ३ भव करे।

(८) निवृत्ति बादर गु० लक्षण—अपूर्वकरण शुक्ल ध्यानके प्राप्त होनेसे यह गु० प्राप्त होता है। इस गु० से जीव श्रेणी प्रारभ करते हैं. एक उपशम और दूसरी क्षपक। जो पूर्व कही १५ प्रकृतियोंको उपशमावे वह उपशम श्रेणि करे और जा

यको श्रद्धा पूर्वक जाणें, सामायिक, पोषध, प्रतिक्रमण, नौकारसी आदि तप करे, आचार विचार स्वच्छ रक्खें लोक विरुद्ध कार्य न करे, अभक्षादि तुच्छ वस्तुका परित्याग करे. और मरके वैमानिकमें जावे। इस गुणस्थानकके प्राप्त होनेसे जीव ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(६) प्रमत्त संयत गु० का लक्षण—जीव १५ प्रकृति क्षय या क्षयोपशम करनेसे इस गु० को प्राप्त करता है जिसमें ११ प्र० पूर्व कही और चार प्रत्याख्यानी चौक।

(१) क्रोध-रेतीपर गाडाकी लकीर समान।
(२) मान-काष्टके स्थम्भ समान।
(४) माया-चलते हुवे बलदके मूत्रकी धारा समान।
(५) लोभ-आंखके अजन समान ।

यह चोकडी सराग संयमकी घातक है। स्थिति इस चार मासकी है। और गती मनुष्यकी। इस गु० में जीव पंच महाव्रत, ५ समिति, ३ गुप्ति, चरणसत्तरी करणसत्तरी आदि मुनि मारग सम्यग प्रकारसे आराधे और मरके नियमा वैमानिकमें जावे। इस गु० वाला ज० ३ उ० १५ भव करके अवश्य मोक्ष जावे।

(७) अपमत्त संयत गु० का लक्षण—मद, विषय कषाय, निद्रा और विकथा इन पाचों प्रमादको छोडके अप्रमत्त पने रहे। इस गुणस्थानवाला जीव तद्भव मोक्ष जाय या उ० ३ भव करे।

(८) निवृत्ति बादर गु० लक्षण—अपूर्वकरण शुक्ल ध्यानके प्राप्त होनेसे यह गु० प्राप्त होता है। इस गु० से जीव श्रेणी प्रारभ करते हैं. एक उपशम और दूसरी क्षपक। जो पूर्व कही १५ प्रकृतियोंको उपशमावे वह उपशम श्रेणि करे और जो

क्षय करे वह क्षपक श्रेणी करता है। पन्द्रह प्रकृति पूर्व कही और हास्य, रती, अरती, शोक, भय, जुगुप्सा एवं २१ प्रकृतिका क्षय करके नौवे गु० को प्राप्त करता है।

(९) अनिवृत्ति बादर गु० लक्षण—इस गु० में स्त्री वेद, पुरुषवेद, नपुंसक वेद और संज्वलकत्रिकको क्षय करे।

(१) क्रोध-पानीकी लकीर समान।

(२) मान-तृणका स्तंभ समान।

(३) माया बांसकी छोल समान।

यह त्रिक यथाख्यात चारित्रका घातीक है, जिसमें क्रोधको दो मासकी, मानको एक मासकी, मायाकी पन्द्रह दिनकी और लोभकी [illegible] एवं कुल २७ प्रकृती क्षय या उपशम करनेसे दशवें गु० को प्राप्त करता है।

(१०) सूक्ष्मसंपराय गु० का लक्षण—यहां पर [illegible] यदि पूर्वसे उपशम करता हुआ [illegible]

[illegible]

वे गु० को प्राप्त करे और तेरवें गु० के प्रथम समय अनन्त केवल ज्ञान अनन्त केवलदर्शन अनन्तचारित्र अनन्तदानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि, और वीर्यलब्धिको प्राप्त करे। इस गु० पर ज० एक अन्तर म० उ० आठ वर्ष कम पूर्व क्रोड रह कर फिर चौदवें गु० में जावे। यहां पांच लघु अक्षर (अ इ उ ऋ लृ) उच्चार्ण काल रह कर पीछे अनंत, अव्याबाध, अक्षय, अविनाशी, सादी अनंत भंगे मोक्ष सुखको प्राप्त करता है।

(३) क्रियाद्वार--क्रियाके पांच भेद है-आरभीया परिगृहिया, मायावत्तीय, अपच्चखाणीया और मिथ्यादर्शनवत्तीया पहिले और तीजे गु० में पांचों क्रिया लागे. दूजे चौथे गु० चार क्रिया मिथ्यादर्शन० की नही। पांचमें गु० तीन क्रिया (मिथ्या द० अव्रत० नही) छठ्ठे गु० दो (आरम्भ० माया०) क्रिया तथा ७-८-९-१० गु० एक मायावतीया क्रिया और ११-१२-१३-१४ गुण० पाचों क्रिया नही, अक्रिया है।

(४) बन्धद्वार --प्रथम गु० से तीसरा वर्जके सातमें गु० तक आयुष्य वर्जके सात कर्म बान्धे और आयुष्य बाधता हुवा ८ कर्म बांधे तथा ३-८-९ वे आयुष्य वर्जके सात कर्म बांधे आयुष्यका अबन्धक है। दशमें गु० छे कर्म (आयुष्य मोह० वर्जके) बाधे ११-१२-१३ गु० एक साता वेदनी बांधे और चौदवां गु० अबंधक है।

नोट ज० ऊ० बंध स्थानक---वेदनीयका ज० बध स्थान तेरवे गु० तथा ज्ञानावर्णिय-दर्शन० नाम० गोत्र० अतराय कर्मका ज० बंध दशवें गु० और मोहनी० का ज० बन्ध स्थान नोवें गु० है तथा उत्कृष्ट बंध सातों कर्मका मिथ्यात्व गु० में होता है।

७-८-९-१० गु० में दो कारण कषाय और योग। ११-१२-१३ गु० में एक कारण योग। और चौदवे गु० में कारण नहीं।

(११) भाव द्वार—भाव पांच-औपशमिक भाव, क्षायिकभाव, क्षयोपशमिक भाव, औदयिकभाव, और परिणामिक भाव। १-२-३ गु में भाव ३ उद० क्षयो० और परि०। ४ से ११ गु० तक पाचों भाव। १२ गु० में चार भाव (उपशम वर्जके)। १३-१४ में ३ भाव क्षयो० वर्जके।

(१२) परिसह द्वार—बावीस परिसह देखो शीघ्रबोध भाग १॥ प्रथमसे नौवें गु० तक २२ परिसह, जिसमें एक समय २० वेदे-शीत, उष्ण और चलना, बैठना इन चारमेंसे दो प्रति पक्षी छोडके। १०-११-१२ गु० में १४ परिसह आठ मोहनीका वर्जके एक समय १२ वेदे। १३-१४ गु० ११ परिसह वेदे वेदनीय कर्मका।

(१३) अमर द्वार—३-१२-१३-गु० में मरे नहि शेष ११ गु० में मरे। वास्ते तीन गु० अमर है।

(१४) पर्याप्ता द्वार—१-२-४ गु० पर्याप्ता, अपर्याप्ता होवे शेष ११ गु० में केवल पर्याप्ता होवे।

(१५) आहारीक द्वार—१-२-४-१३ गु० में आहारी. अणाहारी दोनो और नौ गु० में केवल आहारी। और चौदवा गु० केवल अणाहारी।

(१६) संज्ञा द्वार—संज्ञा चार-आहार संज्ञा. भय० मैथुन० परिग्रह० पहिले गु० से पांचवें गु० तक चारों सज्ञा तथा छट्ठे गु० भजना और शेष ९ गु० में नो संज्ञा।

(१७) शरीर द्वार—शरीर ५ औदारिक. वैक्रिय, आहा-

वैक्रिय० छट्ठे गु० मे छै समु० केवली वर्जके। तेरवे गु० एक केवली समु० शेष ७ गु० में समुद्घात नहीं।

गु.	२४ गति	२५ जाति	२६ काय	२७ जीवभेद	२८ योग	२९ उपयोग	३० लेश्या	३१ दृष्टि
१	४	५	६	१४	१३	६	६	१
२	४	४	१	६	१३	६	६	१
३	४	१	१	१	१०	६	६	१
४	४	१	१	२	१३	६	६	१
५	२	१	१	१	१२	६	६	१
६	१	१	१	१	१४	७	६	१
७	१	१	१	१	११	७	३	१
८	१	१	१	१	९	७	१	१
९	१	१	१	१	९	७	१	१
१०	१	१	१	१	९	७	१	१
११	१	१	१	१	९	७	१	१
१२	१	१	१	१	९	७	१	१
१३	१	१	१	१	५-७	२	१	१
१४	१	१	१	१	०	२	०	१

(३२) ज्ञान द्वार—पहिले, तीसरे गु० मे तीन अज्ञान। २-४-५ गु० में तीन ज्ञान छट्ठेसे बारहवे गु० तक चार ज्ञान और तेरवे, चौदवे गु० एक केवल ज्ञान।

ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। १-२-३ गु० मे ध्यान दो आर्त० रौद्र० तथा ४-५ गु० तीन (आर्त० रौद्र० धर्म ध्यान) छट्ठे गु० आर्त० धर्म ध्यान। सातमे गु० में धर्म ध्यान और शेष गु० में केवल शुक्ल ध्यान है।

(३९) हेतुद्वार-हेतु ५७ है. कषाय २५ योग १५ अवृत १२ (५ इन्द्री ६ काय १ मन) और मिथ्यात्व ५ पचवीस प्रकार से नं० ११ से १५) एवं ५७ हेतु। पहिले गु० में पचावन (आहारक आहारीक मिश्र वर्जके)। दूजे गु० में पचास (पांच मिथ्यात्व वर्जके)। तीजे गु० ४३ हेतु (अनतानु बन्धी चौक और तीन योग[1] वर्जके) चोथे गु० ४६ हेतु (तीन योग[1] वधीया) पाचवे गु० ३९ हेतु (अप्रत्याख्यानी चोक, औदारिक मिश्र, कार्मण योग और त्रस जीवोंकी अवृत्त टली) छट्ठे गु० २६ हेतु-यदा आहारक मिश्र योग बधा और अवृत्त ११ प्रत्याख्यानी चौक घटा। सातमें गु० २४ हेतु- वैक्रिय मिश्र, आहारक मिश्र वर्जके। आठवे गु० २२ हेतु. (आहारक वैक्रिय योग वर्जके) नोवे गु० १६ हेतु (हास्यछक वर्जके) दशवे गु० नो योग १ संज्वल लोभ एवं १० हेतु। ११-१२ गु० हेतु नो (नौयोग) तेरवे गु० ५-७ हेतु (योग) चौदमे गु० अहेतु।

(४०) मार्गणाद्वार-एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थान जाना उसको मार्गणा कहते हैं-पहिले गु० की मार्गणा ४ पहिले गु० वाले ३-४-५-७ गु० जावे। दूसरे गु० वाला मिथ्यात्व गु० में आवे. तीजे गु० वाला १ ४ गु० में जावे। चौथे गु० वाला १-२-३-५-७ गु० में जावे। पाचवें गु० वाला १-२-३-४-७ गु० में जावे। छठे गु० वाला १-२-३-४-५-७ गु० में जावे। सातमें गु० वाला ४-६-८ गु० जावे, आठमें गु० वाला ७-९-४ गु० में जावे।

[1] औदारिक मिश्र, वैक्रिय मिश्र और कार्मण।

ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। १-२-३ गु० मे ध्यान दो आर्त० रौद्र० तथा ४-५ गु० तीन (आर्त० रौद्र० धर्म ध्यान) छट्ठे गु० आर्त० धर्म ध्यान। सातमे गु० में धर्म ध्यान और शेष गु० में केवल शुक्ल ध्यान है।

(३९) हेतुद्वार-हेतु ५७ है. कषाय २५ योग १५ अवृत १२ (५ इन्द्री ६ काय १ मन) और मिथ्यात्व ५ पचवीस प्रकार से न० ११ से १५) एवं ५७ हेतु। पहिले गु० में पचावन (आहारक आहारीक मिश्र वर्जके)। दूजे गु० में पचास (पांच मिथ्यात्व वर्जके)। तीजे गु० ४३ हेतु (अनतानु बन्धी चौक और तीन योग[1] वर्जके) चोथे गु० ४६ हेतु (तीन योग[1] वधीया) पांचवे गु० ३९ हेतु (अप्रत्याख्यानी चौक, औदारिक मिश्र, कार्मण योग और त्रस जीवोंकी अवृत्त टली (छट्ठे गु० २६ हेतु-यहा आहारक मिश्र योग वधा और अवृत्त ११ प्रत्याख्यानी चौक घटा। सातमें गु० २४ हेतु- वैक्रिय मिश्र, आहारक मिश्र वर्जके। आठवे गु० २२ हेतु (आहारक वैक्रिय योग वर्जके) नोवे गु० १६ हेतु (हास्य-छक वर्जके) दशवे गु० नौ योग १ संज्वल लोभ एवं १० हेतु। ११-१२ गु० हेतु नौ (नौयोग) तेरवे गु० ५-७ हेतु (योग) चौदमें गु० अहेतु।

(४०) मार्गणाद्वार-एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थान जाना उसको मार्गणा कहते हैं-पहिले गु० की मार्गणा ४ पहिले गु० वाले ३-४-५-७ गु० जावे। दूसरे गु० वाला मिथ्यात्व गु में आवे. तीजे गु० वाला १-४ गु० में जावे। चौथे गु० वाला १-२-३-५-७ गु० मे जावे। पांचमें गु० वाला १-२-३-४-७ गु० में जावे। छठे गु० वाला १-२-३-४-५-७ गु० मे जावे। सातमें गु० वाला ६-६-८ गु० जावे , आठमें गु० वाला ७-९-४ गु० में जावे।

---

[1] औदारिक मिश्र, वैक्रिय मिश्र और कार्मण।

ध्यान, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान। १-२-३ गु० में ध्यान दो आर्त० रौद्र० तथा ४-५ गु० तीन (आर्त० रौद्र० धर्म ध्यान) छट्ठे गु० आर्त० धर्म ध्यान। सातमे गु० में धर्म ध्यान और शेष गु० में केवल शुक्ल ध्यान है।

(३९) हेतुद्वार-हेतु ५७ है. कषाय २५ योग १५ अवृत १२ (५ इन्दी ६ काय १ मन) और मिथ्यात्व ५ पचवीस प्रकार से नं० ११ से १५) एवं ५७ हेतु। पहिले गु० में पचावन (आहारक आहारीक मिश्र वर्जके)। दूजे गु० में पचास (पांच मिथ्यात्व वर्जके)। तीजे गु० ४३ हेतु (अनंतानु बन्धी चौक और तीन योग[1] वर्जके) चोथे गु० ४६ हेतु (तीन योग[1] बधीया) पांचवे गु० ३९ हेतु। अप्रत्याख्यानी चौक, औदारिक मिश्र, कार्मण योग और त्रस जीवोंकी अवृत्त टली। छट्ठे गु० २६ हेतु-यहा आहारक मिश्र योग बधा और अवृत्त ११ प्रत्याख्यानी चौक घटा। सातमें गु० २४ हेतु- वैक्रिय मिश्र आहारक मिश्र वर्जके। आठवे गु० २२ हेतु (आहारक वैक्रिय योग वर्जके) नौवे गु० १६ हेतु (हास्य-छक वर्जके) दशवे गु० नौ योग १ संज्वल लोभ एवं १० हेतु। ११-१२ गु० हेतु नौ (नौयोग) तेरवे गु० ५-७ हेतु (योग) चौदमें गु० अहेतु।

(४०) मार्गणाद्वार-एक गुणस्थानसे दूसरे गुणस्थान जाना उसको मार्गणा कहते हैं-पहिले गु० की मार्गणा ४ पहिले गु० वाले ३-४-५-७ गु० जावे। दूसरे गु० वाला मिथ्यात्व गु में आवे. तीजे गु० वाला १-४ गु० में जावे। चौथे गु० वाला १-२-३-५-७ गु० मे जावे। पाचवें गु० वाला १-२-३-४-७ गु० में जावे। छठे गु० वाला १-२-३-४-५-७ गु० में जावे। सातमें गु० वाला ६-६-८ गु० जावे। आठमें गु० वाला ७-९-४ गु० में जावे।

---

[1] औदारिक मिश्र वैक्रिय मिश्र और कार्मण।

बारहवे गु० तक ज० संख्याते सेकडो उ० सं० सेकडो । तेरहवे ज० गु० प्रत्येक कोड । चौदहवे गु० ज० उ० प्रत्येक सो जीव मीले । इति द्वारम् ।

(४५) क्षेत्र प्रमाण द्वार—एक जीवापेक्षा पहले से चोथे गुणस्थान तक ज० अंगुलके असख्यातमे भाग उ० हजार योजन साधिक क्षेत्रमें होवे । पांचवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० हजार योजन । छटे गु० से बारहवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० पांचसो धनुष्य, तेरहवे गु० ज० प्र० हाथ उ० सर्व लोकमें चौदहवे गु० ज०प्र० हाथ उ० पांचसो धनुष्य । बहुत जीवोंकि अपेक्षा पहले गु० ज० उ० सर्व लोकमे, दूसरे गु० से बारहवे गु० तक ज० लोक के असख्यातमें भाग उ० लोकके असंख्यातमे भाग तेरहवे ज० लोक० असं० भाग० उ० सर्व लोकमें । चौदहवे गु० ज० लोक० असं० भाग, उ० लोकके असख्यातमे भाग इति ।

(४६) निरान्तर द्वार—जघन्यापेक्षा पहले गु० सर्वदा यानि सर्व कालमें पहले गुणस्थानमें जीव निरान्तर आया करते है दूसरे से चौद वे गुणस्थान तक दो समय तक निरान्तर आवे । उत्कृष्टापेक्षा-पहले गु० सर्व काल तक निरान्तर आवे. दूसरे तीसरे चोथे गु पल्योपमके असंख्यात भागके काल जीतनी वखत आवे । पांचवे गु० आवलिकाके अस० भाग० छटे सातवे गु० आठ समय तक निरान्तर आवे । आठवे से इग्यारवे गु० तक सख्यात समय तक, बारहवा आठ समय तक, तेरहवा सर्वदा चौदहवा आठ समय तक जीवों को निरान्तर आया करता है इति ।

(४७) स्थितिद्वार—जघन्य स्थिति अपेक्षा पहले तीसरे गु० अन्तर महुर्त. दूसरे से इग्यारवे तक एक समय. बार-हवे. तेरहवे चौदहवे. कि अन्तर महुर्त कि जघन्य स्थिति है

बारहवे गु० तक ज० सख्याते सेकडो उ० सं० सेकडो । तेरहवे ल० गु० प्रत्येक कोड । चौदहवे गु० ज० उ० प्रत्येक सो जीव मीले। इति द्वारम् ।

(४५) क्षेत्र प्रमाण द्वार—एक जीवापेक्षा पहले से चोथे गुणस्थान तक ज० अंगुलके असख्यातमे भाग उ० हजार योजन साधिक क्षेत्रमें होवे। पांचवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० हजार योजन। छट्टे गु० से बारहवे गु० ज० प्रत्येक हाथ उ० पांचसो धनुष्य, तेरहवे गु० ज० प्र० हाथ उ० सर्व लोकमें चौदहवे गु० ज०प्र० हाथ उ० पांचसो धनुष्य। बहुत जीवोंकि अपेक्षा पहले गु० ज० उ० सर्व लोकमें, दूसरे गु० से बारहवे गु० तक ज० लोक के असंख्यातमें भाग उ० लोकके असंख्यातमे भाग. तेरहवे ज० लोक० असं० भाग० उ० सर्व लोकमें। चौदहवे गु० ज० लोक० असं० भाग, उ० लोकके असख्यातमे भाग इति ।

(४६) निरान्तर द्वार—जघन्यापेक्षा पहले गु० सर्वदा यानि सर्व कालमें पहले गुणस्थानमें जीव निरान्तर आया करते हैं दूसरे से चोद वे गुणस्थान तक दो समय तक निरान्तर आवे। उत्कृष्टापेक्षा-पहले गु० सर्व काल तक निरान्तर आवे. दूसरे तीसरे चोथे गु० पल्योपमके असंख्यात भागके काल जीतनी वखत आवे। पांचवे गु० आवलिकाके अस० भाग० छट्टे सातवे गु० आठ समय तक निरान्तर आवे। आठवे से इग्यारवे गु० तक सख्यात समय तक, बारहवा आठ समय तक. तेरहवा सर्वदा. चोदहवा आठ समय तक जीवों को निरान्तर आया करता है इति ।

(४७) स्थितिद्वार—जघन्य स्थिति अपेक्षा पहले तीसरे गु० अन्तर महूर्त. दूसरे से इग्यारवे तक एक समय. बारहवे. तेरहवे चौदहवे. कि अन्तर महूर्त कि जघन्य स्थिति है

ख्यात वार आवे दूसरा पाच वार आवे तीजा चोथा गु० अस० वार आवे, पांचवा छट्ठा सातवा, प्रत्येक हजार वार आवे आठवा नौवा दशवा गु० नौ वार आवे इग्यारवा गु० पांच वार आवे. बारहवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे इति।

(५०) अवगाहनाद्वार—जघन्यापेक्षा, पहले से चोथे गु० तक अंगुलके असंख्यातमे भाग पांचवे से चौदह गु० तक प्रत्येक हाथकि। उत्कृष्टापेक्षा पहले से चोथे गु० एकहजार योजन साधिक पांचवे गु० से चौदहवे गु० तक पाचसो धनुष्यकि अवगाहना है इति।

(५१) स्पर्शनाद्वार--एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अंगुलके अस० भाग उ० चौदहराज दूसरे गु० ज० अगुलके अस० भाग उ० छेराज उचा. तीसरे गु० ज० अगु० छेराज उचा चोथा गु० ज० अ०गु उ० निचा ६ राजा उचा पाचराज। पांचवेसे चौदहवे गु० तक ज० प्रत्येक हाथ उ पांचवे गु निचो उचो पाचराज छठे गु० से इग्यारवे गु० तक निचो चारराज उचो सातराज बारहवे चौदहवे पाचसो धनुष्य तेरहवे गु० सर्व लोकको स्पर्श करे। घणा जीवों कि अपेक्षा पहला गुणस्थान ज० उ० सर्व लोक स्पर्श करे, दूसरे गु० ज० अगुलके असख्यातमे भाग उ० दशराज, तीसरे गु० ज० अगु० उ० सातराज. चोथे गु० ज० लोकके अस० भाग उ० आठराज. पांचवे गु० से चौदहवे गु० ज० लोकके अस० भाग० उ० इग्यारवे गु० तक सातराज. बारहवा लोक के असं० भाग तेरहवा सर्वलोक स्पर्शे चौदहवा गु० लोकके असख्यातवे भाग का क्षेत्र स्पर्श करे इति।

(५२) अल्पाबहुत्व द्वार—

(१) सबसे स्तोक इग्यारवें गु० उपशम श्रेणीवाले ५४ है

ख्यात वार आवे दूसरा पांच वार आवे तीजा चोथा गु० अस० वार आवे, पांचवा छट्टा सातवा, प्रत्येक हजार वार आवे आठवा नौवा दशवा गु० नौ वार आवे इग्यारवा गु० पांच वार आवे. बारहवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे इति।

(५०) अवगाहनाद्वार—जघन्यापेक्षा, पहले से चोथे गु० तक अंगुलके असख्यातमे भाग पांचवे से चौदह गु० तक प्रत्येक हाथकि। उत्कृष्टापेक्षा पहले से चोथे गु० एकहजार योजन साधिक पांचवे गु० से चौदहवे गु० तक पांचसो धनुष्यकि अवगाहना है इति।

(५१) स्पर्शनाद्वार--एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अगुलके असं० भाग उ० चौद्दराज दूसरे गु० ज० अंगुलके अस० भाग उ० छेराज उचा. तीसरे गु० ज० अगु० छेराज उचा चोथा गु० ज० अ० गु उ० निचा ६ राजा उचा पांचराज। पांचवेसे चौदहवे गु० तक ज० प्रत्येक हाथ उ पाचवे गु निचो उचो पांचराज. छठे गु० से इग्यारवे गु० तक निचो चारराज उचो सातराज बारहवे चौदहवे पांचसो धनुष्य तेरहवे गु० सर्व लोकको स्पर्श करे। घणा जीवों कि अपेक्षा पहला गुणस्थान ज० उ० सर्व लोक स्पर्श करे, दूसरे गु० ज० अगुलके असख्यातमे भाग उ० दशराज, तीसरे गु० ज० अगु० उ० सातराज. चोथे गु० ज० लोकके अस० भाग उ० आठराज पाचवे गु० से चौदहवे गु० ज० लोकके अस० भाग० उ० इग्यारवे गु० तक सातराज. बारहवा लोक के असं० भाग तेरहवा सर्वलोक स्पर्श चौदहवा गु० लोकके असख्यातमे भाग का क्षेत्र स्पर्श करे इति।

(५२) अल्पाबहुत्व द्वार-

(१) सबसे स्तोक इग्यारवे गु० उपशम श्रेणीवाले ५४ है

ख्यात वार आवे दूसरा पांच वार आवे तीजा चोथा गु० अस० वार आवे, पांचवा छट्ठा सातवा, प्रत्येक हजार वार आवे आठवा नौवा दशवा गु० नौ वार आवे इग्यारवा गु० पांच वार आवे. बारहवा तेरहवा चौदहवा एक वार आवे इति।

(५०) अवगाहनाद्वार—जघन्यापेक्षा, पहले से चोथे गु० तक अंगुलके असख्यातमे भाग पांचवे से चौदह गु० तक प्रत्येक हाथकि। उत्कृष्टापेक्षा पहले से चोथे गु० एकहजार योजन साधिक पांचवे गु० से चौदहवे गु० तक पांचसो धनुष्यकि अवगाहना है इति।

(५१) स्पर्शनाद्वार--एक जीवापेक्षा पहले गु० ज० अगुलके असं० भाग उ० चौदहराज दूसरे गु० ज० अगुलके अस० भाग उ० छेराज उचा. तीसरे गु० ज० अगु० छेराजउचा चोथा गु० ज० अ०गु उ० निचा ६ राजा उचा पाचराज। पांचवेसे चौदहवे गु० तक ज० प्रत्येक हाथ उ० पांचवे गु निचो उचो पांचराज. छठे गु० से इग्यारवे गु० तक निचो चारराज उंचो सातराज बारहवे चौदहवे पांचसो धनुष्य तेरहवे गु० सर्व लोकको स्पर्श करे। घणा जीवों कि अपेक्षा पहला गुणस्थान ज० उ० सर्व लोक स्पर्श करे, दूसरे गु० ज० अगुलके असख्यातमे भाग उ० दशराज, तीसरे गु० ज० अगु० उ० सातराज. चोथे गु० ज० लोकके अस० भाग उ० आठराज. पांचवे गु० से चौदहवे गु० ज० लोकके अस० भाग० उ० इग्यारवे गु० तक सातराज. बारहवा लोक के असं० भाग तेरहवा सर्वलोक स्पर्शे चौदहवा गु० लोकके असख्यातवे भाग का क्षेत्र स्पर्श करे इति।

(५२) अल्पाबहुत्व द्वार—

(१) सबसे स्तोक इग्यारवें गु० उपशम श्रेणीवाले ५४ है

उत्पन्न हो इसी तरह एक ही कायमे वारंवार जन्ममरण करे। तो असख्याते काल तक रह सके उसे काय स्थिति कहते है ।

सूचना.

१ पुढवीकाल-द्रव्य से असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल, क्षेत्र से असख्याते लोक॥ काल से असख्या काल और भाव से अंगुलके अस० भागमे जितने आकाश प्रदेश हो उतने लोक।

२ असख्याते काल-द्रव्य से क्षेत्र से काल से तो पूर्ववत और भाव से आवलीकाके अस० भागमें जितना समय हो उतना लोक।

३ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन-जैसे द्रव्य से अनन्ती उत्स० अवस० क्षेत्र से अनन्ता लोक, कालसे अनंतोकाल भाव से अर्द्ध पुद्गल परावर्तन

४ वनस्पति काल-द्रव्य से अनंती सर्पिणि उत्सर्पिणि क्षेत्र से अनंतेलोक, कालसे अनंतोकाल. भावसे असंख्याता पुद्गल परावर्तन ।

५ अ० अ —अनादि अनन्त। ७ अ० सा०-अनादिसान्त।

६ सा० अ०—सादि अनन्त । ८ सा० सा०—सादिसान्त।

गाथा—जीवं गेइंदियं काएं जोएं वेद कसायं लेसायं।
सम्मत्तणाण दंसणं संजमे उवओगे आहारे ॥ १॥
भासगयं परित्तं पज्जत्तं सुहूंम संन्नी भवंऽन्धिं चरिमेयं।
एतेसित पदाणं कायठिई होइ णायव्वा ॥ २ ॥

उत्पन्न हों इसी तरह एक ही कायमे वारंवार जन्ममरण करे। तो असंख्याते काल तक रह सके उसे काय स्थिति कहते है ।

सूचना.

१ पुढवीकाल-द्रव्य से असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल, क्षेत्र से असंख्याते लोक ॥ काल से असंख्या काल और भाव से अंगुलके अस० भागमें जितने आकाश प्रदेश हो उतने लोक ।

२ असंख्याते काल-द्रव्य से क्षेत्र से काल से तो पूर्ववत् और भाव से आवलीकाके अस० भागमे जितना समय हो उतना लोक ।

३ अर्द्ध पुद्गल परावर्तन-जैसे द्रव्य से अनन्ती उत्स० अवस० क्षेत्र से अनन्ता लोक, कालसे अनंतोकाल भाव से अर्द्ध पुद्गल परावर्तन

४ वनस्पति काल-द्रव्य से अनंती सर्पिणि उत्सर्पिणि क्षेत्र से अनंतेलोक, कालसे अनंतोकाल. भावसे असंख्याता पुद्गल परावर्तन ।

५ अ० अ —अनादि अनन्त । ७ अ० सा०—अनादिसान्त ।

६ सा० अ०—सादि अनन्त । ८ सा० सा०—सादिसान्त ।

गाथा--जीवं गेइंदियँ काएं जोए वेदे कसायं लेसायं ।

सम्मत्तणांण दंसणं संजमे उवओगे आहारे ॥ १४ ।

भासगयं परित्तं पज्जत्तं सुहूम सेन्नी भवंऽत्थिं चरिमेयं ।

एतेसित पदाणं कायठिई होइ णायव्वा ॥ २ ॥

२१ पर्याप्ता तीर्यचणी	अन्तर मुहूर्त	३ पल्य अ. मु. उणा
२२ ,, मनुष्य	,,	,, ,,
२३ ,, मनुष्यणी	,,	,, ,,
२४ सइन्द्रिय	०	अनादि अनं. अना. सां०
२५ एकेन्द्रिय	अन्तर मुहूर्त	अनंतकाल (वना०)
२६ बेरिन्द्रिय	,,	सख्याते वर्ष
२७ तेरेन्द्रिय	,,	,,
२८ चौरिन्द्रिय	,,	,,
२९ पंचेन्द्रिय	,,	१००० सागर० साधिक
३० अनेन्द्रिय	०	सादी अनन्त
३१ सकायी	०	अन० अन्त० अ० सा०
३२ पृथ्वीकाय	अन्तर मुहूर्त	असख्याते काल
३३ अप्पकाय	,,	,,
३४ तेउकाय	,,	,,
३५ वायुकाय	,,	,,
३६ वनस्पतिकाय	,,	अनतकाल (वन०)
३७ त्रसकाय	,,	२००० सागर स० वर्ष
३८ अकाय	सादि अणत	सादी अनन्त
४५-३१ से३७न. अप.	अन्तर मु०	अन्तर मुहूर्त
५०-३२ से ३६ नं. प०	,,	संख्याता वर्ष
५१ सकाय पर्याप्ता	,,	प्रत्येक सौ सागर
५२ त्रस पर्याप्ता	,,	,,
५३ समुचय बादर	,,	असं. काल असं. जितने
५४ बादर वनस्पति	,,	लोकाकाश प्रदेश हो

२१ पर्याप्ता तीर्यचणी	अन्तर मुहूर्त	३ पल्य अ. मु. उणा
२२ ,, मनुष्य	,,	,, ,,
२३ ,, मनुष्यणी	,	,, ,,
२४ सइन्द्रिय	०	अनादि अनं. अना. सां०
२५ एकेन्द्रिय	अन्तर मुहूर्त	अनंतकाल (वना०)
२६ बेरिन्द्रिय	,,	संख्याते वर्ष
२७ तेरेन्द्रिय	,,	,,
२८ चौरिन्द्रिय	,,	,,
२९ पंचेन्द्रिय	,,	१००० सागर० साधिक
३० अनेन्द्रिय	०	सादी अनन्त
३१ सकायी	०	अन० अन्त० अ० सा०
३२ पृथ्वीकाय	अन्तर मुहूर्त	असख्याते काल
३३ अप्पकाय	,,	,,
३४ तेउकाय	,,	,,
३५ वायुकाय	,,	,,
३६ वनस्पतिकाय	,,	अनतकाल (वन०)
३७ त्रसकाय	,,	२००० सागर स० वर्ष
३८ अकाय	सादि अणत	सादी अनन्त
४५-३१ से ३७नं. अप.	अन्तर मु०	अन्तर मुर्न्त
५०-३२ से ३६ नं. प०	,,	संख्याता वर्ष
५१ सकाय पर्याप्ता	,,	प्रत्येक नौ सागर
५२ त्रस पर्याप्ता	,,	,,
५३ समुचय बादर	,,	असं. काल असं. जितने
५४ बादर वनस्पति	,,	लोकाकाश प्रदेश हो

१०९ सवेदी	०	अ० अ० अ० सां, सा० सा
११० स्त्रीवेद	१ समय	११० पल्यो. पृ को. पृ. सा.
१११ पुरुषवेद	अन्तरमुहूर्त	प्रत्येक सो सागरो०
११२ नपुसकवेद	१ समय	अनन्त काल (वन)
११३ अवेदी	सादी अनन्त	सा. सा. ज १ स उ अ.मु.
११४ सकषाई	अ. अ. अ. सां	
,, सादिसान्त	सा. सा.	देशोन अर्द्ध पुद्गल
११५ क्रोध	अन्तरमुहूर्त	अन्तरमुहूर्त
११६ मान	,,	,
११७ माया	,,	,,
११८ लोभ	१ समय	,,
११९ अकषाई	सा अ. सा सा	ज १ समय उ० अ. मु.
१२० सलेशी	.	अना० अ. अ० सां
१२१ कृष्णलेशी	अन्तरमुहूर्त	३३ सागर अं. मु. अधिक
१२२ नीललेशी	,,	१० , पल्य असं. भा. अ.
१२३ कापोतलेशी	,,	३ , ,,
१२४ तेजोलेशी	,,	२ ,, ,,
१२५ पद्मलेशी	,,	१० ,, अन्तरमु. अधिक
१२६ शुक्ललेशी	,,	३३ ,, ,,
१२७ अलेशी		सादि अनन्त
१२८ सम्यक्त्वदृष्टि	अन्तरमुहूर्त	सा.अ.सा सां,६६सा.सा.
१२९ मिथ्यादृष्टि	अ अ. अ. सा	सा सा
,, सादि सान्त	अन्तर मुहूर्त	अनन्तकाल (अर्द्ध पुद्गल)
१३० मिश्रदृष्टी	,,	अन्तर मुहूर्त

१०९ सवेदी	०	अ० अ. अ० सां, सा० सा
११० स्त्रीवेद	१ समय	११० पल्यो. पृ को. पृ. सा.
१११ पुरुषवेद	अन्तरमुहूर्त	प्रत्येक सो सागरो०
११२ नपुसकवेद	१ समय	अनन्त काल (वन)
११३ अवेदी	सादी अनन्त	सा. सा. ज १ स उ अ.मु.
११४ सकषाई	अ. अ. अ. सां	
,, सादिसान्त	सा. सा.	देशोन अर्द्ध पुद्गल
११५ क्रोध	अन्तरमुहूर्त	अन्तरमुहूर्त
११६ मान	,,	.
११७ माया	,,	,,
११८ लोभ	१ समय	,,
११९ अकषाई	सा.अ. सा सा	ज. १ समय उ० अ. मु.
१२० सलेशी		अना० अ. अ० सा.
१२१ कृष्णलेशी	अन्तरमुहूर्त	१३ सागर अं. मु अधिक
१२२ नीललेशी	,	१० , पल्य अस.भा.अ.
१२३ कापोतलेशी	,,	३ , ,,
१२४ तेजोलेशी	,,	२ .. ..
१२५ पद्मलेशी	,,	१० ,. अन्तरमु. अधिक
१२६ शुक्ललेशी	,,	३३ .. ..
१२७ अलेशी		सादि अनन्त
१२८ सम्यक्त्वदृष्टि	अन्तरमुहूर्त	सा.अ.सा सां.६६सा.सा.
१२९ मिथ्यादृष्टि	अ अ. अ. सा.	सा सा.
,, सादि सन्त	अन्तर मुहूर्त	अनन्तकाल अर्द्ध पुद्गल
१३० मिश्रदृष्टी	,,	अन्तर मुहूर्त

१५४ समायक चा०	१ समय	देशोण पूर्व क्रोड
१५५ छेदोपस्थापनीय	अन्तर मुहूर्त	,,
१५६ परिहार वि०	,, १८ मास	,,
१५७ सुक्ष्म सपराय०	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१५८ यथाख्यात०	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५९ साकार उपयोग	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
१६० अनाकार उप०	,,	,,
१६१ आहारक छद्मस्थ	क्षुलक भवदो०स	मय न्यून अस० काल×
१६२ आहारक केवली	अन्तर मुहूर्त	देशोण पूर्व क्रोड
१६३ अणाहारी छद्म०	१ समय	दो समय
१६४ ,, केवली सयोगी	३ समय	३ समय
१६५ ,, केवली अयोगी	पांच हृस्व अक्ष	र उच्चार्ण काल
१६६ सिद्ध		सादि अनन्त
१६७ भापक	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१६८ अभापक सिद्ध		सादि अनन्त
१६९ अभापक ससारी	अन्तर मुहूर्त	अनन्त काल
१७० कायपरत	,,	अस. काल (पुढवीकाल)
१७१ ससार परत	,,	अर्द्ध पुद्गल परावर्त
१७२ काय अपरत	,,	अनन्तकाल (घना काल
१७३ संसार अपरत		अ० अ० अ०, सां०
१७४ नोपरतापरत		सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर मुहूर्त	पृथक्त्व सौ सागरो माधिक
१७६ अपर्याप्ता	,,	अन्तर मुहूर्त

× विरह न करे।

१५४ समायक चा०	१ समय	देशोण पूर्व क्रोड
१५५ छेदोपस्थापनीय	अन्तर मुहूर्त	,,
१५६ परिहार वि०	,, १८ मास	,,
१५७ सुक्ष्म सपराय०	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१५८ यथाख्यात०	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५९ साकार उपयोग	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
१६० अनाकार उप०	,,	,,
१६१ आहारक छद्मस्थ	क्षुलक भवदो०स	मय न्यून असं० काल×
१६२ आहारक केवली	अन्तर मुहूर्त	देशोण पूर्व क्रोड
१६३ अणाहारी छद्म०	१ समय	दो समय
१६४ ,,केवली सयोगी	३ समय	३ समय
१६५ ,,केवली अयोगी	पांच ह्रस्व अक्ष	र उच्चार्ण काल
१६६ सिद्ध	.	सादि अनन्त
१६७ भाषक	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१६८ अभाषक सिद्ध		सादि अनन्त
१६९ अभाषक संसारी	अन्तर मुहूर्त	अनन्त काल
१७० कायपरत	,,	असं. काल (पुढवीकाल)
१७१ ससार परत	,,	अर्द्ध पुद्गल परावर्त
१७२ काय अपरत	,,	अनन्तकाल (वना काल)
१७३ संसार अपरत		अ० अ० अ०, सा०
१७४ नोपरतापरत	.	सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर मुहूर्त	पृथक्त्व सो सागरो साधिक
१७६ अपर्याप्ता	,,	अन्तर मुहूर्त

× विग्रह न करे।

१५४ समायक चा०	१ समय	देशोण पूर्व क्रोड
१५५ छेदोपस्थापनीय	अन्तर मुहूर्त	,,
१५६ परिहार वि०	,, १८ मास	,,
१५७ सुक्ष्म संपराय०	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१५८ यथाख्यात०	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५९ साकार उपयोग	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
१६० अनाकार उप०	,,	,,
१६१ आहारक छद्मस्थ	क्षुलक भवदो०स	मय न्यून असं० काल×
१६२ आहारक केवली	अन्तर मुहूर्त	देशोण पूर्व क्रोड
१६३ अणाहारी छद्म०	१ समय	दो समय
१६४ ,,केवली सयोगी	३ समय	३ समय
१६५ ,,केवली अयोगी	पांच हृस्व अक्ष	र उच्चार्ण काल
१६६ सिद्ध	.	सादि अनन्त
१६७ भाषक	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१६८ अभाषक सिद्ध		सादि अनन्त
१६९ अभाषक संसारी	अन्तर मुहूर्त	अनन्त काल
१७० कायपरत	,,	असं. काल (पुढवीकाल)
१७१ ससार परत	,,	अर्द्ध पुद्गल परावर्त
१७२ काय अपरत	,,	अनन्तकाल (वना काल)
१७३ संसार अपरत		अ० अ० अ०, सा०
१७४ नोपरतापरत		सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर मुहूर्त	पृथक्त्य सो सागरो साधिक
१७६ अपर्याप्ता	,,	अन्तर मुहूर्त

× विरह न करे ।

१५४ समायक चा०	१ समय	देशोण पूर्व क्रोड
१५५ छेदोपस्थापनीय	अन्तर मुहूर्त	,,
१५६ परिहार वि०	,, १८ मास	,,
१५७ सुक्ष्म संपराय०	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१५८ यथाख्यात०	,,	देशोण पूर्व क्रोड
१५९ साकार उपयोग	अन्तर मुहूर्त	अन्तर मुहूर्त
१६० अनाकार उप०	,,	,,
१६१ आहारक छद्मस्थ	क्षुलक भवदो०स	मय न्यून असं० काल×
१६२ आहारक केवली	अन्तर मुहूर्त	देशोण पूर्व क्रोड
१६३ अणाहारी छद्म०	१ समय	दो समय
१६४ ,, केवली सयोगी	३ समय	३ समय
१६५ ,, केवली अयोगी	पांच ह्रस्व अक्ष	र उच्चार्ण काल
१६६ सिद्ध		सादि अनन्त
१६७ भाषक	१ समय	अन्तर मुहूर्त
१६८ अभाषक सिद्ध		सादि अनन्त
१६९ अभाषक संसारी	अन्तर मुहूर्त	अनन्त काल
१७० कायपरत	,,	असं. काल (पुढवीकाल)
१७१ संसार परत	,,	अर्द्ध पुद्गल परावर्त
१७२ काय अपरत	,,	अनन्तकाल (वना. काल)
१७३ संसार अपरत	.	अ० अ० अ०, सा०
१७४ नोपरतापरत		सादि अनन्त
१७५ पर्याप्ता	अन्तर मुहूर्त	पृथक्त्व सो सागरो साधिक
१७६ अपर्याप्ता	,,	अन्तर मुहूर्त

× विचार न करें।

थोकडा नं० १०७

श्री पन्नवरणा सूत्र पद ३.

(अल्पाबहुत्व)

जीव ९ गति ५ इन्द्रिय ७ काय ८ योग ५ वेद ५ कषाय ६ लेश्या ८ सम्यक्त्व ३ नाण ८ दर्शन ४ संयम ७ उपयोग २ आहार २ भाषक २ परत ३ पर्याप्ता ३ सुक्ष्म ३ सन्नी ३ भव्य ३ अस्तिकाय ५ चर्म २ इन २२ द्वारोंका अलग २ अल्पाबहुत्व तथा जीवोंके १४ भेद, गुणस्थानक १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ५ एवं ६२ बोल उतारे जावेंगे।

मार्गणा.	जी० गु० यो० उ० ले०	अल्पाबहुत्व
१ समुच्चय जीवोंमें	१४-१४-१५-१२-६	वि० ९
२ नारकीमें	३—४-११—९-३	असं० गु० ३
३ तीर्यचमें	१४—५-१३—९-६	अनं० गु० ८
४ तीर्यचणीमे	२—५-१३—९-६	असं० गु० ४
५ मनुष्यमें	३-१४-१५-१२-६	असं० गु० २
६ मनुष्यणीमें	२-१४-१३-१२-६	स्तोक १
७ देवतामें	३—४-११—९-६	असं० गु० ५
८ देवीमें	२—४-११—९-४	सं० गु० ६
९ सिद्धमें	०—०—०—२-०	अनं० गु० ७

४ काययोगी	१४-१३-१५-१२-६	अनं० गु० ४
५ अयोगी	१—१—०—२-०	अनं० गु० ३
१ सवेदी	१४—९-१५-१०-६	वि० ५
२ स्त्रीवेदी	२—९-१३-१०-६	सं० गु० २
३ पुरुषवेदी	२—९-१५-१०-६	स्तोक १
४ नपुंसकवेदी	१४—९-१५-१०-६	अनं० गु० ४
५ अवेदी	१—५-११— ९-१	अनं० गु० ३
१ सकषायी	१४-१०-१५-१० ६	वि० ६
२ क्रोध०	१४—९-१५ १०-६	वि० ३
३ मान०	१४—९-१५-१०-६	अनं० गु० २
४ माया०	१४—९ १५-१०-६	वि० ४
५ लोभ०	१४-१०-१५-१०-६	वि० ५
६ अकषायी	१—४—११—९-१	स्तोक १
१ सलेशी	१४-१३-१५-१२-६	वि० ८
२ कृष्णलेशी	१४—६-१५-१०-१	वि० ६
३ नील०	१४—६—१५-१० १	वि० ७
४ कापोत०	१४ - ६-१५-१०-१	अनं० ५
५ तेजो०	३— ७-१५-१०-१	सं० गु० ३
६ पद्म०	२— ७-१५-१०-१	सं० गु० २
७ शुक्ल०	२-१३-१५-१२-१	स्तोक १
८ अलेशी०	१—१— ०—२-०	अनं० गु० ४
१ सम्यगदृष्टी	६-१२-१५—९-६	अनं० गु० २
२ मिथ्यादृष्टी	१४—१-१३—६-६	अनं० गु० ३

४ काययोगी	१४-१३-१५-१२-६	अनं० गु० ४
५ अयोगी	१—१—०—२-०	अनं० गु० ३

१ सवेदी	१४—९-१५-१०-६	वि० ५
२ स्त्रीवेदी	२—९-१३-१०-६	सं० गु० २
३ पुरुषवेदी	२—९-१५-१०-६	स्तोक १
४ नपुंसकवेदी	१४—९-१५-१०-६	अन० गु० ४
५ अवेदी	१—५-११— ९-१	अनं० गु० ३

१ सकषायी	१४-१०-१५-१० ६	वि० ६
२ क्रोध०	१४—९-१५-१०-६	वि० ३
३ मान०	१४—९-१५-१०-६	अनं० गु० २
४ माया०	१४—९-१५-१०-६	वि० ४
५ लोभ०	१४-१०-१५-१०-६	वि० ५
६ अकषायी	१—४—११—९-१	स्तोक १

१ सलेशी	१४-१३-१५-१२-६	वि० ८
२ कृष्णलेशी	१४—६-१५-१०-१	वि० ६
३ नील०	१४—६—१५-१०-१	वि० ७
४ कापोत०	१४ - ६-१५-१०-१	अन० ५
५ तेजो०	३— ७-१५-१०-१	सं० गु० ३
६ पद्म०	२— ७-१५-१०-१	सं० गु० २
७ शुक्ल०	२-१३-१५-१२-१	स्तोक १
८ अलेशी०	१—१— ०—२-०	अनं० गु० ४

१ सम्यगदृष्टी	६-१२-१५—९-६	अनं० गु० २
२ मिथ्यादृष्टी	१४—१-१३—६-६	अनं० गु० ३

६ यथाख्यात	१—४-११—९-१	सं० गु० ३
७ संयमासंयम	१—१-१२—६-६	अस० गु० ७
८ असंयम	१४—४-१३—९-६	अन० गु० ८
१ साकारउपयोग	१४-१४-१५-१२-६	सं० गु० २
२ अनाकारउपयोग	१४-१३-१५-१२-६	स्तोक १
१ आहारिक	१४-१३-१४-१२-६	असं० गु० २
२ आणाहारिक	८—५—१—१०-६	स्तोक १
१ भाषक	५-१३-१४-१२-६	स्तोक १
२ अभाषक	१०—५—५-१०-६	अनं० गु० २
१ परत	१४-१४-१५-१२-६	स्तोक १
२ अपरत	१४—१-१३—६-६	अन० गु० ३
३ नोपरतापरत	०—०— —२—०	अन० गु० २
१ पर्याप्ता	७-१४-१४-१२-६	सं० गु० ३
२ अपर्याप्ता	७-३-०-६-६	अन० गु० २
३ नोपर्याप्ताअपर्याप्ता	०—०— —२-०	स्तोक १
१ सुक्ष्म	२—१—३—३-३	असं० गु० ३
२ बादर	१२-१४-१५-१२-६	अनं० गु० २
३ नोसुक्ष्मनोबादर	०— —०—२-०	स्तोक १
१ सन्नी	२-१२-१५-१०-६	स्तोक १
२ असंन्नी	१२—२—६—६-४	अनं० गु० ३
३ नोसन्नीनोअसन्नी	१—२-५॥७—२-१	अनं गु० २

६ यथाख्यात	१—४-११—९-१	सं० गु० ३
७ संयमासयम	१—१-१२—६-६	अस० गु० ७
८ असंयम	१४—४-१३—९-६	अन० गु० ८
१ साकारउपयोग	१४-१४-१५-१२-६	सं० गु० २
२ अनाकारउपयोग	१४-१३-१५-१२-६	स्तोक १
१ आहारिक	१४-१३-१४-१२-६	असं० गु० २
२ अणाहारिक	८—५—१—१०-६	स्तोक १
१ भाषक	५-१३-१४-१२-६	स्तोक १
२ अभाषक	१०—५—५-१०-६	अन० गु० २
१ परत	१४-१४-१५-१२-६	स्तोक १
२ अपरत	१४—१-१३—६-६	अन० गु० ३
३ नोपरतापरत	०—०— —२—०	अन० गु० २
१ पर्याप्ता	७-१४-१४-१२-६	सं० गु० ३
२ अपर्याप्ता	७-३-०-९-६	अनं० गु० २
३ नोपर्याप्ताअपर्याप्ता	०—०— —२-०	स्तोक १
१ सुक्ष्म	२—१—३—३-३	असं० गु० ३
२ बादर	१२-१४-१५-१२-६	अनं० गु० २
३ नोसुक्ष्मनोबादर	०— —०—२-०	स्तोक १
१ सन्नी	२-१२-१५-१०-६	स्तोक १
२ असन्नी	१२—२—६—६-४	अनं० गु० ३
३ नोसन्नीनोअसन्नी	१—२-५।७—२-१	अनं० गु० २

नारकीसे निकल कर अनन्तर अन्त क्रिया करे या परंपर अन्त क्रिया करे ? गो॰ अनन्तर और परम्पर अन्त क्रिया करे। एवं रत्नप्रभा॰ शर्कराप्रभा वालूकाप्रभा, और पंकप्रभा, समझ लेना शेष धूमप्रभा, तम॰प्रभा, और तमस्तमःप्रभा॰ अनन्तर अन्त क्रिया न करे किन्तु परम्पर अन्त क्रिया कर सके।

असुरादि दशों देवता परंपर अनतर दोनों अन्त करे। एव पृथ्वी, पाणी. वनस्पति भी समझ लेना और तेउ वाउ, तीन विकलेन्द्रि अनंतर नहीं किन्तु परंपर अन्त क्रिया कर सके।

तिर्यच पचेन्द्रि मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक अनं॰ परं दोनों करे। अगर जो नारकी अन्त क्रिया करे तो एक समय कितना करे इसका अधिकार सिझणा द्वारमें सविस्तार लिखा है। देखो थोकडा नम्बर १२०।

नारकी मरके नारकीमें उपजे ? गो॰ नहीं उपजे एवं २२ दण्डक नारकी में नही उपजे। तीर्यच पंचेन्द्रिमे कोई उपजे कोई नहीं उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेको मिले? कोईको मिले कोईको न मिले। जिसको मिले वह समजे? कोई समजे कोई नहीं समजे। जो समझे उसको मतिश्रुति ज्ञान मिले ? हां नियमा मिले। जिसको मतिश्रुति ज्ञान मिले वह व्रत नियम उपवास पोसह पच्चकखाणादि करे? कोई करे कोई न करे। जो व्रतादि करे उसको अवधिज्ञान होवे ? किसीको अवधिज्ञान उपजे किसीको नही उपजे। जिसको अवधिज्ञान उपजे वह दिक्षाले ? नही लेवे।

नारकी मनुष्य पने उपजे उसकी व्याख्या अवधिज्ञान तक तीर्यचवत् करनी। आगे जिसको अवधिज्ञान हो वह दिक्षा ले ? कोई ले और कोई न भी ले। जो दीक्षा ले उसको मन.

१ भव्य	१४-१४-१५-१२-६	अनं० गु० ३
२ अभव्य	१४—१-१३—६-६	स्तोक १
३ नोभव्याभव्य	०—०—०—२-०	अनं० गु० २
१ चरम	१४-१४-१५-१२-६	अनं० गु० २
२ अचरम	१४—१-१३—८-६	स्तोक १

पंच अस्तिकायकी अल्पाबहुत्व शीघ्रबोध भाग ८ वां में देखो।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०८।

श्री पन्नवणा सूत्र पद १०

(क्रियाधिकार)

हे भगवान ! जीव अन्त क्रिया करे ? गौतम ! कोई करे कोई न करे ! एवं नरकादि यावत् २४ दंडक और एक समुचय जीव एवं २५ एक जीवाश्रीय और इसी तरह २५ दंडक घणा जीवाश्रीय कुल ५० सूत्र हुवे ।

नारकी नारकीपने अन्त क्रिया करे ? गौ० नहीं करे एवं मनुष्य वर्जके शेष २३ दंडक भी कह देना । मनुष्यमें कोई अन्त क्रिया करे कोई न करे । असुर कुमार असुर कुमारपने अन्त क्रिया करे ? गौ० नहीं करे एवं मनुष्य वर्जके २३ दंडक कहना और मनुष्यमें अन्त क्रिया कोई करे कोई न करे इसी तरह २४ दंडक चौवीस दंडक पने लगा लेना । चौवीसको २४ गुणा करनेसे ६ सूत्र ।

नारकीसे निकल कर अनन्तर अन्त क्रिया करे या परंपर अन्त क्रिया करे ? गो० अनन्तर और परम्पर अन्त क्रिया करे। एवं रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा, और पंकप्रभा, समझ लेना शेष धूमप्रभा, तमःप्रभा, और तमस्तमःप्रभा, अनन्तर अन्त क्रिया न करे किन्तु परम्पर अन्त क्रिया कर सके।

असुरादि दशों देवता परंपर अनंतर दोनों अन्त करे। एवं पृथ्वी, पाणी, वनस्पति भी समझ लेना और तेउ वाउ, तीन विकलेन्द्रि अनंतर नही किन्तु परंपर अन्त क्रिया कर सके।

तिर्यच पचेन्द्रि मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक अनं० परं० दोनों करे। अगर जो नारकी अन्त क्रिया करे तो एक समय कितना करे इसका अधिकार सिद्धगणा द्वारमें सविस्तार लिखा हैं। देखो थोकडा नम्बर १२०।

नारकी मरके नारकीमे उपजे ? गो० नहीं उपजे एवं २२ दण्डक नारकी में नही उपजे। तीर्यच पंचेन्द्रिमें कोई उपजे कोई नही उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररुपित धर्म सुननेको मिले? कोईको मिले कोईको न मिले। जिसको मिले वह समजे? कोई समजे कोई नहीं समजे। जो समझे उसको मतिश्रुति ज्ञान मिले ? हा नियमा मिले। जिसको मतिश्रुति ज्ञान मिले वह व्रत नियम उपवास पोसह पच्चक्खाणादि करे? कोई करे कोई न करे। जो व्रतादि करे उसको अवधिज्ञान होवे ? किसीको अवधिज्ञान उपजे किसीको नहीं उपजे। जिसको अवधिज्ञान उपजे वह दिक्षाले ? नही लेवे।

नारकी मनुष्य पने उपजे उसको व्याख्या अवधिज्ञान तक तीर्यचवत् करनी। आगे जिसको अवधिज्ञान हो वह दिक्षा ले ? कोई ले और कोई न भी ले। जो दीक्षा ले उसको मन.

नारकीसे निकल कर अनन्तर अन्त क्रिया करे या परंपर अन्त क्रिया करे ? गो० अनन्तर और परम्पर अन्त क्रिया करे। एवं रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा वालूकाप्रभा, और पंकप्रभा, समझ लेना शेष धूमप्रभा, तमःप्रभा, और तमस्तमःप्रभा, अनन्तर अन्त क्रिया न करे किन्तु परम्पर अन्त क्रिया कर सके।

असुरादि दशों देवता परंपर अनंतर दोनों अन्त करे। एवं पृथ्वी, पाणी, वनस्पति भी समझ लेना और तेउ वाउ, तीन विकलेन्द्रि अनंतर नही किन्तु परंपर अन्त क्रिया कर सके।

तिर्यच पचेन्द्रि मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक अनं० परं दोनों करे। अगर जो नारकी अन्त क्रिया करे तो एक समय कितना करे इसका अधिकार सिद्धपणा द्वारमें सविस्तार लिखा है। देखो थोकडा नम्बर १२०।

नारकी मरके नारकीमें उपजे ? गो० नहीं उपजे एव २२ दंडक नारकी मे नही उपजे। तीर्यच पंचेन्द्रिमें कोई उपजे कोई नही उपजे। जो उपजे उसको केवली प्ररूपित धर्म सुननेको मिले ? कोईको मिले कोईको न मिले। जिसको मिले वह समजे ? कोई समजे कोई नहीं समजे। जो समझे उसको मतिश्रुति ज्ञान मिले ? हा नियमा मिले। जिसको मतिश्रुति ज्ञान मिले वह व्रत नियम उपवास पोसह पञ्चक्खाणादि करे ? कोई करे कोई न करे। जो व्रतादि करे उसको अवधिज्ञान होवे ? किसीको अवधिज्ञान उपजे किसीको नहीं उपजे। जिसको अवधिज्ञान उपजे वह दिक्षाले ? नही लेवे।

नारकी मनुष्य पने उपजे उसकी व्याख्या अवधिज्ञान तक तीर्यचवत् करनी। आगे जिसको अवधिज्ञान हो वह दिक्षा ले ? कोई ले और कोई न भी ले। जो दीक्षा ले उसको मन

अवधि ज्ञान होवे ? हां होवे। जिसको ज्ञान होवे वह व्रत नियम करे ? नही करे इसी तरह तिर्यंच असुर कुमारादिसे यावत् ८ मां देवलोक तक देव पणे उपजे उसकी भी व्याख्या कर देनी मनुष्यमें केवल ज्ञान और अन्त क्रिया भी कर सकते हैं। इसी माफीक मनुष्य भी समझना व्यंतर ज्योतिषी, वेमानिककी व्याख्या असुरकुमारवत् करनी।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०९

(पद्वि द्वार)

श्री पन्नवणा सूत्र तथा जम्बूद्वीप पन्नती सूत्रसे तेवीस पद्वि.

(१) सात एकेन्द्रिय रत्न

१ चक्ररत्न—खड साधनेका रस्ता बतानेवाला
२ छत्ररत्न—बारह योजनमें छाया करे
३ दन्डरत्न—तामस गुफाका कमाड खोले
} चार चार हाथ के लम्बे होते हैं

४ खड्गरत्न—वैरीको सजा देनेके लिये ५० अगुलका लंबा १६ अगुलका चोडा, आधा अगुलका जाडा और ४ अगुलकी मूठ यह चारों रत्न आयुध शालामें उत्पन्न होते हैं

५ मणिरत्न—चार अगुल लम्बा दो अगुल चौडा अंधेरेमें प्रकाश करनेवाला।

६ कांगणी रत्न—सोनारकी अरणके आकार। आठ सोनईयो भार तोलमें आठपासा छे तला, बारहखुणा इससे तमिस्रा गुफामें ४९ मांडले किये जाते हैं।

अवधि ज्ञान होवे ? हां होवे। जिसको ज्ञान होवे वह व्रत नियम करे ? नही करे इसी तरह तिर्यंच असुर कुमारादिसे यावत् ८ मां देवलोक तक देव पणे उपजे उसकी भी व्याख्या कर देनी मनुष्यमें केवल ज्ञान और अन्त क्रिया भी कर सक्ते है। इसी माफीक मनुष्य भी समझना व्यंतर ज्योतिषी, वेमानिककी व्याख्या असुरकुमारवत् करनी।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नं० १०९

(पद्वि द्वार)

श्री पन्नवणा सूत्र तथा जम्बूद्वीप पन्नती सूत्रसे तेवीस पद्वि.

(१) सात एकेन्द्रिय रत्न

१ चक्ररत्न—खंड साधनेका रस्ता बतानेवाला
२ छत्ररत्न—बारह योजनमें छाया करे
३ दन्डरत्न—तामस गुफाका कमाड खोले
(चार चार हाथ के लम्बे होते है)

४ खड्गरत्न—वैरीको सजा देनेके लिये ५० अंगुलका लंबा १६ अंगुलका चोडा. आधा अंगुलका जाडा और ४ अंगुलकी मूठ यह चारों रत्न आयुध शालामें उत्पन्न होते हैं

५ मणिरत्न—चार अंगुल लम्बा दो अंगुल चोडा अंधेरेमें प्रकाश करनेवाला।

६ कांगणी रत्न—सोनारकी अरणके आकार। आठ सोनईयों भार तोलमें आठपासा छे तला. बारहखूणा. इससे तमिस्रा गुफामें ४९ मांडले किये जाते है।

अवधि ज्ञान होवे ? हां होवे । जिसको ज्ञान होवे वह व्रत नियम करे ? नही करे इसी तरह तिर्यंच असुर कुमारादिसे यावत् ८ मां देवलोक तक देव पणे उपजे उसकी भी व्याख्या कर देनी मनुष्यमें केवल ज्ञान और अन्त क्रिया भी कर सकते है। इसी माफीक मनुष्य भी समझना व्यंतर ज्योतिषी, वैमानिककी व्याख्या असुरकुमारवत् करनी ।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १०६

(पद्वि द्वार)

श्री पन्नवणा सूत्र तथा जम्बूद्वीप पन्नती सूत्रसे तेवीस पद्वि.

(१) सात एकेन्द्रिय रत्न

१ चक्ररत्न—खड साधनेका रस्ता बतानेवाला
२ छत्ररत्न—बारह योजनमें छाया करे
३ दन्डरत्न—तामस गुफाका कमाड खोले
} चार चार हाथ के लम्बे होते है

४ खड्गरत्न—वैरीको सजा देनेके लिये ५० अगुलका लंबा १६ अगुलका चोडा. आधा अगुलका जाडा और ४ अगुलकी मूठ यह चारों रत्न आयुध शालामें उत्पन्न होते हैं

५ मणिरत्न—चार अगुल लम्बा दो अगुल चोडा अधेरेमें प्रकाश करनेवाला ।

६ कागणी रत्न—सोनारकी अरणके आकार । आठ सोनईयों भार तोलमें आठपासा छे तला. बारहखूणा इसने तमिस्रा गुफामें ४९ मांडले किये जाते हैं ।

आगतद्वार.

पहिली नारकीसे निकले हुवे जीवोंमे है सात एकेन्द्रिय वर्जके शेष १६ पद्वि पावे।

दूसरी नरकसे निकले हुवेमे १५ पद्वि पावे (चक्रवर्ती वर्जके)
तीसरी नरकसे निकला० १३ पद्वि पावे (वलदेव वासुदेव वर्जके)
चौथी नरकसे निकला० १२ पद्वि पावे (तीर्थंकर वर्जके)
पांचमी नरकसे निकला० ११ पद्वि पावे (केवली वर्जके)
छट्ठी नरकसे निकला० १० पद्वि पावे (साधु वर्जके)
सातमी नरकसे निकला० ३ पद्वि पावे. हस्ती० अश्व० और सम्यकुदृष्टि, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीसे निकला हुवा० २१ पद्वि पावे. तीर्थंकर चक्रवर्ती वर्जके। पृथ्वी, पाणी, वन० सन्नी तिर्यंच और सन्नी मनुष्यसे निकला १९ पद्वि पावे (ती-च-व-वा वर्जके) तेउ, वाउ, विकलेन्द्रीसे निकला० ९ पद्वि. (७ एकेन्द्रीय रत्न, हस्ती और अश्व०) असन्नी मनुष्य. तिर्यंचसे निकला० १८ पद्वि पावे. ७ एकेन्द्री रत्न ७ पंचेन्द्री और नं० म० सा० श्रा० स० ए॰ १८ पहिले दूसरे देवलोकसे निकला २३ पद्वि पावे।
तीजेसे आठवें देवलोक तकका निकला० १६ पद्वि पावे। (७ पद्वि पचेन्द्री ९ मोटी० और नौसे बारहवा तथा नौग्रैवेयकसे निकला १४ पद्वि पावे (हस्ती० अश्व नही)
पंचानुत्तरसे निकला० ८ पद्वि पावे (वसुदेव वर्जके ८ मोटी०)

जागतद्वार

नारकी पहिलीसे चोथी तक ११ पद्वि वाले जीव जावे (७ एकेन्द्रीय पद्वि, चक्री, वासुदेव, सम्यक्दृष्टी और मंडलीक राजा) नारकी ५-६ में ९ पद्वि वाले जावें। (स्त्री, सम्यगदृष्टीवर्जके) पांच स्थावरमें १४ पद्वि वाले जावे। एकेन्द्री ७ पंचेन्द्रीय ६ (स्त्री नहीं) और मंडलीक० एवं १४॥ विकलेन्द्री ३ असन्नी मनुष्य तिर्यंचमें

आवगाद्वार.

पहिली नारकीसे निकले हुवे जीवोंमे है सात एकेन्द्रिय वर्जके शेष १६ पद्वि पावे।

दूसरी नरकसे निकले हुवेमे १५ पद्वि पावे (चक्रवर्ती वर्जके)
तीसरी नरकसे निकला० १३ पद्वि पावे (बलदेव वासुदेव वर्जके)
चौथी नरकसे निकला० १२ पद्वि पावे (तीर्थंकर वर्जके)
पांचमी नरकसे निकला० ११ पद्वि पावे (केवली वर्जके)
छट्ठी नरकसे निकला० १० पद्वि पावे (साधु वर्जके)
सातमी नरकसे निकला० ३ पद्वि पावे. हस्ती० अश्व० और सम्यकुदृष्टि, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषीसे निकला हुवा० २१ पद्वि पावे. तीर्थंकर चक्रवर्ती वर्जके। पृथ्वी, पाणी, वन० सन्नी तिर्यंच और सन्नी मनुष्यसे निकला १९ पद्वि पावे (ती-च-ब-वा वर्जके)
तेउ, वाउ, विकलेन्द्रीसे निकला० ९ पद्वि. (७ एकेन्द्रीय रत्न, हस्ती और अश्व०) असन्नी मनुष्य. तिर्यंचसे निकला० १८ पद्वि पावे. ७ एकेन्द्री रत्न ७ पंचेन्द्री और नं० म० सा० श्रा० स० ए^{प}
१८ पहिले दूसरे देवलोकसे निकला २३ पद्वि पावे।
तीजेसे आठवें देवलोक तकका निकला० १६ पद्वि पावें। (७ पद्वि पंचेन्द्री ९ मोटी० और नौसे बारहवा तथा नौग्रैवेयकसे निकला १४ पद्वि पावे (हस्ती० अश्व नही)
पंचानुत्तरसे निकला० ८ पद्वि पावे (वसुदेव वर्जके ८ मोटी०)

जावगाद्वार

नारकी पहिलीसे चोथी तक ११ पद्वि वाले जीव जावे (७ पचेन्द्रीय पद्वि, चक्री, वासुदेव. सम्यकूदृष्टी और मंडलीक राजा)
नारकी ५-६ में ९ पद्वि वाले जावें। (स्त्री, सम्यग्दृष्टीवर्जके) पाच स्थावरमें १४ पद्वि वाले जावे। एकेन्द्री ७ पचेन्द्रीय ६ (स्त्री नहीं) और मंडलीक० एवं १४॥ विकलेन्द्री ३ असन्नी मनुष्य तिर्यचमें

साधुमे १२ पद्दि मिले चार पांचेन्द्रिय ८ वडी पद्दि अढाई द्वीपके वाहर २ पद्दि मिले (श्रावक० सम्यगृदृष्टी)

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

—※(◎)※—

थोकडा नं० ११०

(गत्यागति)

जीव मरके दूसरी गतीमे उत्पन्न होता है उसको गति कहते हैं। और जिस गतीसे आकार उत्पन्न होता है उसको आगती कहते हैं। जैसे नारकीसे निकलकर जिस गतिमें जावे (यथा रत्नप्रभा नारकीका जीव तीर्यचके १० और मनुष्य गतिके ३० भेदोंमें उत्पन्न होता है। उसको गती कहते है। और १० भेदे तीर्यचके जीव १५ भेदे मनुष्यके जीव रत्नप्रभा नारकीमें उत्पन्न होता है उसको आगती कहते हैं। इसी तरह सब ज गह समझ लेना।

मार्गणा			न०	ती०	मनुष्य	देवता	समुचय.
१ रत्नप्रभा	नारकीकी	आगती	०	१०	१५	०	२५
२ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०
३ शर्कर०	,,	आगती	०	५	१५	०	२०
४ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०
५ वालूप्रभा	,,	आगती	०	४	१५	०	१९
६ ,,	,,	गती	०	१०	३०	०	४०

३३ असन्नी तीर्यच पंचेन्द्री. आगती ०-४८-१३१- ०-१७९

३४ ,, . गती २-४८-२४३-१०२-३९५

३५ सन्नी ,, आगती ७-४८-१३१- ८१-२६७

३६ ,, ,, गती १४-४८-३०३-१६२-५२७

३७ जलचर } आगती १४-४८-३०३-१६२-५२७

३८ थलचर } पाँचोंकी ८-४८-३०३-१६२-५२१

३९ खेचर } ३६७ की ६-४८-३०३-१६२-५१९

४० उरपरी } है. गती १०-४८-३०३-१६२-५२३

४१ भुजपरी } कहते हैं . ४-४८-३०३-१६२-५१७

४२ असन्नी मनुष्यकि आगती ०-४०-१३१- ०-१७१

४३ ,, ,, गती ०-४८-१३१- ०-१७९

४४ सन्नी मनुष्यकि आगती ६-४०-१३१- ९९-२७६

४५ , , गती १४-४८-३०[illegible]-१९८-५६[illegible]

४६ देवकुरु उत्तरकुरुकि आगती ०- ५- १५- ०- २०

४७ ,, ,, गती ०- ०- ०-१२८-१२८

४८ हरीवास रम्यकवकी आगती ०- ५- १५- ०- २०

४९ ,, ,, गती ०- ०- ०-१२६-१२६

५० हैमवय पेरणवयकी आगती ०- ५- १५- ०- २०

५१ ,, ,, गती ०- ०- ०-१२४-१२४

५२ छप्पन अन्तरद्वीप आगती ०-१०- १५- ०- २५

५३ ,, , गती ०- ०- ०-१०२-१०२

५४ तीर्थकरकी आगती ३- ०- ०- ३५- [illegible]८

५५ ,, गती ०- ०- ०- मोक्ष

५६ केवलीकी आगती ४- ८- १५- ८१-१०८

५७ ,, गती ०- ०- ०- ०- मोक्ष

५८ चक्रवर्तीकी आगती १- ०- ०-[illegible]- [illegible]

५९ ,, गती १४- ०- ०- ०- १४

थोकडा नं० १११

श्री पन्नवणा सूत्र पद ६

(गत्यागती)

१ रत्नप्रभा नारकीकी आगती ११ की-पांच सन्नी तीर्यंच, पाच असन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य. एवं ११ तथा गती ६ की पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य।

२ शर्करप्रभा नारकीकी आगती ६ की—पांच सन्नी मनुष्य और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य। तथा गती ६की–पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य।

३ वालुप्रभा नारकीकी आगति ५ की—भुजपरी तीर्यंच वर्जके उपरवत् पाच और गति ६ की पूर्ववत्।

४ पंकप्रभा नारकीकी आगति ४ की—खेचर वर्जके शेष ४ पूर्ववत् और गती ६ की पूर्ववत्।

५ धूमप्रभा नारकीकी आगत ३ की—थलचर वर्जके शेष ३ पूर्ववत् और गति ६ की पूर्ववत्।

६ तमप्रभा नारकीकी आगत ४ की—स्त्री, पुरुष, नपुंसक और जलचर तथा गती ६ की पूर्ववत्।

७ तमःतमप्रभा नारकीकी आगती ३ की—पुरुष, नपुंसक और जलचर तथा गती ५ की (सन्नी तीर्यंच पांच)

दश भुवनपती, व्यंतरकी आगती १६ की—पाच सन्नी पांच असन्नी तीर्यंच १० संख्याते वर्षका कर्म भूमि मनुष्य ११

थोकडा नं० १११

श्री पन्नवणा सूत्र पद ६

(गत्यागती)

१ रत्नप्रभा नारकीकी आगती ११ की-पांच सन्नी तीर्यंच, पांच असन्नी तीर्यंच और सख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य. एवं ११ तथा गती ६ की पांच सन्नी तीर्यंच और संख्याते वर्षका कर्मभूमी मनुष्य ।

२ शर्करप्रभा नारकीकी आगती ६ की—पांच सन्नी मनुष्य और सख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य । तथा गती ६ की-पांच सन्नी तीर्यंच और सख्याते वर्षका कर्मभूमि मनुष्य ।

३ वालुप्रभा नारकीकी आगति ५ की—भुजपरी तीर्यंच वर्जके उपरवत् पाच और गति ६ की पूर्ववत् ।

४ पंकप्रभा नारकीकी आगति ४ की—खेचर वर्जके शेष ४ पूर्ववत् और गती ६ की पूर्ववत् ।

५ धूमप्रभा नारकीकी आगत ३ की—थलचर वर्जके शेष ३ पूर्ववत और गति ६ की पूर्ववत् ।

६ तमप्रभा नारकीकी आगत ४ की—स्त्री, पुरष, नपुंसक और जलचर तथा गती ६ की पूर्ववत् ।

७ तम:तमप्रभा नारकीकी आगती ३ की—पुरष, नपुंसक और जलचर तथा गती ५ की (सन्नी तीर्यंच पांच)

दश भुवनपती, व्यंतरकी आगती १६ की—पाच सन्नी पांच असन्नी तीर्यंच १० संख्याते वर्षका कर्म भूमि मनुष्य ११

तेउ० वायु० की आगती ४९ की—तीर्यच के ४६ मनुष्य ३ तथा गती ४६ कि तीर्यचके

विकलेन्द्रियकी आगती ४९ की पूर्ववत् तथा गती भी इसी तरह ४९ की।

तीर्यच पंचेन्द्रियकी आगती ८७ की-तीर्यच ४६ मनुष्य ३ भुवनपती १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ देवलोक ८ और नारकी ७ एवं ८७ तथा गती ९२ की—८७ पूर्ववत् संख्याते वर्षका कर्म भूमि असंख्याते वर्षका कर्मभूमि. अकर्मभूमि. अन्तरद्वीपा. स्थलचर युगलीया एव ९२।

मनुष्यकी आगती ९६ की—तीर्यच ३८ (तेउ० वायुका ८ वर्जके) मनुष्य ३ भूवनपती १० व्यतर ८ ज्योतिषी ५ देवलोक १२ ग्रैवेक विमान ९ अनुत्तर विमान ५ नारकी ६ एव ९६ तथा गती १११ की—९६ पूर्ववत तेउ० वाउ० ८ सातमी नारकी, असख्याते वर्ष कर्मभूमि अकर्मभूमि अन्तर द्वीपा स्थलचर युगलीया. खेचर युगलीया और सिद्ध गती एवं १११

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

औदारिककी भजना आहारक नहीं। आहारकमें वैक्रिय नहीं शेष ३ शरीरकी नियमा। तेजसमें कार्मणकी नियमा। कार्मणमें तेजसकी नियमा बाकी तीन शरीरकी भजना।

(५) द्रव्य द्वार--औदारिक० वैक्रिय शरीरका द्रव्य असंख्याते असंख्याते है। आहारक० सख्याते०। तेजस कार्मणका अनंते अनन्ते है।

(६) प्रदेश द्वार---प्रदेश पाचो शरीरोंके अनन्ते अनन्ते हैं।

(७) द्रव्यकी अल्पाबहुत्व द्वार--सबसे स्तोक आहारक शरीरके द्रव्य, वैक्रिय श. द्रव्य अस० गु० औदारिक श० द्रव्य असं० गु० तेजस कार्मण परस्पर तुल्य अनं० गु०।

(८) प्रदेशका अल्पा बहुत्व--सबसे स्तोक आहारक शरीरका प्रदेश.। वक्रिय श० प्र० अस० गु०। औदारिक श० प्र० अन० गु०। तेजस श० प्र० अनं० गु० कार्मण श० प्र० अनं० गु०।

(६) द्रव्य प्रदेशकी अल्पा बहुत्व---

(१) सबसे स्तोक आहारक शरीरका द्रव्य (२) वैक्रिय श० का द्रव्य अस० गु० (३) औदारिक श० का द्रव्य अस० गु० (४) आहारिक श० का प्रदेश अन० गु० (५) वैक्रिय श० का प्रदेश अस० गु० (६) औदारिक श० का प्रदेश अस० गु० (७) तेजस कार्मण श० द्रव्य अनन्त गु० (८) तेजस श० प्रदेश अन० गु (९) कार्मण श० प्रदेश अनं० गु०

(१०) स्वामी द्वार--औदारिक श० का स्वामी मनुष्य तीर्यच वैक्रिय श० का स्वामी चारों गतीके जीव। आहारक श० के स्वामी चौदह पूर्वधर मुनि। तेजस कारमण का स्वामि चारों गति के जीव होते हैं।

(५) " की उ० " वि०
(६) औदारिकी " स० गु०
(७) वैक्रियकी " " "
(८) तेजसकार्मण " " अस० गु०

(३) औदारिक श० अस० गु.
(४) तेजस कारमण आपस में तुल्य और अनंत गु.

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११३

श्री भगवती सूत्र श० १९ उ० ३

(अवगाहना अल्पा०)

(१) सबसे स्तोक सुक्ष्म निगोदके अपर्याप्ताकी जघन्य अवगाहना
(२) सुक्ष्म वायुकायके अपर्या० की ज० अव० असं० गु०
(३) सुक्ष्म तेउ० " " " " "
(४) सुक्ष्म अप्प० " " " "
(५) सुक्ष्म पृथ्वी० " " " "
(६) बादर वायु० " "
(७) बादर तेउ० " " " "
(८) बादर अप्प० " " " " "
(९) बादर पृथ्वी० " " " " "
(१०) बादर निगोद " " " " "
(११) प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिके अप० ज० अव० असं० गु०
(१२) सुक्ष्म निगोद पर्या० की ज० अव० असं० गु०
(१३) सुक्ष्म निगोद अप० की उत्कृष्ट अव० वि०
(१४) " पर्या० की " " "

(४२) प्रत्येक शरीर बादर वन० पर्या० ज० अव० अस० गु०
(४३) ,, ,, अप० उ० अव० अस० गु०
(४४) ,, ,, पर्या० उ० अव० अस० गु०

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११४

श्री भगवती सूत्र श० ८ उ० ५ ।

(सप्रदेश)

पुद्गल चार प्रकारके होते है—द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे, और भावसे जिसमें द्रव्यसे पुद्गलोंके दो भेद सप्रदेशी (द्विपरमाणुवादि) और अप्रदेशी (परमाणु क्षेत्रसे पु० के दो भेद-सप्रदेशी (दो प्रदेशीसे यावत् असं प्रदेश अवगाह) और अप्रदेशी (एक आकाश प्रदेश अवगाही) कालसे पुद्गलोंके दो भेद—सप्रदेशी (दो समयसे यावत् असं० समयकी स्थितिका) और अप्रदेशी (एक समयकी स्थितिको) भावसे पुद्गलोंके दो भेद—सप्रदेशी (दो गुण कालेसे यावत् अनन्त गुण काला) और अप्रदेशी (एक गुण काला)

जहां द्रव्यसे अप्रदेशी है वहां क्षेत्रसे नियमा अप्रदेशी है । कालसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी । एवं भावसे और क्षेत्र से अप्रदेशी है वह द्रव्यसे स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी । एवं कालसे भावसे ॥ और कालसे अप्रदेशी है वह द्रव्यसे क्षेत्रसे भावसे स्यात् सप्रदेशी स्यात अप्रदेशी है । और भावसे अप्रदेशी है वह द्रव्यक्षेत्रकालसे स्यात सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी है और

वृद्धिमान नहीं है किन्तु अवस्थित है। नारकीके नेरीयोंकी पृच्छा? नारकीके नेरीया हियमान० भी है वृद्धिमान भी है और अवस्थित भी है एवं यावत् २४ दडक कहना सिद्ध भगवान वृद्धमान है और अवस्थित है।

समुचय जीव अवस्थित रहे तो सदाकाल सास्वता, नारकीका नेरीया हियमान वृद्धमान रहे तो ज० एक समय उ० आविलीकाके असं० भाग, और अवस्थित रहे तो विरह कालसे दुगुणा। "देखो शीघ्रबोध भाग १ में विरहद्वार"। एव चौवीस दंडकमें हियमान वृद्धमान नारकीवत् और अवस्थित काल विरह द्वारसे दुगणा, परन्तु पांच स्थावरमें अवस्थित कालहियमानवत समज लेना। सिद्धोंमें वृद्धमान ज० एक समय उ आठ समय और अवस्थित काल ज० एक समय उ० छे मास इति।

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्।

थोकडा नंबर ११६

श्री भगवती सूत्र श० ५ उ० ८।

(सावचया सोवचया)

हे भगवान! जीव [1]सावचया है या [2]नोवचया है? या सावचया [3]सोवचया है? या [4]निरवचया निरवचया? जीव निरवचया निरवचया? है शेष तीन भांगा नही। नारकी आदि २४ दंडकमें पूर्वोक्त चारों भांगा पावे। सिद्धोंमें भांगा दो [१] सावचया [२] निरवचया निरवचया।

---

१ वृद्धि। २ हानी। ३ वृद्धि हानी। ४ वृद्धि नहीं हानी नहीं।

कषाय चार प्रकारका है-क्रोध, मान, माया और लोभ. जिसमें पहिले एक क्रोधकी व्याख्या करते है। क्रोधकी उत्पत्ती चार कारणोंसे होती है यथा।

[१] अपने लिये [स्वकार्य] [२] परके लिये [कुटुम्बादि]
[३ दोनोंके लिये [स्वपर] [४] निरर्थक [विना कारण]

और भी क्रोधके उत्पत्तीका चार कारण कहे है यथा।

[१] शरीरके लिये। [२] उपाधी-धनधान्यादि वस्तुके लिये। [३] क्षेत्र-जगा-जमीनादिके लिये। [४] वत्थु-बागबगीचा खेती आदिके लिये।

क्रोध चार प्रकारका है।

[१] अनन्तानुबंधी-पत्थरकी रेखा सदृश।
[२] अप्रत्याख्यानी-तलावके मट्टीकी रेखा सदृश।
[३] प्रत्याख्यानी-गाडीके पहियेकी लकीर सदृश।
[४] सज्वल पानीकी लकीर सदृश।

और भी क्रोध चार प्रकारका कहा है।

[१] उपशान्त-उपशमा हुवा। [२] अनोपशान्त-उदयमे वर्तता।
[३] आभोग-जानता हुवा। [४] अनाभोग-अनजानता हुवा।

एवं सोलह प्रकारका क्रोध समुचयजीव करे। इसी माफक २४ दंडकके जीवों करें। इस लिये १६ का २५ गुणा करनेसे ४०० भांगे हुवे।

मार्गणा	बोल°	स्थि ४	अ ४	श ५	स ६	सं. ६	ले ६	द. ३	ना ८	यो ३	उ २
नारकीमे	२९	४	४	३	०	१	३	३	६	३	२
भुवन व्यन्तर	३०	४	४	३	०	१	४	३	६	३	२
ज्यो यावत् अच्युत् दे०	२७	४	४	३	०	१	१	३	६	३	२
नौग्रेवक वै०	२६	४	४	३	०	१	१	२	६	३	२
अनुत्तर वैमान	२२	४	४	३	०	१	१	१	३	३	२
पृ० पा० वना०	२३	४	४	३	१	१	४	१	२	१	२
तेउ० वाउ०	२२	४	४	३	१	१	३	१	२	१	२
विकलेन्द्रिय	२६	४	४	३	१	१	३	२	४	२	२
तीर्यच पंचेन्द्रिय	४४	४	४	४	६	६	६	३	६	३	२
मनुष्यमें	४७	४	४	५	६	६	६	३	८	३	२

१ स्थितिके चार भेद हैं—यथा [१] जघन्य स्थिति [२] जघन्य स्थितिसे एक समय दो समय तीन समय यावत् सख्याते समय अधिक [३] सख्याते समयसे एक समय अधिक यावत् असख्याते समय अधिक [४] उत्कृष्ट स्थिति।

२ अवगाहनाके चार भेद हैं यथा—[१] जघन्य अवगाहना [२] जघन्य अवगाहनासे एक दो तीन ,यावत् संख्याते प्रदेश अधिक [ ] संख्यानेसे एक दो तीन यावत् असंख्याते प्रदेश अधिक ४] उत्कृष्ट अवगाहना।

शेष सात द्वारोंके बोल सुगम हैं देखो लघुदंडकमें।

नारकीमें बोल पावे २९ जोकी स्थितिके चार भेद हैं जिसमेंसे दूसरा भेद और अवगाहनाके दूसरे तीसरे भेद और मिश्र दृष्टी एवं चार बोलोंमें क्रोधी मानी मायी लोभी इन चारों कषायके ८० भांगे होते हैं। शेष २५ बोलोंमें क्रोधादि चार कषायके २७ भांगे होते हैं। ये दोनों प्रकारके भागे नीचे लीखे यन्त्रसे समझना।

८० भांगोंकी स्थापना.

असंयोगी ८ भांगा, द्विसंयोगी २४ भांगा, त्रिकसंयोगी ३२ भांगा, चार संयोगी १६ भांगा, एवं ८० भांगा।

असंयोगी ८ यथा–क्रोधीएक, मानीएक, मायीएक, लोभीएक, क्रोधाघणा, मानीघणा, मायीघणा, लोभीघणा।

द्विसंयोगी भांगा २४

को	मां.	क्रो.	मा.	क्रो.	लो.	मां.	मा.	मां.	लो.	मा.	लो.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३	१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१	३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

तीन संयोगी भांगा ३२

क्रो.	मां.	मा.	क्रो.	मां.	लो.	क्रो.	मा.	लो.	मां.	मा	लो.
१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३
१	३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१
१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३
३	१	१	३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

चार संयोगी भांगा १६

क्रो.	मां.	मा.	लो.	क्रो.	मां	मा.	लो.
१	१	१	१	३	१	१	१
१	१	१	३	३	१	१	३
१	१	३	१	३	१	३	१
१	१	३	३	३	१	३	३
१	३	१	१	३	३	१	१
१	३	१	३	३	३	१	३
१	३	३	१	३	३	३	१
१	३	३	३	३	३	३	३

एव ८० भागे। अब २७ भागोंकी स्थापना नीचे लिखते हैं यथा-[१] क्रोधके दरबख्तमें सास्वते मिलते हैं। [२] क्रोधका घणा और मानका एक [३] क्रोधका घणा और मानका घणा एवं दो मायाके और दो लोभके एवं ७ असंयोगी द्विसयोगी भागे हुवे, और तीन संयोगीके १२ भागे। यन्त्रसे।

क्रो०	मां०	मा०	क्रो०	मां०	लो०	क्रो०	मा०	लो०
३	१	१	३	१	१	३	१	१
३	१	३	३	१	३	३	१	३
३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	३	३	३	३	३	३	३	३

चार संयोगी भागा ८

क्रो०	मा०	मा०	लो०	क्रो०	मा०	मा०	लो०
३	१	१	१	३	३	१	१
३	१	१	३	३	३	१	३
३	१	३	१	३	३	३	१
३	१	३	३	३	३	३	३

देवतामें भुवनपतीसे यावत् बारहवें देवलोक तक अपने २ बोलोंसे चार ७ बोल [नारकीवत्] में भाग ८० शेष बोलोंमें भांगे २७ है । जिसकी स्थापना उपरवत् । परन्तु नारकीके २७ भागोंमें क्रोधी सास्वते बहुवचन कहे हैं यहां देवतामें लोभी बहुवचन सास्वता कहना। एवं नौ नौग्रैवेक और पंचानुत्तर वैमानमें तीन बोल (मिश्रदृष्टी वर्जके) में भागा ८० शेष बोलोंमें भागा २७ कहना।

पृथ्वी, पानी, वनस्पतिमें बोल २३ जिसमें तेजूलेशीमें भांगा ८० शेष बोल २२ तथा तेउ वायुके २२ बोलोंमें अभंग है। याने चारों कषायवाले जीव हरसमय असंख्याते मिलते है।

तीन विकलेन्द्रियमें बोल २६ जिसमें [१] स्थितिका दूसरा बोल। [२] अवगाहनाका दूसरा बोल [३] मतिज्ञान [४] श्रुतिज्ञान। [५] सम्यक्त्वदृष्टी इन पांचों बोलोंमें भांगा ८० शेष बोलोंमें अभंग। तीर्यंच पंचेन्द्रिय नारकीवत् चार बोलोंमें भांगा ८० शेष बोलोंमें अभंग। मनुष्यमें बोल ४७ जिसमें दो स्थितिका दूजो तीजो बोल दो अवगाहनाका दूजो तीजो बोल आहारिक श-, , और मिश्रदृष्टी इन छे बोलोंमें ८० भांगा शेष बोलोंमें अभंग।

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० ११६

श्री पन्नवणा सूत्र पद १५।

(इन्द्रिय)

संसारी जीवोंके इन्द्रिय दो प्रकारकी है—एक द्रव्येन्द्रिय और दूसरी भावेन्द्रिय. द्रव्येन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको ग्रहण करते हैं-जैसे कर्णेन्द्रियद्वारा पुद्गलोंको ग्रहण किया और वे पुद्गल इष्ट अनिष्ट होनेसे रागद्वेष होना यह भावेन्द्रिय है। अर्थात् द्रव्येन्द्रिय कारण है और भावेन्द्रिय कार्य है। यहां पर द्रव्येन्द्रियका ही अधिकार १८ द्वार करके लिखेंगे।

[१] नामद्वार—श्रोतेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय।

[२] संस्थानद्वार— श्रोतेन्द्रियका संस्थान कदम्ब वृक्ष के पुष्पाकार, चक्षुइन्द्रियका चन्द्र या मसूरकी दालके आकार, घ्राणेन्द्रिय लोहारकी धमणाकार रसेन्द्रिय क्षुरपलाके आकार और स्पर्शेन्द्रिय नानाकार।

[३] जाडपना द्वार—पकेक इन्द्रिय जघन्य और उत्कृष्ट अंगुलके असख्य भाग जाडी है। यहां पर इतना अवश्य समझना चाहिये कि इन्द्रिय और इन्द्रियके उपगरण जैसे श्रोतेन्द्रिय अंगुलके असख्यातमें भाग है और कान शरीर प्रमाण होते हैं। कानको उपगरण इन्द्रिय कहते हैं और जो पुद्गल ग्रहण किया जाता है वह इन्द्रिय द्वार उसीका यहां जाडपना बतलाना है।

[४] लम्बापनाद्वार—रसेन्द्रिय ज० अगुलके असंख्या

, भाग उ० प्रत्येक अंगुलकी है। शेष चारोन्द्रिय ज० उ० अंगुल असंख्यातमें भाग है भावना तीजे द्वारकी माफक समझना।

[५] अवगाहाद्वार – एकेकेन्द्रिय असंख्याते २ आकाश प्रदेश अवगाहा है। जिसकी तरतमता दिखानेके लिये अल्पाबहुत्व कहते है।

[१] सर्वस्तोक चक्षु इन्द्रिय अवगाहा [२] श्रोतेन्द्रिय अ० संख्यातगुणा। [३] घ्राणेन्द्रिय अ० स० गुणा। [४] रसेन्द्रिय अ० असं० गुणा। [५] स्पर्शेन्द्रिय अ० स० गुणा।

[६] पुद्गल लागाद्वार— एकेकेन्द्रियके अनन्ते अनन्ते पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] चक्षु इन्द्रिय लागा, सबसे स्तोक [२] श्रोतेन्द्रिय लागा सं० गुणा। [३] घ्राणेन्द्रिय लागा स० गु० [४] रसेन्द्रिय लागा असं० गु० [५] स्पर्शेन्द्रिय लागा सं० गु०

[७] अवगाहा लागाकी—सामल अल्पाबहुत्व-[१] चक्षु इन्द्रिय अवगाहा सबसे स्तोक [२] श्रोतेन्द्रिय अ० स० गु० [३] घ्राणेन्द्रिय अ० सं० गु० [४] रसेन्द्रिय अ० अस० गु० [५] स्पर्शेन्द्रिय अ० स० गु० [६] चक्षु इन्द्रिय लागा० अन० गु० [७] श्रोतेन्द्रिय लागा सं० गु० [८] घ्राणेन्द्रिय लागा स० गु० [९] रसेन्द्रिय लागा अस० गु० [१०] स्पर्शेन्द्रिय लागा स० गु०

[८] कक्खडा [कर्कश] गुरुवा [भारी] द्वार—एकेकेन्द्रियके अनन्ते अनन्ते पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] सबसे स्तोक लागा चक्षु इन्द्रियके [२] श्रोतेन्द्रियके अनन्त गु० [३] घ्राणेन्द्रियके अनन्त गु० [४] रसेन्द्रियके अन० गु० [५] स्पर्शेन्द्रियके अनन्त गु०

[९] लहुया [हल्का] मउया [कोमल] द्वार — एके-

केन्द्रियके अनन्ते २ पुद्गल लागा है। जिसकी अल्पाबहुत्व [१] सबसे स्तोक स्पर्शेन्द्रियके लागा [२] रसेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [३] घ्राणेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [४] श्रोतेन्द्रियके लागा अनन्त गु० [५] चक्षुइन्द्रियके लागा अनन्त गुणा।

[१०] आठवा नौवा बोलकी सामील अल्पाबहुत्व—

[१] सबसे स्तोक चक्षु इन्द्रियके कक्खडा गुरुवा पुद्गलों लागा
(२) श्रोतेन्द्रियके कक्खडा गुरुवा लागा अनन्त गु०
(३) घ्राणेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(४) रसेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(५) स्पर्शेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(६) ,, लहुया महुया लागा ,,
(७) रसेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(८) घ्राणेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(९) श्रोतेन्द्रियके ,, ,, ,, ,,
(१०) चक्षुन्द्रियके ,, ,, ,,

(११) जघन्य उपयोगका कालद्वार—

(१) सबसे स्तोक चक्षु इन्द्रियका ज० उप० काल
(२) श्रोतेन्द्रियका ज० उप० काल विशेषाधिक
(३) घ्राणेन्द्रियका ज० उप० काल ,,
(४) रसेन्द्रियका ,, ,, ,,
(५) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, ,,

(१२) उत्कृष्टा उपयोगकि अल्पा० जघन्यवत्

(१३) जघन्य उत्कृष्टा उपयोग कालद्वार अल्पा०

(१) चक्षु इन्द्रियका जघन्य उपयोग काल स्तोक
(२) श्रोतेन्द्रियका ,, ,, वि०
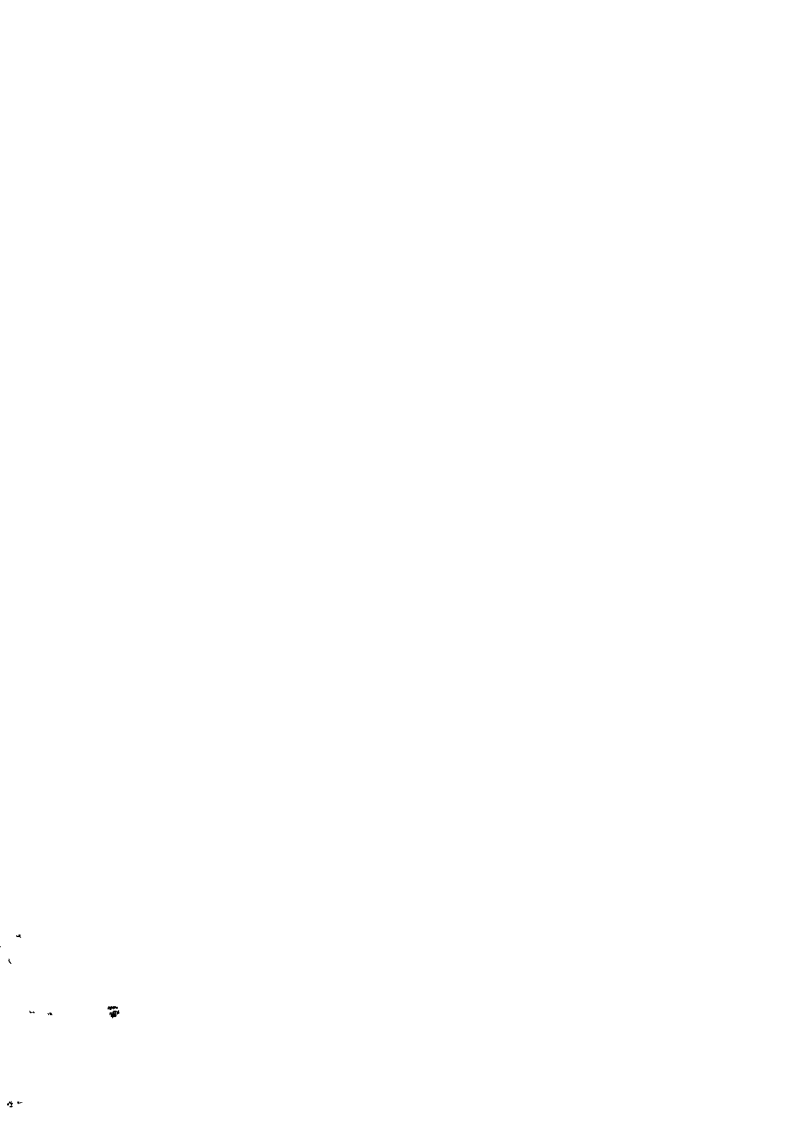
थोकडा नं. १२०

सूत्र श्री पन्नवणा पद २० तथा नन्दी सूत्र
(सिद्ध द्वार)

कौनसे २ स्थानसे आये हुए एक समयमें कितने २ जीव सिद्ध होते हैं वह इस थोकडे द्वारा कहेंगे। सर्व स्थान पर उत्कृष्ट पद समझना और जघन्य पद एक समय एक भी सिद्ध होता है।

संख्या	मार्गणा			संख्या	मार्गणा		
१	नरक गतिके निकले हुए एक समयमें १० सिद्ध होते है।			१५	वैमानिक	.	१०८
				१६	देवी	.	२०
२	तिर्यच	.	१०	१७	पृथ्वीकाय	.	४
३	मनुष्य	.	२०	१८	अप्पकाय	,,	४
४	देवगति	,	१०८	१९	वनस्पतिकाय	.,	६
५	पहिली नरक	,.	१०	२०	तिर्यच पचेन्द्रिय	.	१०
६	दूसरी		१०	२१	तिर्यञ्चणी	.,	१०
७	तीसरी	.,	१०	२२	मनुष्य		१०
८	चौथी	,	४	२३	मनुष्यणी	..	२०
९	भवनपति	,	१०	२४	पुरुष मर पुरुष हो		१०८
१०	देवी	,.	५	२५	पुरुष मर स्त्री हो		१०
११	वाण व्यतर	,	१०	२६	पुरुष मर नपुंसक हो		१०
१२	देवी	,,	५	२७	स्त्री मर पुरुष हो	,,	१०
१३	ज्योतिषी	.,	१०	२८	स्त्री मर स्त्री हो	,	१०
१४	देवी	.	२०	२९	स्त्री मर नपुंसक हो		१०

(३) घ्राणेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(४) रसेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(५) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(६) चक्षुन्द्रियका उत्कृष्ट ,, ,, वि०
(७) श्रोतेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(८) घ्राणेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(९) रसेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०
(१०) स्पर्शेन्द्रियका ,, ,, ,, वि०

(१४) विषयद्वार यन्त्र ।

मार्गणा	स्पर्शेन्द्रिय	रसेन्द्रिय	घ्राणेन्द्रिय	चक्षुन्द्रिय	श्रोतेंद्रिय
एकेन्द्रिय	४००ध०	०	०	०	०
बेरिन्द्रिय	८००ध०	६४ध०	०	०	०
तेरिन्द्रिय	१६००ध०	१२८ध०	१००ध०	०	०
चौरिन्द्रिय	३२००ध०	२५६ध०	२००ध०	२९५४ध०	०
असन्नी पं०	६४००ध०	५१२ध०	४००ध०	५९०८ध०	१ योजन
सन्नी पंचेंद्रि	९ योजन	९ योजन	९ योजन	लक्षयो० साधि	१२योजन

(१५) अल्पा बहुत्व द्वार

(१) श्रोतेन्द्रिय सबसे स्तोक
(२) चक्षुन्द्रिय विशेषाधिक
(३) घ्राणेन्द्रिय विशेषाधिक
(४) रसेन्द्रिय विशेषाधिक
स्पर्शेन्द्रिय अनंतगु०

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सचम् ।

७८ सा० छे० य० ,, १०८
७९ सा० सू० य० ,, १०८
८० सा० प० य० सू० ,, १०८
८१ सा० छे० सू० य० ,, १०
८२ मति श्रुत ,, ४
८३ मति. श्रुति अवधि ,, १०
८४ मति. श्रुति, मनःपर्यव , १०
८५ मति. श्रुति. अवधि. मन ,, १०८
८६ अनन्तकाल पडिवाई , १०८
८७ असख्या कालके पडिवाई , १०
८८ सख्याते कालके पडिवाई ,, १०
८९ अपडिवाई ४
९० उपशम श्रेणिसे आये हुवे ,, ५४
९१ क्षपक श्रेणिसे आये हुवे ,, १०८
९२ असोचा केवली ,, १०
९३ एक समयसे आठ समय तक ,, ३२
९४ एक समयसे सात समय तक ,, ४८
९५ एक समयसे छे समय तक ,, ६०
९६ एक समयसे पांच समय तक ,, ७२
९७ एक समयसे चार समय तक ,, ८४
९८ एक समयसे तीन समय तक ,, ९६
९९ एक समयसे दो समय तक ,, १०
१०० एक समय निरंतर ,, १०८
१०१ सान्तर ,, १०८

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

—※—

३० नपुंसक मर पुरुष हो १०
३१ नपुंसक मर स्त्री हो १०
३२ नपुंसक मर नपुंसक हो १०
३३ तीर्थमें १०८
३४ अतीर्थमें ,, १०
३५ तिर्थंकर ,, ४
३६ अतिर्थंकर ,, १०८
३७ स्वयंबुद्ध ,, १०
३८ प्रत्येक बुद्ध ,, ४
३९ बुद्ध बोधिता ,, १०८
४० पुरुषलिङ्ग ,, १०८
४१ स्त्रीलिङ्ग ,, २०
४२ नपुंसकलिंग ,, १०
४३ स्वलिङ्गी ,, १०८
४४ अन्यलिङ्गी ,, १०
४५ गृहलिङ्गी ४
४६ एक समयमें ,, १
४७ एक समयमें ,, १०८
४८ उतरतो काल १-२ आरो १०
४९ ,, ३-४ आरो १०८
५० ,, ५-६ आरो १०
५१ चढ़तो काल १ २ आरो १०
५२ ,, ३-४ आरो १०८
५३ ,, ५ आरो २०
५४ ,, ६ आरो १०
५५ जघन्य अवगाहना ,, ४
५६ मध्यम ,, १०८
५७ उत्कृष्ट ,, २
५८ नीचे लोक ,, २०
५९ ऊंचे लोक ,, ४
६० तिर्छालोक ,, १०८
६१ समुद्रमें ,, २
६२ शेष जलमें ,, ३
६३ विजयमें ,, २०
६४ भद्रसालवन ,, ४
६५ नन्दनवन ,, ४
६६ सुदर्शनवन ,, ४
६७ पाण्डुकवन ,, ३
६८ भरतक्षेत्र ,, १०८
६९ ऐरवत क्षेत्र ,, १०८
७० पूर्व पश्चिम विदेह ,, १०८
७१ कर्मभूमि ,, १०८
७२ अकर्मभूमि ,, १०
७३ सामायिक चारित्र ,, १०८
७४ छेदोपस्थानीय ,, १०
७५ परिहार विशुद्धि ,, १०
७६ सूक्ष्म संपराय ,, १०८
७७ यथाख्यात ,, १०८

७८	सा० छे० य०	१०८
७९	सा० सू० य०	१०८
८०	सा० प० य० सू०	१०८
८१	सा० छे० सू० य०	१०
८२	मति श्रुत	४
८३	मति, श्रुति अवधि	१०
८४	मति, श्रुति, मनःपर्यव	१०
८५	मति, श्रुति, अवधि, मन	१०८
८६	अनन्तकाल पडिवाई	१०८
८७	असख्या कालके पडिवाई	१०
८८	सख्याते कालके पडिवाई	१०
८९	अपडिवाई	४
९०	उपशम श्रेणिसे आये हुवे	५४
९१	क्षपक श्रेणिसे आये हुवे	१०८
९२	असोचा केवली	१०
९३	एक समयसे आठ समय तक	३२
९४	एक समयसे सात समय तक	४८
९५	एक समयसे छे समय तक	६०
९६	एक समयसे पांच समय तक	७२
९७	एक समयसे चार समय तक	८४
९८	एक समयसे तीन समय तक	९६
९९	एक समयसे दो समय तक	१०
१००	एक समय निरंतर	१०८
१०१	सान्तर	१०८

सेवंभते सेवभंते तमेव सच्चम् ।

—✻—

२२ ,, ,, उत्कृष्ट ,, ,, ,,
२३ ,, पर्याप्ता जघन्य ,, ,, ,,
२४ चौरेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य ,, ,, ,,
२५ ,, ,, उत्कृष्ट ,, ,, ,,
२६ ,, पर्याप्ता जघन्य ,, ,, ,,
२७ पंचेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य ,, ,, ,,
२८ ,, ,, उत्कृष्ट ,, ,, ,,
२९ ,, पर्याप्ता जघन्य ,, ,, ,,
३० उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तका ,, ,,
३१ मुहूर्त्तका ,, ,,
३२ चारों गतिका विरह ,, संख्यातगुणा
३३ उत्कृष्ट दिनमानका ,, वि०
३४ असन्नी मनुष्यका विरह ,, ,,
३५ अहोरात्रिका ,, ,,
३६ तेऊकायका भवस्थितिका ,, संख्यातगुणा
३७ दूसरी नारकीका विरह ,, ,,
३८ तीसरे देवलोकका विरह ,, वि०
३९ चौथे ,, ,, ,, ,,
४० तीसरी नारकीका विरह ,, ,,
४१ पांचमें देवलोकका ,, ,, ,,
४२ नक्षत्र मासका ,, ,,
४३ चौथी नारकीका विरह ,, ,,
४४ छट्ठे देवलोकका ,, ,, ,,
४५ असन्नि मनुष्यका अवस्थित ,, ,,
४६ तेइन्द्रियकी भवस्थितिका ,, ,,
४७ ऋतुका ,, ,,
४८ हरिवंश क्षेत्र युगल संरक्षण ,, ,,

२२ ,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
२३ ,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
२४ चौरेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,
२५ ,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
२६ ,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
२७ पंचेन्द्रियके अपर्याप्ताका जघन्य	,,	,,	,,
२८ ,, ,, उत्कृष्ट	,,	,,	,,
२९ ,, पर्याप्ता जघन्य	,,	,,	,,
३० उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्तका		,,	,,
३१ मुहूर्त्तका		,,	,,
३२ चारों गतिका विरह		,,	संख्यातगुणा
३३ उत्कृष्ट दिनमानका		,,	वि०
३४ असन्नी मनुष्यका विरह		,,	,,
३५ अहोरात्रिका		,,	,,
३६ तेऊकायका भवस्थितिका		,,	संख्यातगुणा
३७ दूसरी नारकीका विरह		,,	,,
३८ तीसरे देवलोकका विरह		,,	वि०
३९ चौथे ,, ,,		,,	,,
४० तीसरी नारकीका विरह		,,	,,
४१ पांचमे देवलोकका ,,		,,	,,
४२ नक्षत्र मासका		,,	,,
४३ चौथी नारकीका विरह		,,	,,
४४ छठे देवलोकका ,,		,,	,,
४५ असन्नि मनुष्यका अवस्थित		,	,,
४६ तेइन्द्रियकी भवस्थितिका		,,	
४७ ऋतुका		,,	,,
४८ हरिवश क्षेत्र युगल संरक्षण		,,	,

७६ उद्धार सागरोपमका , ,,
७७ जघन्य अद्धा पल्योपमके असंख्यातमे भागका अ०
७८ उत्कृष्ट अद्धा पल्योपमके , ,, ,,
७९ अद्धा पल्योपमका ,,
८० मनुष्य तिर्यंचकी स्थिति काल सं०
८१ अद्धा सागरोपमका ,, अ०
८२ देवता नारकीकी स्थिति , स०
८३ कालचक्रका ,, ,,
८४ क्षेत्र पल्योपमका ,, ,,
८५ क्षेत्र सागरोपमका ,, ,,
८६ तेऊकायकी कायस्थितिका ,, अ०
८७ वायुकायकी कायस्थितिका ,, वि०
८८ अप्पकायकी कायस्थितिका ,, ,
८९ पृथिवीकायकी कायस्थितिका ,, ,,
९० कार्मण पुद्गल परावर्तका ,, अ० गुणा
९१ तेजस ,, ,, ,,
९२ औदारिक ,, ,, ,,
९३ श्वासोश्वास ,, ,,
९४ मन ,, ,, ,,
९५ वचन ,, , ,,
९६ वैक्रिय ,, ,,
९७ वनस्पतिकायकी कायस्थितिका ,, ,,
९८ अतीतकालका ,, ,,
९९ अनागत कालका ,, वि०
१०० सर्वकालका , ,

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

४९ हेमवय क्षेत्र युगल ,, ,, ,
५० सातमें देवलोकका विरह ,, ,,
५१ छट्ठे देवलोकका अवस्थित ,, ,,
५२ छट्ठी नारकीका विरह ,, ,,
५३ सातमें देवलोकका अवस्थित ,, ,,
५४ अयनका ,, ,,
५५ छट्ठी नारकीका अवस्थित ,, ,,
५६ संवत्सरका
५७ युगका ,, ,,
५८ तिर्यचनीका उ० गर्भस्थिति ,, ,,
५९ बेइन्द्रिकी भवस्थिति० उ० ,, ,,
६० तिर्यंकरोंकी जघन्य स्थिति ,, ,,
६१ वायुकायकी उ० भवस्थिति ,, सं०
६२ अप्पकायकी ,, ,, ,, ,,
६३ वनस्पतिकी ,, ,, ,, वि०
६४ पृथ्वीकायकी ,, ,, ,, सख्या०
६५ भुजपरिसर्पकी ,, ,, ,, विशे०
६६ उरपरिसर्पकी ,, ,, ,, वि०
६७ खेचरकी ,, ,, ,, ,,
६८ थलचरकी ,, ,, ,, ,,
६९ पूर्वका ,, ,, ,, ,,
७० तिर्थंकरोंकी उ० स्थिति ,, ,,
संयतीकी ,, ,, ,, ,,
[illegible] ,, ,, ,, ,,
३ छप्पन अन्तरद्वीपोंकी स्थिति ,, संख्या
७४ उद्धार पल्योपमके संख्यातमे भागका ,, अस०
७५ उद्धार पल्योपमका ,, ,,

७६ उद्धार सागरोपमका		,	,,
७७ जघन्य अर्द्धा पल्योपमके असंख्यातमे भागका अ०			
७८ उत्कृष्ट अर्द्धा पल्योपमके	,	,,	,
७९ अर्द्धा पल्योपमका			,,
८० मनुष्य तिर्यंचकी स्थिति		काल	सं०
८१ अर्द्धा सागरोपमका		,,	अ०
८२ देवता नारकीकी स्थिति		,,	स०
८३ कालचक्रका		,,	,,
८४ क्षेत्र पल्योपमका		,,	,,
८५ क्षेत्र सागरोपमका		,,	,,
८६ तेऊकायकी कायस्थितिका		,	अ०
८७ वायुकायकी कायस्थितिका		,,	वि०
८८ अप्पकायकी कायस्थितिका		,	,
८९ पृथिवीकायकी कायस्थितिका		,,	,
९० कार्मण पुद्गल परावर्तका		,,	अ० गुणा
९१ तेजस	,,	,,	,
९२ औदारिक	,	,,	,,
९३ श्वासोश्वास		,,	,,
९४ मन	,	,	,,
९५ वचन	,		,,
९६ वैक्रिय	,,	,,	,
९७ वनस्पतिकायकी कायस्थितिका		,,	,,
९८ अतीतकालका		,,	,,
९९ अनागत कालका		,,	वि०
१०० सर्वकालका		,,	,

सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ।

थोकडा नं० १२२

सूत्र श्री अनुयोग द्वार ।

(छै भाव)

भाव ६ प्रकारका है यथा (१) उदय भाव (२) उपशम भाव (३) क्षायक भाव (४) क्षयोपशम भाव (५) परिणामिक भाव (६) सन्निपातिक भाव।

(१) उदयभावके दो भेद हैं उदय (२) उदय निष्पन्न जिसमें उदय तो आठ कर्म्मोंका और उदय निष्पन्नके २ भेद हैं (१) जीव उदय निष्पन्न (२) अजीव उदय निष्पन्न, जिसमें जीव उदय निष्पन्नके ३३ बोल हैं-गति ४ नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य देवता। काय ६ पृथिवीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय, कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ, लेश्या ६ कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, शुक्ल, वेद ३ स्त्रीवेद. पुरुषवेद नपुंसकवेद, मिथ्यात्वी, अव्रति, अज्ञानी, असन्नि, आहारिक, संसारिक. छद्मस्थ, सयोगी, अकेवली, असिद्ध, एवम् ३३ *

(२) अजीव उदय निष्पन्नके ३० बोल पांच शरीर औदारिक, वैक्रिय आहारिक, तेजस, कार्मण और पांच शरीरमें प्रणमें हुए पुद्गल एवम् १० और वर्ण ५ गन्ध २ रस ५ स्पर्श ८ सर्व मिलकर तीस बोल हुए।

---

* जीव उदय निष्पन्नके ३३ बोल हैं जिसमें अज्ञान, छद्मस्थ, अकेवली, असिद्ध, यह ४ बोल ज्ञानावर्णीय कर्मके उदय है। आहारिक वेदनी कर्मका उदय है। तीन वेद, चार कषाय, अव्रत, मिथ्यात्व, यह नव बोल मोहनी कर्मके उदय है। शेष १९ बोल नाम कर्मके उदय है।

(२) उपशम भावके दो भेद हैं (१) उपशम (२) उपशम निष्पन्न जिसमें उपशम तो मोहिनी कर्मका और उपशम निष्पन्नके अनेक भेद हैं, उपशम क्रोध उ० मान, उ० माया, उ० लोभ, उ० राग, उ० द्वेष, उ० चारित्र मोहिनी, उ० दर्शन मोहिनी, उ० सम्यक्त्व लब्धी, उ० चारित्र लब्धी, छद्मस्थ कषाय वीतराग इत्यादि।

(३) क्षायक भाव--क्षायक भावके दो भेद हैं (१) क्षायक (२) क्षायक निष्पन्न जिसमें क्षायक तो आठ कर्मोंका क्षय और क्षायक निष्पन्नके ३१ भेद हैं यथा।

(१) ज्ञानावर्णीकी पांच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल ज्ञानकी प्राप्ति होती है। (२) दर्शनावर्णीकी नौ प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल दर्शनकी प्राप्ति होती है। (३) वेदनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अव्याबाध गुणकी प्राप्ति होती है। (४) मोहनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त क्षायिक समकित गुणकी प्राप्ति होती है। (५) आयुष्यकी चार प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अवगाहना गुणकी प्राप्ति होती है। (६ नामकर्मकी दो प्रकृति होनेसे अनन्त अमूर्त्ति गुण प्राप्त होता है। (७) गोत्रकर्मकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अगुरु लघु गुणकी प्राप्ति होती है। (८) अंतरायकी पाच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त वीर्य गुणकी प्राप्ति होती है। ५। ९। २। २। ४। २। २। ५। एवं ३१।

(४) क्षयोपशम भावके दो भेद हैं,--क्षयोपशम और क्षयोपशम निष्पन्न। क्षयोपशम तो चार कर्मोंका (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय मोहिनीय, अंतराय) और क्षयोपशम निष्पन्नके ३२ भेद हैं यथा ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम होनेसे मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, और आगमका पठन, पाठन तथा मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान, विभंग ज्ञान, एवं आठ बोलकी

(२) उपशम भावके दो भेद हैं (१) उपशम (२) उपशम निष्पन्न जिसमें उपशम तो मोहिनी कर्मका और उपशम निष्पन्नके अनेक भेद हैं, उपशम क्रोध उ० मान, उ० माया, उ० लोभ, उ० राग, उ० द्वेष, उ० चारित्र मोहिनी, उ० दर्शन मोहिनी, उ० सम्यक्त्व लब्धी उ० चारित्र लब्धी, छद्मस्थ कषाय वीतराग इत्यादि।

(३) क्षायक भाव--क्षायक भावके दो भेद हैं (१) क्षायक (२) क्षायक निष्पन्न जिसमें क्षायक तो आठ कर्मोंका क्षय और क्षायक निष्पन्नके ३१ भेद हैं यथा।

(१) ज्ञानावर्णीकी पांच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल ज्ञानकी प्राप्ति होती है। (२) दर्शनावर्णीकी नौ प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त केवल दर्शनकी प्राप्ति होती है। (३) वेदनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अव्याबाध गुणकी प्राप्ति होती है। (४) मोहनीयकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त क्षायिक समकित गुणकी प्राप्ति होती है। (५) आयुष्यकी चार प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अवगाहना गुणकी प्राप्ति होती है। (६ नामकर्मकी दो प्रकृति होनेसे अनन्त अमूर्त्ति गुण प्राप्त होता है। (७) गोत्रकर्मकी दो प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त अगुरु लघु गुणकी प्राप्ति होती है। (८) अतरायकी पांच प्रकृति क्षय होनेसे अनन्त वीर्य गुणकी प्राप्ति होती है। ५। ९। २। २। ४। २। २। ५। एवं ३१।

(४) क्षयोपशम भावके दो भेद हैं,—क्षयोपशम और क्षयोपशम निष्पन्न। क्षयोपशम तो चार कर्मोंका (ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय मोहिनीय, अतराय) और क्षयोपशम निष्पन्नके ३२ भेद हैं यथा ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम होनेसे मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, और आगमका पठन, पाठन तथा मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान, विभंग ज्ञान, एवं आठ बोलकी

त्रिक संयोगी भांगा १०

१ उदय-उपशम क्षायिक	६ उदय-क्षयोपशम-परिणामिक
२ उदय-उपशम-क्षयोपशम	७ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम
३ उदय-उपशम-परिणामिक	८ उपशम-क्षायिक-परिणामिक
४ उदय-क्षायिक-क्षयोपशम	९ उपशम-क्षयोपशम-परिणामिक
५ उदय-क्षायिक-परिणामिक	१० क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक

चतुष्क संयोगी भांगा ५

१ उदय-उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम
२ उदय-उपशम-क्षायिक-परिणामिक
३ उदय-उपशम-क्षयोपशम-परिणामिक
४ उदय-क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक
५ उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम-परिणामिक

पञ्च संयोगी भांगा १

(१) उदय, उपशम, क्षायिक क्षयोपशम, परिणामिक एवम् भांगा २६ है जिसमें भागा बीस तो सून्य केवल प्ररूपणा मात्र है शेष भांगा ६ के स्वामी नीचे लिखते हैं—

(१) द्विक संयोगी भांगो नवमो सिद्धोंमें मिले क्षायिक परिणामिक, कारण परिणामिक जीव और क्षायिक समकित।

(२) त्रिक संयोगी भांगो पाचमो "उदय क्षायिक परिणामिक मनुष्य केवलीमें उदय मनुष्य गतिको क्षायिक समकित परिणामिक जीव।

(३) त्रिक संयोगी भागो छट्टो "उदय क्षयोपशम परिणामिक" उदय गतिको क्षयोपशम इन्द्रियोंका परिणामिक जीव चारों गतिमें पावे।

(२) नारकी स्व उपक्रमसे उत्पन्न होते है ? पर उपक्रमसे ?
विगर उपक्रमसे ? नारकी स्व उपक्रम (स्वहस्तसे शस्त्रादि) से
भी और पर उपक्रमसे भी तथा निरुपक्रमसे भी उत्पन्न होता है ।
भावार्थ—मनुष्य तिर्यचमें रहे हुवे जीव नरकका आयुष्य बान्धा
है मरती वखत स्वहस्तसे या पर हस्तसे मरे तथा विगर उपक्रम
याने पूर्ण आयुष्यसे मरे । एवम् यावत् २४ दंडक समझना ।

(३) नारकी नरकसे निकलते है वह क्या स्व उपक्रम,
पर उपक्रम और विगर उपक्रमसे निकलते है ? स्व पर उपक्रमसे
नहि किन्तु विगर उपक्रमसे निकलते है कारण वैक्रिय शरीर
मारा हुवा नहीं मरते है एवं १३ दंडक देवतावोंका भी समझना ।
पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, तीर्यच पचेन्द्रिय और मनुष्य
एवं १० दंडक तीनों प्रकारके उपक्रमसे निकलते है ।

(४) नारकी क्या स्वात्म ऋद्धि (नरकायुष्यादि) से
उत्पन्न होते है या पर ऋद्धिसे उत्पन्न होते है ? नारकी स्वऋद्धिसे
उत्पन्न होते है परसे नहीं. एव यावत् २३ दंडक समझना । इसी
माफीक स्व स्व दंडकसे निकलना भी स्वऋद्धिसे होता है कारण
जीव अपने किये हुवे शुभाशुभ कृत्यसे ही दंडकमें दडाता है ।

(५) नारकी क्या स्व प्रयोगसे उत्पन्न होता है कि पर
प्रयोगसे ? स्व प्रयोग (मन वचन कायाके प्रयोगोंसे) किन्तु पर
प्रयोगसे नही एवं २४ दंडक समझना इसी माफिक निकलना
भी समझना ।

(६) नारकी स्वकर्मोसे उत्पन्न होता है कि पर कर्मोसे ?
स्व कर्मोसे किन्तु पर कर्मोसे नहीं एवं २४ दंडक तथा निकलना
भी समझना । इतना विशेष है कि निकलनेमें जोतीषी विमानीकके
निकलनेके बदले चवना कहना इति ।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

थोकडा नं० १२४

सूत्र श्री भगवती श० २० उ० १० ।

(कृत संचय)

(१) कृत संचय—जो एक समयमें दो जीवोंसे संख्याते जीव उत्पन्न होते हैं ।

(२) अकृत संचय—जो एक समयमें असंख्याते अनन्ते जीवों उत्पन्न होते है ।

(३) अवक्तव्य संचय—एकसमयमें एकजीव उत्पन्न होते है।

हे भगवान् ! नारकीके नेरिये क्या कृतसंचय है, अकृत संचय है, अवक्तव्य सचय है ? नारकी तीनों प्रकारके हैं । इसी माफिक १० भुवनपति ३ विकलेन्द्रिय, तीर्यंच पांचेन्द्रिय १ मनुष्य १ व्यान्तर १ ज्योतीषी १ विमानीक एवं १९ दंडक ॥ पृथ्वीकायकी पृच्छा ? कृत संचय नहीं है । अकृत संचय है । अवक्तव्य संचय नहीं है कारण समय समय असंख्याते जीवों उत्पन्न होते हैं । अगर कोइ स्थान पर १-२-३ भी कहा है वह पर कायापेक्षा है एवं अप्काय तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय भी समझना ।

सिद्धोंकी पृच्छा ? कृत संचय है, अवक्तव्य संचय है परन्तु अकृत संचय नहीं है। अल्पाबहुत्व-नारकीमें सर्व स्तोक अवक्तव्य संचय उन्होंसे कृत संचय संख्यात गुणा। अकृत संचय असंख्यात गुणा एवं १९ दंडक समझना । ५ स्थावरमें अल्पा० नहीं है । सिद्धोंमें स्तोक कृत संचय उन्होंसे अवक्तव्य संचय संख्यात गुणा।

॥ सेवंभंते सेवंभंते तमेव सच्चम् ॥

—✻◎✻—

थोकडा नं० १२५

सूत्र श्री भगवती श० १२ उ० ६

(पांचदेव द्वार ६)

नामद्वार १ लक्षणद्वार २ स्थितिद्वार ३ संचिट्ठणद्वार ४ अन्तरद्वार ५ अवगाहनाद्वार ६ गत्यागतिद्वार ७ वैक्रियद्वार ८ अल्पाबहुत्वद्वार ९।

[१] नामद्वार—भावि द्रव्यदेव १ नरदेव २ धर्मदेव ३ देवादिदेव ४ भावदेव ५।

[२] लक्षणद्वार —भावि द्रव्यदेव-मनुष्य तीर्यचके अन्दर रहा हुवा जीव देवका आयुष्य बांधकर बैठा है। भविष्यमें देवतोंमें जानेवाला हो उसे भावि द्रव्यदेव कहते हैं। १ नरदेव चक्रवरतकी ऋद्धि सयुक्त हो उसे नरदेव कहते हैं। २ धर्मदेव साधूके गुणयुक्त होता है। ३ देवादिदेव तीर्थंकर केवलज्ञान केवल दर्शनादि अतिशय सयुक्त होता है। ४ भावदेव, भुवनपति, वाणमित्र, जोतीषी विमानीक यह चार प्रकारके देवताओंको भावदेव कहलाते है।

[३] स्थितिद्वार—भावि द्रव्यदेव जघन्य अन्तरमुहूर्त उ० ३ पल्योपम। नरदेव ज० ७०० वर्ष उ० ८४ लक्ष पूर्व। धर्मदेव ज० अन्तरमुहूर्त उ० देशोणोक्रोड पूर्व। देवादिदेव ज० ७२ वर्ष उ० ८४ लक्ष पूर्व। भावदेव ज० १००० वर्ष उ० ३३ सागरोपम।

[४] संचिट्ठणद्वार— स्थिति माफिक है परन्तु धर्मदेवका संचिट्ठण जघन्य एक समय समझना।

[५] अन्तरद्वार—भावि द्रव्यदेवको अन्तर ज० १०००० वर्ष उ० अनन्तकाल (वनस्पतिकाल)। नरदेव-ज० १ सागरोपम जाझेरो और धर्मदेवको ज० प्रत्येक पल्योपम उ० नरदेव धर्मदेव दोनोंको देशोणी अर्द्ध पुद्गल प्र०। देवादि देवको अन्तर नहीं है। भावदेवको ज० अन्तरमुहूर्त उ० अनन्तो काल।

[६] अवगाहनाद्वार—भावि द्रव्यदेवको ज० आंगुलके असंख्यातमे भाग उ० हजार जोजन। नरदेव ज० ७ धनुष्य। धर्मदेव ज० एक हस्त उणी। देवादिदेव ज० ७ हस्त उ० तीनुकी ५०० धनुष्य। भावदेव ज० आगु० अस० भाग उ० ७ हस्तप्रमाण।

[७] गत्यागतिद्वार—यंत्रसे।

मार्गणा.	समु	न	ती.	म.	देव.
१ भाविभव्य द्रव्यदेवकी आगति	२८४	७	४८	१३१	९८
” गति	१९८	०	०	०	१९८
२ नर देवकी आगति	८२	१	०	०	८१
” गति	१४	१४	०	०	०
३ धर्म देवकी आगति	२७५	५	४०	१३१	९९
” गति	७०	०	०	०	७०
४ देवादिदेवकी आगति	३८	३	०	०	३५
” गति	मोक्ष	०	०	०	०
५ भाव देवकी आगति	१११	०	१०	१०१	०
” गति	४६	०	१६	३०	०

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नम्बर ४२

॥ श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री

शीघ्रबोध भाग १० वां

थोकडा नं. १२६

(चौवीस स्थानक)

चौवीस द्वारके २१९ बोलोंको २१९ बोलोंपर उतारा जावेगा इस संबन्धको गहरी दृष्टिसे पढनेसे प्रश्नशक्ति, तर्कशक्ति, और अध्यात्मज्ञानशक्ति वढ जाति है वास्ते आद्योपान्त पढके लाभ अवश्य उठाना चाहिये ।

१	गतिद्वार नरकादि	४	१३	सम्यक्त्वद्वार	७
२	जातिद्वार एकेन्द्रियादि	५	१४	आहारीकद्वार	२
३	कायाद्वार पृथ्व्यादि	६	१५	गुणस्थानद्वार	१४
४	योगद्वार मनादि	१५	१६	जीवभेदद्वार	१४
५	वेदद्वार स्त्रियादि	३	१७	पर्याप्तिद्वार	६
६	कषायद्वार क्रोधादि	२५	१८	प्राणद्वार	१०
७	ज्ञानद्वार मत्यादि	८	१९	संज्ञाद्वार	४
८	संयमद्वार सामायिकादि	७	२०	उपयोगद्वार	२
९	दर्शनद्वार चक्षुरादि	४	२१	दृष्टिद्वार	३
१०	लेश्याद्वार कृष्णादि	६	२२	कर्मद्वार	८
११	भव्यद्वार भव्यादि	२	२३	शरीरद्वार	५
१२	संज्ञीद्वार संज्ञी	२	२४	हेतुद्वार	५७

[गतिद्वार १]

नंबर	नामद्वार.	नरकगति.	तिर्यच गति.	मनुष्य गति.	देव गतिमें.	
१	गतिद्वार ४	१	१	१	१	अपनी अ-
२	इन्द्रिय ५	पंचेन्द्रिय	पचों०	१ पंचे०	१ पचे०	पनी गती
३	काय ६	१ त्रसकाय	छ काया	१ त्रस०	१ त्रस०	पावे
४	योग १५	११	१३	१५	११	
५	वेद ३	१ नपुसक	३	३	२ स्त्री.पु.	
६	कषाय २५	२३	२५	२५	२४	
७	ज्ञान ८	६	६	८	६	
८	संयम ७	१	२	७	१	
९	दर्शन ४	३	३	४	३	
१०	लेश्या ६	३	६	६	६	नारकी दे-
११	भव्य २	२	२	२	२	वतामें जाण
१२	सन्नी २	१	२	२	१	आश्री अस-
१३	सम्यक्त्व ७	७	७	७	७	न्नी भी मि
१४	आहारिक२	२	२	२	२	लते है.
१५	गुणस्था.१४	४	५	१४	४	
१६	जीवभेद१४	३	१४	३	२	
१७	पर्याप्ति ६	५	६	६	५	
१८	प्राण १०	१०	१०	१०	१०	देवता. ना-
१९	संज्ञा ४	४	४	४	४	रकी मन
२०	उपयोग २	२	२	२	२	और भाषा
२१	दृष्टि ३	३	३	[illegible]	३	पर्यायापा
२२	कर्म ८	८	८	८	८	वे इसवास्ते
२३	शरीर ५	३	४	५	[illegible]	५ कही है.
२४	हेतु ५७	५१	५५	५७	५२	

[इन्द्रियद्वार २]

नं.	द्वार		एकेंद्रि	बेरिंद्रि	तेरिंद्रि	चौरिंद्रि	पंचेद्रि	
१	गती	४	१	१	१	१	४	अपने अपनी
२	इन्द्रि	५	१	१	१	१	१	
३	काय	६	५	१	१	१	१	
४	योग	१५	५	४	४	४	१५	
५	वेद	३	१	१	१	१	३	
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३	२५	
७	ज्ञान	८	२	४	४	४	८	
८	सयम	७	१	१	१	१	७	
९	दर्शन	४	१	१	१	२	४	
१०	लेश्या	६	४	३	३	३	६	
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	२	
१३	सम्यक्त्व	७	१	२	२	२	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्था.	१४	१	२	२	२	१२	१३-१४ गु
१६	जीवभेद	१४	४	२	२	२	१४	अनेन्द्रीया.
१७	पर्याप्ति	६	४	५	५	५	६	
१८	प्राण	१०	४	६	७	८	१०	
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	
२१	द्रष्टि	३	१	२	२	२	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	३	३	३	५	
२४	हेतु	५७	४१	४०	४०	४०	५७	

[कायद्वार २]

नं०	द्वार.		पृथ्वी.	अप्प.	तेउ.	वाउ.	वनस्पति	त्रस.
१	गती	४	१	१	१	१	१	४
२	इन्द्रि	५	१	१	१	१	१	५
३	काय	६	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	३	३	३	५	३	१५
५	वेद	३	१	१	१	१	१	३
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३	२३	२५
७	ज्ञान	८	२	२	२	२	२	८
८	सयम	७	१	१	१	१	१	७
९	दर्शन	४	१	१	१	१	१	४
१०	लेश्या	६	४	४	३	३	४	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१	१	१	१	१	१४
१६	जीवभेद	१४	४	४	४	४	६	१०
१७	पर्याप्ति	६	४	४	४	४	४	६
१८	प्राण	१०	४	४	४	४	४	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	३
२२	धर्म	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	४	३	५
२४	हेतु	५७	३९	३९	३९	४१	३९	५७

[कायका योग ७ द्वार ४]

नं०	द्वार.		औ० २	वे० २	आ० २	कार्म०
१	गती	४	२	४	१	४
२	इन्द्रि	५	५	२	१	५
३	काय	६	६	२	१	६
४	योग	१५	अपना	अपना	अपना	अपना
५	वेद	३	३	३	१	३
६	कषाय	२५	२५	२५	११	२५
७	ज्ञान	८	८	७	४	८
८	सयम	७	७।५	४	२	२
९	दर्शन	४	४	३	३	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	१	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	४	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१३।६	७।५	२	४
१६	जीवभेद	१४	१४।९	४	१	८
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०।८
१९	सञ्ज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	२।३	२।३	१	२
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	३
२४	हेतु	५७	५१	५१	२१	४३

[वेदद्वार ५]

नं०	द्वार.		स्त्री.	पुरुष.	नपुंसक.
१	गती	४	३	३	३
२	इन्द्रि	५	१ पंचेन्द्रि	१ पचेंद्रि	५
३	काय	६	१ त्रस	१ त्रस	६
४	योग	१५	१३	१५	१५
५	वेद	३	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	७	७	७
८	संयम	७	४	५	५
९	दर्शन	४	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	९	९	९
१६	जीवभेद	१४	२	२	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८
२३	शरीर	५	४	५	५
२४	हेतु	५७	५३	५५	५५

[कषायद्वार ६]

नं०	द्वार.		अनुता-न० ४	अप्रत्या ४	प्रत्या० ४	सज्व० ४	हासादि ६	वेद ३
१	गती	४	४	४	४	४	४	
२	इन्द्रिय	५	५	५	५	५	५	
३	काय	६	६	६	६	६	६	
४	योग	१५	१३	१३	१३	१५	१५	
५	वेद	३	३	३	३	३	३	
६	कषाय	२५	अपनि	अपनि	पवं	पवं	पवं	
७	ज्ञान	८	३	६	६	७	७	
८	संयम	७	१	१	२	६	५	नवमें ५ में मार्गणा सिद्धि कै:
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	
१२	सन्नी	२	२	२	२	२	२	
१३	सम्यक्त्व	७	२	७	७	७	७	
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	
१५	गुणस्थान	१४	२	४	५	[illegible]	८	
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	१४	१४	१४	
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४	४	
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	
२१	दृष्टि	३	२	३	३	३	३	
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	
२३	शरीर	५	४	४	४	५	५	
२४	हेतु	५७	५५	५५	५५	५७	५७	

[ज्ञानद्वार ७]

	द्वार		म० श्रु०	अ०	म०	के०	म० श्रु० अज्ञान	वि० अ०
१	गती	४	४	४	१	१	४	४
२	इन्द्रिय	५	४	१	१	०	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	६	१
४	योग	१५	१५	१५	१४	५|७	१३	१३
५	वेद	३	३	३	३	०	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	१३	०	२५	२५
७	ज्ञान	८	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना
८	संयम	७	७	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	१	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	२	२
१२	सन्नी	२	२	१	१	०	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	५	५	४	१	२	२
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	२	२
१५	गुणस्था.	१४	१०	१०	७	२	२	२
१६	जीवभेद	१४	६	२	१	१	१४	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	२	२
२२	कर्म	८	८	८	८	४	८	८
	शरीर	५	५	५	५	३	४	४
	हेतु	५७	५२	५२	२७	५|७	५५	५५

[संयमद्वार ८]

नं०	द्वार.		सा० छे०	प०	सु०	यथा०	संयमासंयम	असंयम
१	गति	४	१	१	१	१	२	४
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	५
३	काय	६	१	१	१	१	१	६
४	योग	१५	१४	९	९	११	१२	१३
५	वेद	३	३	२	०	०	३	३
६	कषाय	२५	१३	१२	१	०	१७	२५
७	ज्ञान	८	४	४	४	५	३	६
८	संयम	७	अपना	अपना	अपना	अपना	पथं	पथं
९	दर्शन	४	३	३	३	४	३	३
१०	लेश्या	६	६	३	१	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	२
१३	सम्यक्त्व	७	४	४	२	२	४	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	२	१	२
१५	गुणस्था.	१४	४	२	१	४	१	४
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	सन्ना	४	४	०	०	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८।४	८।	८
२३	शरीर	५	५	५	३	३	४	४
२४	हेतु	५७	२७	२२	१०	११	४०	५५

[ज्ञानद्वार ७]

नं०	द्वार		म० श्रु०	अ०	म०	के०	म० श्रु० अज्ञान	वि० अ०
१	गती	४	४	४	१	१	४	४
२	इन्द्रिय	५	४	१	१	०	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	६	१
४	योग	१५	१५	१५	१४	५।७	१३	१३
५	वेद	३	३	३	३	०	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	१३	०	२५	२५
७	ज्ञान	८	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना	अपना
८	संयम	७	७	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	१	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	१	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	२	२
१२	सन्नी	२	२	१	१	०	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	५	५	४	१	२	२
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	२	२
१५	गुणस्था.	१४	१०	१०	७	२	२	२
१६	जीवभेद	१४	६	२	१	१	१४	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	२	२
२२	कर्म	८	८	८	८	४	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	३	४	४
२४	हेतु	५७	५२	५२	२७	५।७	५५	५५

[लेश्याद्वार १०]

नं०	द्वार		कृष्ण, नील, कापोत	तेजु	पद्म	शुक्ल
१	गती	४	४	३	३	३
२	इन्द्रिय	५	५	२	१	१
३	काय	६	६	४	१	१
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५
५	वेद	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	७	७	७	८
८	सयम	७	४	५	५	७
९	दर्शन	४	३	३	३	४
१०	लेश्या	६	अपनी अपनी	एव	एव	एव
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	६	७	७	१३
१६	जीव भेद	१४	१४	३	२	२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	५७	५७	५७

[दर्शनद्वार ६]

नं०	द्वार.		चक्षु द०	अचक्षु द०	अवधी द०	केवल द०
१	गती	४	४	४	४	१
२	इन्द्रिय	५	२	५	१	अ०
३	काय	६	त्रस	६	त्रस	त्रस
४	योग	१५	१४	१५	१५	५-७
५	वेद	३	३	३	३	अ०
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	अ०
७	ज्ञान	८	७	७	७	१
८	संयम	७	७	७	७	१
९	दर्शन	४	अपना २	पत्र	पत्रं	पत्रं
१०	लेश्या	६	६	६	६	१
११	भव्य	२	२	२	२	१
१२	सन्नी	२	२	२	१	नो
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	१
१४	आहारिक	२	१	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१२	१२	१२	२
१६	जीव भेद	१४	३।६	१४	२	१
१७	पर्याप्ता	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	५
१९	संज्ञा	४	४	४	४	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	३	३	१
२२	कर्म	८	८	८	८	४
२३	शरीर	५	५	५	५	३
२४	हेतु	५७	५६	५७	५७	५+७

(सम्यक्त्व द्वार १३)

नं०	द्वार.		क्षा०	क्षयो०	उ०	वे०	सास्वा०	मिथ्या-त्व०	मिश्र.
१	गति	४	४	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	४	५	१
३	काय	६	१	१	१	१	१	५	१
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५	१३	१३	१०
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२१	२१	२१	२१	२१	२५	२०
७	ज्ञान	८	५	४	४	४	३	३	३
८	सयम	७	७	५	७	५	१	१	१
९	दर्शन	४	४	३	३	३	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	२	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	२	२	१
१३	सम्यक्त्व	७	अपनि	पव,	पवं.	पव,	पवं,	पवं.	पवं,
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२	२	१
१५	गुणस्थान	१४	११	४	८	४	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	२	२	२	२	६	१४	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५	४	४	४
२४	हेतु	५७	४८	४८	४८	४८	४६	५५	४३

[भव्य और सन्नीद्वार ११–१२]

नं०	द्वार		भव्य	अभव्य	सन्नी	असन्नी
१	गती	४	४	४	४	४
२	इन्द्रिय	५	५	५	१	५
३	काय	६	६	६	१	६
४	योग	१५	१५	१३	१५	६
५	वेद	३	३	३	३	१
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२३
७	ज्ञान	८	८	३	७	४
८	संयम	७	७	१	७	१
९	दर्शन	४	४	३	३	२
१०	लेश्या	६	६	६	६	४
११	भव्य	२	अपना	अपना	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	अपना	अपना
१३	सम्यक्त्व	७	७	१	७	२
१४	आहारिक	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१४	१	१२	२
१६	जीवभेद	१४	१४	१४	२	१२
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	५
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	९
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	१	३	२
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	४	५	४
२४	हेतु	५७	५७	५५	५७	४३

[गुणस्थानद्वार १५]

नं०	द्वार.		मिथ्या०	सा०	मि०	अव०	देस०	प्र०	अप्र०
१	गती	४	४	४	४	४	२	१	१
२	इन्द्रिय	५	५	४	१	१	१	१	१
३	काय	६	६	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	१३	१३	१०	१३	१२	१४	११
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२१	२१	१७	१३	१३
७	ज्ञान	८	३	३	३	३	३	४	४
८	सयम	७	१	१	१	१	१	३	३
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	३	३
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६	३
११	भव्य	२	२	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	२	२	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	४	४	४	४
१४	आहारिक	२	२	२	१	२	१	१	१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१४	६	१	२	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	सज्ञा	४	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	द्रष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	४	४	४	४	४	५	५
२४	हेतु	५७	५५	५०	४३	४६	४०	२६	२४

(आहारिक द्वार १४ प्राण द्वार १८)

नं०	द्वार		आहा०	अना०	इंद्रि० ४	स्प०का० श्वा०	म०घ०	आयु०
१	गतीद्वार	४	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रीय	५	५	५	श्रो०१ च०२ घ्रा०३ र०४	५	१।४	५
३	काय	६	६	६	१	६	१	६
४	योग	१५	१४	१	१५	१५	१४	१५
५	वेद	३	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	८	७	७	७।८	८	८
८	संयम	७	७	२	७	७	७	७
९	दर्शन	४	४	३	३	३।४	४	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	२	२	१।२	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	६	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२
१५	गुणस्था	१४	१३	५	१२	१२ कृ० १४ १३	१३	१४
१६	जीव भेद	१४	१४	८	श्रो०४ च०६ घ्रा०८ र०१०	१४	१२	१४
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	अपना	अपना	अपना	
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	३	२	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	३	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	४३	५६	५७।५६	५६	५७

[जीव भेद द्वार १६]

नं०	द्वार		सु० २	षा० २	बे० २	ते० २
१	गती	४	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	२	३
३	काय	६	५	५	१	१
४	योग	१५	३।१	३।४	२।३	२।३
५	वेद	३	१	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	२	२	४।२	४।२
८	संयम	७	१	१	१	१
९	दर्शन	४	१	१	१	१
१०	लेश्या	६	३	४।३	३	३
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	२।१	२।१
१४	आहारिक	२	२।१	२।१	२।१	२।१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	२।१	२।१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	३।४	३।४	४।५	४।५
१८	प्राण	१०	३।४	३।४	५।६	६।७
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	१	१	२।१	२।१
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३।४	३	३
२४	हेतु	५७	३९	३७।४०	३८।३९	३८।३९

[गुण स्थानक द्वार १५]

नं०	द्वार		नि०	अनि०	सु०	उप०	क्षी०	स०	अ०
१	गती	४	१	१	१	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	०	०
३	काय	६	१	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	९	९	९	९	९	५।७	०
५	वेद	३	३	३	०	०	०	०	०
६	कषाय	२५	१३	७	१	०	०	०	०
७	ज्ञान	८	४	४	४	४	४	१	१
८	संयम	७	२	२	१	१	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	१	१
१०	लेश्या	६	१	१	१	१	१	१	०
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	१	१
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२	१
१५	गुणस्था.	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५	२
१९	संज्ञा	४	०	०	०	०	०	०	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	७	७	४	४
२३	शरीर	५	३	३	३	३	३	३	३
२४	हेतु	५७	२२	१६	१०	९	९	५।७	०

[जीव भेद द्वार १६]

नं०	द्वार		सु० २	बा० २	बे० २	ते० २
१	गती	४	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	२	३
३	काय	६	५	५	१	१
४	योग	१५	३।१	३।४	२।३	२।३
५	वेद	३	१	१	१	१
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२३
७	ज्ञान	८	२	२	४।२	४।२
८	संयम	७	१	१	१	१
९	दर्शन	४	१	१	१	१
१०	लेश्या	६	३	४।३	३	३
११	भव्य	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	२।१	२।१
१४	आहारिक	२	२।१	२।१	२।१	२।१
१५	गुणस्थान	१४	१	१	२।१	२।१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	३।४	३।४	४।५	४।५
१८	प्राण	१०	३।४	३।४	५।६	६।७
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२
२१	दृष्टी	३	१	१	२।१	२।१
२२	कर्म	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३।४	३	३
२४	हेतु	५७	३९	३९।४०	३८।३९	३८।३९

[गुण स्थानक द्वार १५]

न०	द्वार		नि०	अनि०	सु०	उप०	क्षी०	स०	अ०
१	गती	४	१	१	१	१	१	१	१
२	इन्द्रिय	५	१	१	१	१	१	०	०
३	काय	६	१	१	१	१	१	१	१
४	योग	१५	९	९	९	९	९	५।७	०
५	वेद	३	३	३	०	०	०	०	०
६	कषाय	२५	१३	७	१	०	०	०	०
७	ज्ञान	८	४	४	४	४	४	१	१
८	संयम	७	२	२	१	१	१	१	१
९	दर्शन	४	३	३	३	३	३	१	१
१०	लेश्या	६	१	१	१	१	१	१	०
११	भव्य	२	१	१	१	१	१	१	१
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	१	१	१	१	१	१	१
१४	आहारिक	२	१	१	१	१	१	२	१
१५	गुणस्था.	१४	१	१	१	१	१	१	१
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	६	६	६	६	६	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०	५	२
१९	सज्ञा	४	०	०	०	०	०	०	०
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	१	१	१	१	१	१	१
२२	कर्म	८	८	८	८	७	७	४	४
२३	शरीर	५	३	३	३	३	३	३	३
२४	हेतु	५७	२२	१६	१०	९	९	५।७	०

[पर्याप्ति द्वार १७-१९-२०]

नं०	द्वार.		पर्या० ४	भाषा०	मन०	संज्ञा०	उपयोग.
१	गती	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रि	५	५	४	१	५	५
३	काय	६	६	१	१	६	६
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५	१५
५	वेद	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	८	८	८	७	८
८	संयम	७	७	७	७	४	७
९	दर्शन	४	४	४	४	३	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	२	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१४	१४	१४	६	१४
१६	जीवभेद	१४	१४	१०	१	१४	१४
१७	पर्याप्ति	६	अपनी	अपनी	अपनी	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	सन्ना	४	४	४	४	अपनी २	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	अपनी २
२१	द्रष्टि	३	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	५७	५७	५७	५७

[पर्याप्ति द्वार १७-१९-२०]

नं०	द्वार		पर्या० ४	भाषा०	मन०	संज्ञा०	उपयोग.
१	गती	४	४	४	४	४	४
२	इन्द्रि	५	५	४	१	५	५
३	काय	६	६	१	१	६	६
४	योग	१५	१५	१५	१५	१५	१५
५	वेद	३	३	३	३	३	३
६	कषाय	२५	२५	२५	२५	२५	२५
७	ज्ञान	८	८	८	८	७	८
८	संयम	७	७	७	७	४	७
९	दर्शन	४	४	४	४	३	४
१०	लेश्या	६	६	६	६	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	२	२	१	२	२
१३	सम्यक्त्व	७	७	७	७	७	७
१४	आहारिक	२	२	२	२	२	२
१५	गुणस्थान	१४	१४	१४	१४	६	१४
१६	जीवभेद	१४	१४	१०	१	१४	१४
१७	पर्याप्ति	६	अपनी	अपनी	अपनी	६	६
१८	प्राण	१०	१०	१०	१०	१०	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	अपनी २	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	अपनी २
२१	दृष्टि	३	३	३	३	३	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	५	५	५	५	५
२४	हेतु	५७	५७	५७	५७	५७	५७

[जीव भेद]

नं०	द्वार.		चौ० २	अ०पं०अ	अ०प्र०प	स०पं०अ	स०पं०प्र०
१	गति	४	१	१	१	४	४
२	इन्द्रिय	५	४	५	५	५	५
३	काय	६	१	१	१	१	१
४	योग	१५	२।३	३	२	५	१५
५	वेद	३	१	१	१	३	३
६	कषाय	२५	२३	२३	२३	२५	२५
७	ज्ञान	८	४।२	४	२	६	८
८	संयम	७	१	१	१	१	७
९	दर्शन	४	२	२	२	३	४
१०	लेश्या	६	३	३	३	६	६
११	भव्य	२	२	२	२	२	२
१२	सन्नी	२	१	१	१	१	१
१३	सम्यक्त्व	७	२।१	२	१	६	७
१४	आहारिक	२	२।१	२	१	२	२
१५	गुणस्था.	१४	२।१	२	१	३	१४
१६	जीवभेद	१४	१	१	१	१	१
१७	पर्याप्ति	६	४।५	४	५	५	६
१८	प्राण	१०	७।८	८	९	९	१०
१९	संज्ञा	४	४	४	४	४	४
२०	उपयोग	२	२	२	२	२	२
२१	दृष्टि	३	२।१	२	१	२	३
२२	कर्म	८	८	८	८	८	८
२३	शरीर	५	३	३	३	४	५
२४	हेतु	५७	३९।३८	३९	३८	४७	५७

[हेतु द्वार २४]

नं०	द्वार.		मिथ्या०५	अवृत्त १२	कषाय २५	योग १५
१	गती	४	४	४		
२	इन्द्रिय	५		५		
३	काय	६		६		
४	योग	५		१३		
५	वेद	१३		३		
६	कषाय	२५		२५		
७	ज्ञान	८		६		
८	संयम	७	१			
९	दर्शन	४		३		
१०	लेश्या	६	६	६	कषाय द्वार में	योग द्वार में
११	भव्य	२	२	२		
१२	सन्नी	२		२		
१३	सम्यक्त्व	७	१	७		
१४	आहारिक	२	२	२		
१५	गुणस्थान	१४	१			
१६	जीव भेद	१४		१४		
१७	पर्याप्ति	६	६	६		
१८	प्राण	१०	१०	१०		
१९	संज्ञा	४	४	४		
२०	उपयोग	२	२	२		
२१	दृष्टी	३	१	३		
२२	कर्म	८	८	८		
२३	शरीर	५	४	४		
२४	हेतु	५७	५५	५५		

[हेतु द्वार २४]

नं०	द्वार.		मिथ्या०५	अव्रत १२	कषाय २५	योग १५
१	गती	४	४	४	कषाय द्वार में है	योग द्वार में है
२	इन्द्रिय	५		५		
३	काय	६		६		
४	योग	५		१३		
५	वेद	१३		३		
६	कषाय	२५		२५		
७	ज्ञान	८		६		
८	संयम	७	१			
९	दर्शन	४		३		
१०	लेश्या	६	६	६		
११	भव्य	२	२	२		
१२	सन्नी	२		२		
१३	सम्यक्त्व	७	१	७		
१४	आहारिक	२	२	२		
१५	गुणस्थान	१४	१			
१६	जीव भेद	१४		१४		
१७	पर्याप्ति	६	६	६		
१८	प्राण	१०	१०	१०		
१९	संज्ञा	४	४	४		
२०	उपयोग	२	२	२		
२१	दृष्टी	३	१	३		
२२	कर्म	८	८	८		
२३	शरीर	५	४	४		
२४	हेतु	५७	५५	५५		

[हेतु द्वार २४]

नं०	द्वार.		मिथ्या०५	अव्रत्त १२	कषाय २५	योग १५
१	गती	४	४	४		
२	इन्द्रिय	५		५		
३	काय	६		६		
४	योग	५		१३		
५	वेद	१३		३		
६	कषाय	२५		२५		
७	ज्ञान	८		६		
८	संयम	७	१			
९	दर्शन	४		३		
१०	लेश्या	६	६	६	कषाय द्वार में है	योग द्वार में है
११	भव्य	२	२	२		
१२	सज्ञी	२		२		
१३	सम्यक्त्व	७	१	७		
१४	आहारिक	२	२	२		
१५	गुणस्थान	१४	१			
१६	जीव भेद	१४		१४		
१७	पर्याप्ति	६	६	६		
१८	प्राण	१०	१०	१०		
१९	संज्ञा	४	४	४		
२०	उपयोग	२	२	२		
२१	दृष्टी	३	१	३		
२२	कर्म	८	८	८		
२३	शरीर	५	४	४		
२४	हेतु	५७	५५	५५		

थोकडा नं. १२८

जीवोंके १४ भेदके प्रश्नोत्तर।

	प्रश्न			उत्तर
१	जीवका एक भेद कहां पावे ?			केवलीमें
२	,,	दोय ,,	,,	बेइन्द्रियमें
३	,,	तीन ,,	,,	मनुष्यमें
४	,,	चार ,,	,,	पकेन्द्रियमें
५	,,	पांच ,,	,,	भाषकमें
६	,,	छे ,,	,,	सम्यग्दृष्टीमें
७	,,	सात	,,	अपर्यातामें
८	,,	आठ ,,	,,	अनाहारीकमें
९	,,	नव ,,	,,	एकान्त सरागी त्रसमें
१०	,,	दश ,,		त्रस कायमें
११	,,	इग्यारे ,,	,,	एकान्त बादर सरागीमें
१२	,,	बारह ,,		बादरमें
१३	,,	तेरह ,,	?	एकान्त छद्मस्तमें
१४	,,	चौदा ,,	?	सर्व संसारी जीवोंमें

१४ गुणस्थानके प्रश्नोत्तर.

	प्रश्न			उत्तर
१५	एक गुणस्थान कहा पावे ?			मिथ्यात्वी जीवमें
१६	दोय	,,	१—२	बेइन्द्रियमें
१७	तीन	,,	१-१३-१३	अमरमें
१८	चार	,,	१-२-३-४	नारकी देवन दोनें

थोकडा नं. १२९

१५ योगोंका प्रश्नोत्तर.

प्रश्न		उत्तर
१ एक योग कीसमे पावे	?	वाटे वेहता जीवमें-कार्माण
२ दोय योग ,,	?	वेंद्रियका पर्यासामें
३ तीन योग ,,	?	पृथ्वीकायमें
४ चार योग ,,	?	चौरिंद्रियमें
५ पांच योग ,,	?	वायुकायमें
६ छे योग ,,	?	असंज्ञी जीवोंमें
७ सात योग ,,	?	केवली तेरहवें गु० में
८ आठ योग ,,	?	पांचेन्द्रिय अपर्याप्ता अनाहारीकवें-[अलद्धियामें
९ नव योग ,,	?	नव गुणस्थानमें।
१० दश योग ,,	?	तीजा मिश्र गुण स्थानमें
११ इग्यारे योग ,,	?	देवतावोंमें
१२ बारह ,, ,,	?	पांचमें गु० श्रावकमें
१३ तेरह ,, ,,	?	तीर्यंचपांचेन्द्रिमें
१४ चौदह ,, ,,	?	आहारीक जीवोंमें
१५ पन्दरा ,, ,,	?	सर्व संसारी जीवोंमें

१२ उपयोगका प्रश्नोत्तर.

प्रश्न		उत्तर
१६ एक उपयोग	?	साकार उपयोगमें सिद्ध होते समय
१७ दो ,,	?	केवली भगवान्में
१८ तीन ,,	?	एकेन्द्रिय जीवोंमें
१९ चार ,,	?	असंज्ञी मनुष्यमें
२० पांच ,,	?	तेइन्द्रि जीवोंमें

१९ पांच क्रमःसर तीर्यंच पांचेन्द्रियमें
२० छे क्रमःसर प्रमादी जीवोंमें
२१ सात ,, ,, तेजो लेश्यामें
२२ आठ ,, ,, हास्यादिकमें
२३ नव ,, ,, सवेदी जीवोंमें
२४ दश ,, ,, सरागी जीवोंमें
२५ इग्यारे ,, ,, मोह कर्मकी सतामें
२६ बारह ,, ,, छद्मस्त जीवोंमें
२७ तेरह ,, ,, संयोगी जीवोंमें
२८ चौदा ,, ,, सर्व संसारी जीवोंमें
२९ याटे यहे तो मे गु० तीन । १ । २ । ४ ।
३० अनाहारीक गु० पांच । १ । २ । ४ । १३ । १४ ।
३१ सास्वता गु० पांच । १ । ४ । ५ । ६ । १३ ।
३२ एकान्त संज्ञी गु० दश । तीजासे बारहतक ।
३३ असंज्ञी गु० दोय । १ । २
३४ नोसंज्ञी नोअसंज्ञी गु० दोय । १३ । १४ ।
३५ सम्यग्दृष्टीमें गु० बारह । पहिलो तीजो वर्जके ।
३६ साधुमें गु० नव-छठासे चौदमा तक ।
३७ श्रावकमें गु० एक पांचमो
३८ अप्रमादिमें गु० आठ सातमा से चौदमा ।
३९ वीतरागमें गु० चार । ११ । १२ । १३ । १४

—✻—

१४ , कृष्ण० कापोत० ? नारकीके चरमान्तमे
१५ कृष्ण० तेजस० ? लक्ष वर्षका देवतावोंमें
१६ ,, पद्म० ? परिव्राजक कि गतिका चरमान्तमें
१७ ,, शुक्ल० ? उत्कृष्ट स्थितिमें
१८ निल० कापोत० ? तीजी नारकीमें
१९ ,, तेजस० ? पल्योपमके असंख्यात भाग कि स्थितिका देवताओंमें
२० ,, पद्म० ? दश सागरोपमकि स्थितिमें।
२१ ,, शुक्ल० ? दश सागरोपम और पल्योपमके असंख्यातमें भाग अधिक स्थितिवालोंमें
२२ कापोत० तेजस० ? दोय सागरोपमकि स्थितिमें
२३ ,, पद्म ? तीन सागरोपमकि स्थितिमें
२४ ,, शुक्ल ? वासुदेवकि आगतिका चरमान्तमें
२५ तेजस० पद्म ? वैमानिक देवोकी प्रत्येक सागरोपमकि स्थितिमें
२६ तेजस० शुक्ल० ? वैमानिक देवोंका चरमान्तमें
२७ पद्म० ,, ? वैमानिकके एक वेदवालोंमें
२८ निल० कापोत० तेजस० पद्म० ? प्रत्येक सागरोपम स्थितिमें
२९ कृष्ण० निल० कापोत, तेजस, पद्म० ? पांचवा देवलोकमें
३० कापोत० तेजस० पद्म० शुक्ल० ? वासुदेवकि आगतिमें
३१ कृष्ण० निल० कापोत० तेजस० शुक्ल० ? सर्वार्थ सिद्ध वैमानमें

थोकडा नम्बर १३१

(तीर्यचके ४८ भेदोंका प्रश्नोत्तर.)

तीर्यचका एक भेद चार शरीरी एकेन्द्रियमें पावे।

,, २९ भेद ? तीर्यंच एकान्तमिथ्यात्वी तीनशरीरी ।
,, ३० भेद ? तीर्यंच एकान्त मिथ्यात्वीमें ।
,, ३१ भेद ? सम्यक्दृष्टि घ्राणेन्द्रियके अलद्धियेतीर्यं०
,, ३२ भेद ? बादर तीन शरीरीतीर्यंच जीवोमें ।
,, ३३ भेद ? सम्य० ती० पांचेन्द्रिय अलद्धिय तीर्यंचमें ।
,, ३४ भेद ? प्रत्येक शरीरी एक संस्थानी तीर्यंचमें ।
,, ३५ भेद ? सम्य० अपर्या० के अलद्धियातीर्यंचमें ।
,, ३६ भेद ? उर्ध्वलोक एक संस्थानी तीर्यंचमें ।
,, ३७ भेद ? एकेन्द्रिय पर्याप्ताका अलद्धिया ती०
,, ३८ भेद ? एक संस्थानी तीर्यंचमें ।
,, ३९ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धिया तीन शरीरी ती०
,, ४० भेद ? मनुष्यकी आगतिके तीर्यंचमें ।
,, ४१ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धि० प्रत्येक शरीरी ती०
,, ४२ भेद ? उर्ध्वलोकके प्रत्येक शरीरी तीर्यंचमें ।
,, ४३ भेद ? चार शरीरी पंचेन्द्रिके अलद्धिया तीर्यंचमें ।
,, ४४ भेद ? प्रत्येक शरीरी तीर्यंचमें ।
,, ४५ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धिया तीर्यंचमें ।
,, ४६ भेद ? उर्ध्वलोकके तीर्यंचमें ।
,, ४७ भेद ? चार शरीरी एकेन्द्रि० अलद्धि० तीर्यंचमें ।
,, ४८ भेद ? समुच्चय तीर्यंचमें ।

थोकडा नम्बर १३१

(गुणस्थानोंके प्रश्नोत्तर)

पहला गुणस्थान पावे अभव्य जीवोमें ।
पहला दूसरा गु० पावे असंज्ञी जीवोमें ।

,, २९ भेद ? तीर्यंच एकान्तमिथ्यात्वी तीनशरीरी।
,, ३० भेद ? तीर्थंच एकान्त मिथ्यात्वीमें।
,, ३१ भेद ? सम्यक्‌दृष्टि घ्राणेन्द्रियके अलद्धियेतीर्थं०
,, ३२ भेद ? बादर तीन शरीरीतीर्यंच जीवोमें।
,, ३३ भेद ? सम्य० ती० पांचेन्द्रिय अलद्धिय तीर्यंचमें।
,, ३४ भेद ? प्रत्येक शरीरी एक संस्थानी तीर्यंचमें।
,, ३५ भेद ? सम्य० अपर्या० के अलद्धियातीर्यंचमें।
,, ३६ भेद ? उर्ध्वलोक एक संस्थानी तीर्यंचमें।
,, ३७ भेद ? एकेन्द्रिय पर्याप्ताका अलद्धिया ती०
,, ३८ भेद ? एक संस्थानी तीर्यंचमें।
,, ३९ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धिया तीन शरीरी ती०
,, ४० भेद ? मनुष्यकी आगतिके तीर्यंचमें।
,, ४१ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धि० प्रत्येक शरीरी ती०
,, ४२ भेद ? उर्ध्वलोकके प्रत्येक शरीरी तीर्यंचमें।
,, ४३ भेद ? चार शरीरी पंचेन्द्रिके अलद्धिया तीर्यंचमें।
,, ४४ भेद ? प्रत्येक शरीरी तीर्यंचमें।
,, ४५ भेद ? तेजु० एकेन्द्रि० अलद्धिया तीर्यंचमें।
,, ४६ भेद ? उर्ध्वलोकके तीर्यंचमें।
,, ४७ भेद ? चार शरीरी एकेन्द्रि० अलद्धि० तीर्यंचमें।
,, ४८ भेद ? समुच्चय तीर्यंचमें।

थोकडा नम्बर १३१

(गुणस्थानोंके प्रश्नोत्तर)

पहला गुणस्थान पावे अभव्य जीवोमें।
पहला दूसरा गु० पावे असंज्ञी जीवोमें।

,, ,, सातवो ,, ,, ,, तेजुलेशी गु० के ,,
,, ,, आठवो ,, ,, ,, हास्यादि गु० के ,,
,, ,, नौवा ,, ,, ,, सवेदी गु० के ,,
,, ,, दशवो ,, ,, ,, सकषायि गु० के ,,
,, ,, इग्यारवा ,, ,, ,, मोहकर्मकी सत्ताके ,,
,, ,, बारहवा ,, ,, ,, छद्मस्थ गु० के ,,
,, ,, तेरहवा ,, ,, ,, संयोगी गु० के ,,
,, ,, चौदहवा ,, ,, ,, सर्वजीवोंके ,,
तीसरा और चोथा ,, एकान्त संज्ञी अव्रती तीर्योंमें ।
,, ,, पांचवा ,, ,, ,, तीर्यच गु० के चरमान्त
,, ,, छट्ठा ,, ,, ,, प्रमादि गु० के ,,
,, ,, सातवा ,, ,, ,, तेजोलेशी गु० के ,,
,, ,, आठवा ,, ,, ,, हास्यादि गु० के ,,
,, ,, नौवा गु० ,, ,, सवेदी गु० के ,,
,, ,, दशवा ,, ,, ,, सकषायि ,, के ,,
,, ,, इग्यारवा० ,, ,, मोहसत्ता ,, के ,,
,, ,, बारहवा गु० ,, ,, छद्मस्थ० ,, के ,,
,, ,, तेरहवा ,, ,, ,, संयोगी० ,, के ,,
,, ,, चौदहवा० ,, ,, समुच्चय गु० के ,,
चोथो और पंचवा गु० क्षायक सम्य० वाले तीर्यच में
चोथो और छट्ठो गु० ,, ,, प्रमादि गु० के चरमान्तमें
,, ,, सातवा गु० ,, ,, तेजोलेशी ,, ,,
,, ,, आठवा ,, ,, ,, हास्यादि ,, ,,
,, ,, नौवा ,, ,, ,, सवेदी ,, ,,
,, ,, दशवा ,, ,, ,, सकषायि ,, ,,
,, ,, इग्यारवा ,, ,, ,, मोहकर्म सत्ता ,, ,,
,, ,, बारहवा ,, ,, ,, छद्मस्थ ,, ,,
,, ,, तेरहवा ,, ,, ,, संयोगी ,, ,,

,, ,, सातवो ,, ,, ,, तेजुलेशी गु० के ,,
,, ,, आठवो ,, ,, ,, हास्यादि गु० के ,,
,, ,, नौवा ,, ,, ,, सवेदी गु० के ,,
,, ,, दशवो ,, ,, ,, सकषायि गु० के ,,
,, ,, इग्यारवा ,, ,, ,, मोहकर्मकी सत्ताके ,,
,, ,, बारहवा ,, ,, ,, छद्मस्थ गु० के ,,
,, ,, तेरहवा ,, ,, ,, संयोगी गु० के ,,
,, ,, चौदहवा ,, ,, ,, सर्वजीवोंके ,,

तीसरा और चोथा ,, एकान्त संज्ञी अव्रती जीवोंमें ।
,, ,, पांचवा ,, ,, ,, तीर्यंच गु० के चरमान्त
,, ,, छठ्ठा ,, ,, ,, प्रमादि गु० के ,,
,, ,, सातवा ,, ,, ,, तेजोलेशी गु० के ,,
,, ,, आठवा ,, ,, ,, हास्यादि गु० के ,,
,, ,, नौवा गु० ,, ,, सवेदी गु० के ,,
,, ,, दशवा ,, ,, ,, सकषायि ,, के ,,
,, ,, इग्यारवा० ,, ,, मोहसत्ता ,, के ,,
,, ,, बारहवा गु० ,, ,, छद्मस्थ० ,, के ,,
,, ,, तेरहवा ,, ,, ,, संयोगी० ,, के ,,
,, ,, चौदहवा० ,, ,, समुच्चय गु० के ,,

चोथो और पंचवा गु० क्षायक सम्य० वाले तीर्यंच में
चोथो और छठ्ठो गु० ,, ,, प्रमादि गु० के चरमान्तमें
,, ,, सातवा गु० ,, ,, तेजोलेशी ,, ,,
,, ,, आठवा ,, ,, ,, हास्यादि ,, ,,
,, ,, नौवा ,, ,, ,, सवेदी ,, ,,
,, ,, दशवा ,, ,, ,, सकषायि ,, ,,
,, ,, इग्यारवा ,, ,, ,, मोहकर्म सत्ता ,, ,,
,, ,, बारहवा ,, ,, ,, छद्मस्थ ,, ,,
,, ,, तेरहवा ,, ,, ,, संयोगी ,, ,,

,, ,, इग्यारवा ? ,, मोहसत्ता के ,,
,, ,, बारहवा ? ,, छद्मस्थ के ,,
,, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के ,,
,, ,, चौदवा ? ,, समुचय गु० के ,,
नौवा और दशवा गु० ? अवेदी सकषायि गु० मे पावे
,, ,, इग्यारवा ? ,, मोहसत्ता के चरमान्तमें
,, ,, बारहवा ? ,, छद्मस्थ गु० के ,,
,, ,, तेरहवा ? ,, संयोगी ,, के ,,
,, ,, चोदहवा० ? , समुचय ,, के ,,
दशवा और इग्यारवा० ? मोह अबन्ध मोहसत्ता गु० मे पावे
,, ,, बारहवा ? ,, छद्मस्थ गु० चरमान्तमें
,, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के ,,
,, ,, चौदवा ? ,, समुचय गु० के .
इग्यारवा और बारहवा ? वीतराग छद्मस्थ गु० मे पावे
,, ,, तेरहवा ? ,, सयोगी के चरमान्त में
,, ,, चोदहवा ? ,, समुचय गु० के चरमान्त में
बारहवा और तेरहवा ? क्षीण मोह संयोगी में पावे
,, ,, चौदहवा० ? ,, समुचय गु० के चरमान्तमें
तेरहवा और चौदहवा गु० ? केवली भगवान् में पावे

× नौवे गु० के शेष दो समय रहते हुवे अवेदी हो जाते है

—⊱⊙⊰—

चोथो पांचवो छठ्ठो गु० ? क्षायक सम्यक्त्व प्रमादो में पावे।

चोथासे सातवा तक ? " " तेजोलेशी में पावे।

" आठवा तक ? " " हास्यादि में "

" नौवा तक ? " " सवेदी में "

" दशवा तक ? " " सकषायि में "

" इग्यारवा तक ? " " मोहसता में "

" बारहवा तक ? " " छद्मस्थो में "

" तेरहवा तक ? " " संयोगी में "

" चौदहवा तक ? " " समुचय गु० "

पांचवा छठ्ठो सातवो ? व्रती अप्रमादीमें पावे।

पांचवासे आठवातक ? " हास्यादि में पावे।

" नौवातक ? " सवेदीमे "

" दशवातक ? " सकषायि में "

" इग्यारवातक ? " मोहसता में "

" बारहवातक ? " छद्मस्थ में "

" तेरवातक ? " सयोगी में "

" चौदहवातक ? " समुचय में "

छटो सातवो आठवो ? मुनि हास्यादि में "

छटासे नौवातक ? मुनि सवेदी में "

" दशवातक ? " सकषायि में "

" इग्यारवातक ? " मोहसत्ता में "

" बारहवातक ? " छद्मस्थो में "

" तेरहवातक ? " संयोगी में "

" चौदवातक ? " समुचय में "

सातवा आठवा नौवा गु० ? अप्रमत्त सवेदीमें पावे।

सातवासे दशवातक ? अप्रमत्त सकषायिमें पावे।

" इग्यारवातक ? " मोहसत्तामें "

" बारहवातक ? " छद्मस्थोमें "
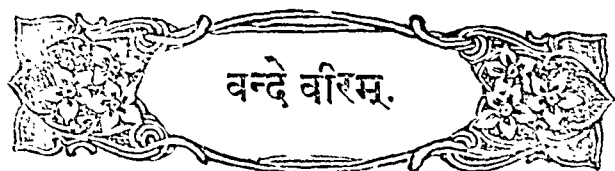
पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय मुनिश्री श्री १००८ श्री श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब का सं. १९८० का चतुर्मास लोहावट ग्राम में हुवा जिसके जरिये धर्मोन्नति.

—※—

मारवाड स्टेट जोधपुर कस्बे फलोदी से आठ कोशके फासले पर लोहावट नाम का ग्राम है जिस्के दो वास. एक जाटावास जिसमें एक जिनमन्दिर एक धर्मशाला एक उपासरा १२९ घर जैनों के अच्छे धनाढ्य धर्मपर श्रद्धा रखनेवाले है दूसरा विसनोइवास जिसमें एक जिनमन्दिर एक धर्मशाला ४० घर जैनो के ४० घर स्थानकवासी भाइयों के हैं मुनिश्रीका चातुर्मास जाटावास में हुवा था आपश्री की विद्वता और मधुर व्याख्यान द्वारा जिन शासन कि अच्छी उन्नति हुई वह हमारे वाचक वर्ग के अनुमोदन के लिये यहां पर संक्षिप्तसे उल्लेख कर पूज्यवर मुनि महाराजों से मरुस्थल मे विहार करने कि सविनय विनति करते है ।

(१) तीन वर्षो से प्रार्थना–विनति करते हुवे हमारे सद्भाग्य से

द्वारा जनता को अमृतपान करानेका है, तदनुसार स्वल्प समय में २०००० ट्रेक्ट छपवा के जनता की सेवा में भेज दिये गये हैं।

(५) जमाना हाल के मुताबिक आपश्री के उपदेश से चैत वद ९ के रोज यहांपर श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डल की स्थापना हुई जिसमें अच्छे अच्छे मातवर लोक शरीक है प्रेसिडन्ट सेक्रेटरी मेम्बरादि के ६९ नाम दर्ज है मंण्डल का उद्देश समाज सेवा और ज्ञान प्रचार करने का है इस मण्डल के जरिये और बुजर्गों की सहायता से हमारी न्याति जाति में बहुत ही सुधारा हुवा है जैसे ओसवाल और इतर जाति एक ही पटे में जीमते थे वह अलग अलग करवा दिये गये—पाणी के बरतनो पर मेम्बर को मुकरर कर दिये गये वह पाणी छान के पीलाया करे जीमणवार में झूठा इतना पडता था कि घरधणी को बडीभारी नुकशान और असंख्य जीवों की हानि होती थी वह कुरीवाज भी निर्मूल हो गया, इतना ही नहीं किन्तु फजूल खरचे पर भी अंकुश रखने से हजारो रूपैया का फायदा दरसाल में होने लग गया जिससे हमारी आर्थीक स्थिति में भी बहुत सुधारा हुवा और हो रहा है।

(६) मित्र मण्डल के जरिये धार्मीक ज्ञान का भी प्रचार बहुत हुवा जो कि थोकडे जीवविचार नवतत्त्व दंडक प्रकरणादि बहुत से लोग कण्ठस्थ कर तत्त्वज्ञान में प्रवेश हुवे और होने के उम्मेदवार हो रहे हैं करीबन ४० मेम्बर थोकडे कण्ठस्थ करते हैं जिस्से ५--६ जणा तो अच्छे ज्ञाता बन गये हैं और ज्ञानमें रूचि भी अधिक हो रही है।

(८) सभाओ, कमेटीओ, मिटींगो पब्लिक भाषणोद्वारा जमानेकी खबर जनताको दी गइ थी रेसम या विदेशी, हिंसामय, पदार्थोंका त्याग भी कितनेही भाई बहिनोने किया था और समाजमें जागृतिभी अच्छी हुइ थी और श्री वीरजयन्ति श्री रत्नप्रभसूरी जयन्ति. दादाजीकी जयन्ति के समय पब्लिक सभावों द्वारा जैनधर्मकी महत्वता पर बडेही जोशीले भाषण हुवे थे.

(९) पुस्तकोंका प्रचारभी हमारा ग्राम और समय के मुकावले कुच्छ कम नहीं हुवा, निम्न लिखित पुस्तके हमारे यहांसे प्रकाशित हुई है.

१००० श्री स्तवन संग्रह भाग चोथा.
१००० श्री भावप्रकरण सावचूरी.
५००० श्री द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका.
५००० श्री शीघ्रबोध भाग १-२-३-४-५ पांचो भागकि हजार हजार नकल एकही कपडेकि जिल्दमे बन्धाइगइ है.
१००० श्री गुणानुराग कूलक भाषान्तर.
१००० श्री महासती सुरसुन्दरी रसीक कथा.
१००० श्री मुनि नाममाला जिस्मे ७५० मुनीयोंको वन्दन.
५००० श्री पंचप्रतिक्रमण सूत्र विधि सहित. (कुल २००००)

(१०) पुस्तके छपानेमें मदद भी अच्छी मिलीथी.

१०००) श्री भगवतीसूत्र प्रारंभमे पूजाका.
२००) श्री भगवती सूत्र समाप्त मे पूजाका.

(७) आपश्री के विराजने से जिन आगमों का नाम तक हम नही जानते थे और उन आगमो का श्रवण करना तो हमारे लिये मरुस्थल में कल्पवृक्ष की माफिक मुश्किल था परन्तु आपश्री की कृपा से निम्न लिखित आगमों की वाचना हमारे यहां हुई थी।

१ श्रीमद् भगवतीजी सूत्र शतक ४१–१३८
५ श्री निरयावलीकाजी सूत्र अध्ययन ५२
१ श्री दशवैकालिकजी सूत्र अध्ययन १०
१ श्री आचारांगजी सूत्र अध्ययन २५
१ श्री उत्तराध्ययनजी सूत्र अध्ययन ३६
१ श्री जम्बुद्विपपन्नति सूत्र.
१ श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ३६
१ श्री उपासकदशांग सूत्र अध्ययन १०

कुल १२ सूत्र और ८ प्रकरण की वाचना हुई।

आपश्रीकी व्याख्यान शैली—स्याद्वादमय और युक्ति दृष्टान्तादिसे समझानेकी शक्ति इतनी प्रबलथी कि सामान्य बुद्धिवाले के भी समझमें आ जावे. आपके व्याख्यानमें जैनोंके सिवाय स्थानकवासी भाई तथा सरकारी कर्मचारी वर्ग स्टेशन बाबुजी, पोष्ट बाबुजी, मास्टरजी पुलीस थानादारजी आदि भी आया करते थे हमारे ग्राममें साधु साध्वियां संवेग आया करती है चतुर्मास भी हुवा करते है किन्तु इतने आगम इस सूत्रोंके साथ आपश्रीके मुखाबिन्दसे ही सुने है।

प्रभावनाभी हुइथी (२) श्रावण वद ३ कों फलोदीसे श्री संघश्रावक गुलेच्छा कोचर वेद लोंकड ललवाणी लोढा लुणावत लुणीया छाजेड चोपडा मालु वोरा मीनी वुवकीया वरडीया छलाणी सराफ कानुंगा मडीया नेमाणी भन्साली कोठारी डाकलीया सेठीया नावटा नाहार कवाड चोरडीया संखलेचा वछावत पारख ढढा आदि करीवन २५० आदमी और वाइयां मुनिश्री के दर्शनार्थी आये थे उन फलोदीवालोकी तरफसे दोनों वासोके जैनोंको स्वामीवात्सल्य दिया गया था तथा शाहा धनराजजी आशकरणजी गुलेच्छाकी तर्फसे पूजा भणाइ गइ थी और चांदीकी ध्वजा और खोपरे रू १०१) के श्रीमन्दिरजीमें चढाये गये थे प्रभावना भी दी गइथी (३) श्री जैन नवयुवक मित्र मण्डलकी तरफसे स्वामिवात्सल्य फलोदीवालोंको दिया गया था (४) शाह शेरचंदजी पारखकी तरफसे (५) शाहा अगरचंदजी पारखकी तरफसे (६) श्री भगवतीजी समाप्त पर फलोदीवाले करीवन २५० आदमी और औरतों आइ थी जिसको शाह छोगमलजी कोचरकी तरफसे स्वामिवात्सल्य दिया गया था इस सुअवसरपर फलोदीवाले मुत्ताजी सीवदानमलजीकी तरफसे नालीयरों की प्रभावना हुईथी वेद ढंढोकी तरफसे तथा झाबकोंकी तरफसे तथा कोचरोकी तरफसे एवं च्यार प्रभावनाओ भी वडी उदारतासे हुइथी. अन्तमे जेठ वद ७ को मुनिश्रीके विहार समय करीबन २५–३० भाइयों पली तक पहुचाने को गये वहां पलीमे शाह छोगमलजी कोचरकी तरफसे स्वामिवात्सल्य हुवा था पली के न्यातिभाइयों को भी आमन्त्रण किया था यानि. धर्म की अच्छी उन्नति हुई ।

(१६) भगवान कि भक्तिके लिये वरघोडे भी वडी धामधुमसे

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

नम्बर. ता.

श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल.

मुः लोहावट–जाटावास (मारवाड.)

वीर सं. २४४६ विक्रम सं. १९७६

पूज्य मुनि श्री हरिसागरजी तथा मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब के सदूउपदेशसे सं १९७६ का चैत बद ९ शनिश्चरवार को इस मंडलकी शुभ स्थापना हुई है। मित्र मंडलका खास उद्देश समाजसेवा और ज्ञानप्रचार करनेका है । पहले यह मंडल नवयुवकोंसे ही स्थापित हुवा था परन्तु मंडलका कार्य्यक्रम अच्छा होनेसे अधिक उम्मरवाले सज्जनोंने भी मंडलमें सामिल हो कर मंडलके उत्साहमें अभिवृद्धि की है ।

नम्बर.	मुवारिक नामावली.	ग्राम.	पिताका नाम.	वार्षिक चन्दा
१	श्रीमान् प्रेसिडेन्ट छोगमलजी कोचर	लोहावट.	चतर्भुजजी	११)
२	,, वाइस प्रेसीडेन्ट इन्द्रचन्द्रजी पारख	,,	रामलालजी	११)
३	,, नायब प्रेसिडेन्ट खेतमलजी कोचर	,,	वीरदानजी	५)
४	,, चीफ सेक्रेटरी रुगचंदजी पारख	,,	हजारीमलजी	११)
५	,, जोइन्ट सेक्रेटरी पुनमचंदजी लुणीया	,,	रत्नलालजी	७)
६	,, ,, ,, इन्द्रचंदजी पारख	,,	चोनणमलजी	७)
७	,, सेक्रेटरी माणकलालजी पारख	,,	हीरालालजी	५)
८	,, आसीस्टेन्ट से. रीखबमलजी मंघी		कुंदेरमल	५)
९	श्रीयुत मेम्बर अगरचन्दजी पारख	लोहावट.	आइदानजी	३)

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

नम्बर.　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ता.

श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल.

मुः लोहावट–जाटावास (मारवाड.)

वीर सं. २४४६　　　　　　　　　　**विक्रम सं. १९७६**

पूज्य मुनि श्री हरिसागरजी तथा मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज साहिब के सदूउपदेशसे सं १९७६ का चैत वद ९ शनिश्चरवार को इस मंडलकी शुभ स्थापना हुइ है। मित्र मंडलका खास उद्देश समाजसेवा और ज्ञानप्रचार करनेका है। पहले यह मंडल नवयुवकोंसे ही स्थापित हुवा था परन्तु मंडलका कार्य्यक्रम अच्छा होनेसे अधिक उम्मरवाले सज्जनोंने भी मंडलमें सामिल हो कर मंडलके उत्साहमें अभिवृद्धि की है।

नम्बर.	मुबारिक नामावली.	ग्राम.	पिताका नाम.	वार्षीक चन्दा
१	श्रीमान् प्रेसिडेन्ट छोगमलजी कोचर	लोहावट.	चतर्भुजजी	११)
२	,, वाइस प्रेसीडेन्ट इन्द्रचन्द्रजी पारख	,,	रावलमलजी	११)
३	,, नायब प्रेसिडेन्ट खेतमलजी कोचर	,,	हीरदानजी	५)
४	,, चीफ सेक्रेटरी रतनचंदजी पारख	,,	हजारीमलजी	११)
५	,, जोइन्ट सेक्रेटरी पुनमचंदजी लुणीया	,,	रत्नलालजी	७)
६	,, ,, ,, इन्द्रचंदजी पारख	,,	सोनमलजी	७)
७	,, सेक्रेटरी माणकलालजी पारख	,,	हीरालालजी	५)
८	,, आसीस्टेन्ट से. हीरावमलजी गर्धा		कुचेरावाल	५)
९	श्रीयुत मेम्बर अगरचन्दजी पारख	लोहावट.	आइदानजी	३)

३४	श्रीयुक्त मेम्बर सुखलालजी पारख	लोहावट.	मोतीलालजी	३)
३५	,, ,, सौमरथमलजी चोपडा	,,	हीरालालजी	१)
३६	,, ,, अलसीदासजी कोचर	,,	पूनमचंदजी	३)
३७	,, ,, इन्द्रचंदजी वैद	रातगढ	सीवलालजी	३)
३८	,, ,, ठाकुरलालजी चोपडा	लो०	रखचंदजी	२)
३९	,, ,, घेवरचन्दजी बोथरा	,,	रावलमलजी	२)
४०	,, ,, कन्यालालजी पारख	,,	जमनालालजी	२)
४१	,, ,, संपतलालजी पारख	,,	इन्दरचंदजी	३)
४२	,, ,, नेमिचंदजी पारख	,,	हीरालालजी	३)
४३	,, ,, हेमराजजी पारख	,,	चांनणमलजी	२)
४४	,, ,, भभूतमलजी कोचर	,,	हस्तिमलजी	३)
४५	,, ,, भीखमचंदजी कोचर	,,	मेघराजजी	२)
४६	,, ,, गोदुलालजी सेटीया	,,	छोगमलजी	३)
४७	,, ,, जोरावरमलजी वैद	फलोदी	वदनमलजी	१)
४८	,, ,, खेतमलजी पारख	लो०	हजारीमलजी	३)
४९	,, ,, गणेशमलजी पारख	,,	मनसुखदासजी	२)
५०	,, ,, संपतलालजी पारख	,,	हीरालालजी	२)
५१	,, ,, सहसमलजी पारख	,,	छोगमलजी	२)
५२	,, ,, तनसुखदासजी कोचर	,,	जेठमलजी	२)
५३	,, ,, भीखमचंदजी पारख	,,	मुलचंदजी	३)
५४	,, ,, सुगनमलजी पारख	,,	चुनिलालजी	२)
५५	,, ,, जुगराजजी पारख	,,	रतनलालजी	२)
५६	,, ,, जमनालालजी पारख	,,	मुलचंदजी	३)
५७	,, ,, खेतमलजी कोचर	,,	[illegible]	[illegible]

पुष्प नं. ७४. ॥ ॐ ॥ ता. २१-६-२४

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला ऑफीस फलोदीसे आजतक पुस्तकें प्रसिद्ध हुइ जिस्का.

सूचीपत्र.

इस संस्थाका जन्म-पूज्यपाद परम योगिराज मुनिश्री रत्नविजयजी महाराज तथा मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी महाराजके सदुपदेशसे हुवा है. संस्थाका खास उद्देश छोटे छोटे ट्रेक्ट द्वारा समाजमें ज्ञानप्रचार बढानेका है. इस संस्था द्वारा ज्ञानप्रचार बढानेको प्रथम सहायता फलोदी श्री संघकी तर्फसे मिली है, वास्ते यह संस्था फलोदी श्री संघका सहर्ष उपकार मानती है।

संख्या.	पुस्तकोंके नाम.	विषय	कुल प्रति.	कीमत.
१	श्री प्रतिमा छत्तीसी	३२ सूत्रोंमें मूर्ति है	२००००	।०॥
२	गयवर विलास	३२ सूत्रोंका मूळ पाठ	२०००	।)
३	दान छत्तीसी	तेरापन्थी दयादानका निषेध करते हैं जिस्का उत्तर	४०००	)॥
४	अनुकम्पा छत्तीसी		४०००	)॥
५	प्रश्नमाला प्रश्न १००	३२ सूत्रोंके मूल पाठमें प्रश्न	३०००	[illegible]
६	स्तवन संग्रह भाग १ लो	जिन स्तुति	३०००	[illegible]
७	पैंतीस बोलोंका थोकडा.	[illegible] बोल	६०००	=)
८	दादा साहिबकी पूजा	गुरुदेव पूजा	२०००	=)
९	चर्चाकी पब्लिक नोटीस	ढूंढकोंसे चर्चाका आमंत्रण	५०००	भेट

३४	शीघ्रबोध भाग ७ वां	विविध प्रश्नोत्तर	२०००	≈)
३५	मेझरनामो गु० हि०	वर्तमान धमालका दर्शन	४५००	॥)
३६	तीन निर्नामा लेखोंके उत्तर	सत्यताकी कसोटी	२०००	भेट
३७	ओशीया ज्ञान लीस्ट	पुस्तकोंके नाम नम्बर	१०००	भेट
३८	शीघ्रबोध भाग ८ वां	भगवतीसूत्रका सूक्ष्म वि०	२०००	।)
३९	शीघ्रबोध भाग ९ वां	गुणस्थानादि विविध वि०	२०००	।)
४०	नन्दीसूत्र मूलपाठ	पांच ज्ञान	१०००	≈)
४१	तीर्थयात्रा स्तवन	यात्रा दरम्यान तिर्थ	३५००	भेट
४२	शीघ्रबोध भाग १० वां	चौवीस ठाणा द्रव्यानु०	२०००	भेट
४३	अमे साधु शामाटे थया	साधुवोंका कर्त्तव्य	१०००	भेट
४४	विनतिशतक	वर्तमान वर्तारो	२०००	भेट
४५	द्रव्यानुयोग प्र० प्रवेशिका	द्रव्यानुयोग विषय	६०००	भेट
४६	शीघ्रबोध भाग ११ वां	प्रज्ञापना सूत्रका सार	१०००	।)
४७	शीघ्रबोध भाग १२ वां	प्रज्ञापना सूत्रका सार	१०००	।)
४८	शीघ्रबोध भाग १३ वां	गणितानुयोग	१०००	।)
४९	शीघ्रबोध भाग १४ वां	नारकी देवलोकादि क्षेत्र	१०००	।)
५०	+आनंदघन चौवीसी	चौवीस भगवानके स्तवन	१०००	भेट
५१	शीघ्रबोध भाग १५ वां	आगमोंके प्रश्नोत्तर	१०००	।)
५२	शीघ्रबोध भाग १६ वां	आगमोंके प्रश्नोत्तर	१०००	।)
५३	बत्तीसी बत्तीसी	चेतनयके सुमति कुमति	१०००	इन्द्रि.
५४	व्याख्याविलास भाग २ जा	संस्कृत श्लोक	१०००	,,
५५	व्याख्याविलास भाग ३ जा	प्राकृत श्लोक	१०००	,,
५६	व्याख्याविलास भाग ४ था	भाषार्थी कविता	१०००	,,
५७	स्वाध्याय गहुंली संग्रह	विविध विषय	१०००	,,